माताजी री वचनिका

[जती जैचन्द कृत]

सम्पादक

नारायण सिंह भाटी

सहायक सम्पादक

सौभाग्य सिंह शेखावत

प्रकाशक

राजस्थानी शोध-संस्थान

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संस्थापित
राजस्थानी शोध संस्थान
जोधपुर

•

परम्परा, भाग २०
मूल्य ३ रु

•

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस
जोधपुर

विषय सूची

विदेशीय विभुता, विक्रम, विद्या और विचारों की चकाचौंध में आकर हम अपने जातीय जीवन के गौरव को खो बैठे; और हम कौन हैं और किस दशा में पड़े हुए है, इसका भी हमें ठीक होश नहीं रहा। पर अब कुछ कुछ हमारी यह मोह-निद्रा दूर होती दिखाई दे रही है और हमें अपनी दशा का कुछ कुछ मार्मिक भान हो रहा है। हम अपनी बेहोशी में क्या क्या खो बैठे है और हमारी कौन सम्पत्ति किस तरह नष्ट हो गई है, इसका थोड़ा बहुत खयाल हमें आ रहा है। हमारा कर्त्तव्य अब यह है कि हम शीघ्र ही अपनी इस जातीय और राष्ट्रीय जीवन संपत्ति को, जो नाशोन्मुख हो रही है, गॉव गॉव में घूम कर खोज निकालें और उसका रक्षण करे।

—पद्मश्री मुनि जिनविजय

भारतीय संस्कृति का प्रमुख आधार धर्म है। हमारे ऋषि मुनियों और संस्कृति के विधायकों ने धर्म और ईश्वर की अनेक रूपों में कल्पना कर उनकी स्थापना की है। समय समय पर नवीन धर्मों का प्रादुर्भाव और उनका उत्थान तथा पर्यवसान हमारे राष्ट्र के आध्यात्मिक जीवन की बड़ी दिलचस्प कहानी है। अति प्राचीन काल में धर्म का जो भी स्वरूप और व्यावहारिक महत्व रहा है वह वेदों, उपनिषदों, महाभारत, रामायण आदि धर्म ग्रन्थों में सुरक्षित है, परन्तु पिछले हजार वर्षों के इतिहास में सामाजिक ऊहापोह और राजनैतिक संघर्ष के बीच धर्म की जो स्थिति रही उसका वास्तविक चित्रण यहां के लौकिक साहित्य में देखने को मिलता है। आक्रान्ताओं द्वारा किए गए आक्रमणों का सबसे अधिक मुकाबला राजस्थान के वीरों ने किया है। इसलिए इस भूभाग के जन-जीवन में प्राणोत्सर्ग की तुला पर धर्म का जो मूल्य-निर्धारण हुआ है, उसकी अभिव्यक्ति यहां के साहित्य में विशिष्ट ओज और अटूट आस्था के साथ प्रकट हुई है।

आत्मोद्धार तथा निर्वाण के लिए चाहे जैन, बौद्ध, शाक्त, शैव या वैष्णव सम्प्रदायों ने अनेकानेक साधना-पथ प्रशस्त कर मानव कल्याण की समस्याओं को अपने अपने ढंग से सुलझाया हो, परन्तु इन धर्मों की साधना-पद्धति के उपकरणों की पवित्रता की रक्षा करने में शक्ति का ही प्रमुख हाथ रहा है। यही कारण है कि मध्यकालीन राजस्थानी समाज में शक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहां का शासक वर्ग मुख्य रूप से शक्ति की आराधना में जहां लीन दिखाई देता है, वहां चारण कवि महामाया की अनेकानेक रूप से उपासना कर उसे प्रसन्न करने में दत्तचित्त जान पड़ता है। शक्ति की निरन्तर उपासना और गहन आस्था के कारण ही अनेकानेक देवियों का प्रादुर्भाव भी इस जाति में हुआ। बारहठ किशोरसिंह ने लगभग चालीस देवियों का विवरण चारण पत्र में प्रकाशित किया है। यहां के राजवंशों की कुल देवियां भी इन देवियों में

से हैं[1]। सैकडो स्फुट छद और काव्य इन देवियो की आराधना तथा प्रशस्ति के रूप में लिखे हुए मिलते हैं।

हमारे प्राचीनतम धर्म-ग्रन्थो में शक्ति का वडा विशद और महिमामय रूप व्यक्त हुआ है तथा उसे सृष्टि की मूलाधार माना है। उसी के नाना रूप मानव तथा प्रकृति के चेतना तरगो के कारण हैं। इसीलिए उसकी नाना रूपो मे आराधना हम करते आए हैं।

प्रस्तुत वचनिका में शक्ति के विस्तृत स्वरूप और तत्कालीन समाज के सदर्भ में उसकी आराधना को, दुर्गापाठ की पृष्ठभूमि में काव्यात्मक ढग से व्यजित किया गया है।

कवि जिस सम्प्रदाय का अनुयायी है, उसमे देवी का जो रूप इस वचनिका मे निखरा है, वह चाहे पूर्ण रूप से मान्य न हो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अपने समय की आवश्यकता ने उसे शक्ति को इस रूप मे स्मरण करने के लिए प्रेरित किया है। यहा यह स्मरण दिलाना असगत न होगा कि कवि की समसामयिक परिस्थितिया औरगजेब जसे असहिष्णु शासक की राजनैतिक विडबनाओ से ग्रस्त थी। हजारो मदिरो का उसके समय मे ध्वस्त किया जाना और धर्म के नाम पर लाखो लोगो की तबाही इसके परिणाम थे। ऐसी स्थिति मे केवल कृष्ण की प्रेम लीला का वखान करना, राम द्वारा सीता की परीक्षा लेना, भगवान महावीर का ससार त्याग करना तथा बुद्ध का अहिंसा उपदेश, क्षुब्ध तथा प्रताडित जनता को जीवित रह कर परिस्थितियो का सामना करने की प्रेरणा देने में असमथ था। अत परिस्थिति के अनुकूल ही इस जती कवि ने शक्ति का स्मरण ओजस्विनी काव्य शैली मे भाव-विह्वल होकर वडे मार्मिक ढग से किया है। उसका भावोन्वेश समाज की वस्तुस्थिति से इतना अभिभूत है कि उसने शुभ निशुभ के दल को ही म्लेच्छो का दल कह कर सकटापन्न स्थिति की ओर अपने समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहा है।

माडै असुर मसीत, देव भवन छोडै दुरस।
पछिम माडै पारसी, ओही ग्रही अनीत॥

देवियो के विभिन्न अवतारो और उनकी अतुलनीय शक्ति के फलस्वरूप होने वाले अनेकानेक कार्य-कलापो का सुन्दर चित्रण प्रमुखतया यहा के चारण

१—आवड तूठी भाटियां, कामेही गौडांह।
श्री बरवड सीसोदियां, करनळ राठौडांह॥

कवियों ने किया है। जिनमें चानण खिड़िया का माताजी रा छंद, ईसरदास का देवियांण, हिंगळाजदान की मेहाई महिमा आदि प्रसिद्ध हैं। परन्तु इस चारणेतर कवि द्वारा इस विषय को लेकर भाव और अभिव्यक्ति की दृष्टि से जो सशक्त सर्जन हुआ है, वह उसे डिंगल के उच्चकोटि के कवियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करता है। वचनिका डिंगल की एक विशेष विधा है, जिसमें पद्य और लयात्मक गद्य का बड़े ही संतुलित रूप में प्रयोग किया जाता है। अचलदास खीची और राठौड़ रतनसिंह महेशदासोत पर लिखी गई वचनिकाएँ डिंगल साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यद्यपि इस प्रकार की अल्पसंख्यक कृतियां उपलब्ध होती है तथापि प्रस्तुत कृति का इस विधा की परम्परा में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यहां काव्य-सौन्दर्य की दृष्टि से इस कृति की प्रमुख विशेषताओं पर संक्षेप में कुछ विचार प्रकट करना असमीचीन न होगा।

प्रस्तुत वचनिका मे कवि ने देवी के विराट रूप, उसके सर्वव्यापी प्रभाव और नाना चरितों के माध्यम से असुरों का दलन आदि प्रसंगों को बड़े ही मौलिक तथा ओजपूर्ण ढंग से प्रकट किया है। वचनिका का मूल कथानक शुंभ निशुंभ के अत्याचारों से त्रस्त देवताओं के रक्षार्थ देवी का सुकुमार रूप धारण कर दोनों दुष्टों का दलन करना है। कवि ने शक्ति को समस्त देवताओं का सर्जन करने वाली आदि शक्ति माना है।

देवी तो दीवाण, त्रिहुं लोक में ताहरो।
बिसन रुद्र ब्रहमाण, आदहि सिरज्या ईसुरी॥

ऐसी अनन्त शक्तिमान देवी का बखान करने में कवि अपने आप को असमर्थ पाता है। फिर भी दुष्ट-संहारनी महामाया की स्तुति करना वह अपना कर्त्तव्य समझता है।[1]

कवि ने कवि परिपाटी के नाते देवी के समस्त कार्य-कलापों का यथोचित वर्णन करने में जो असमर्थता प्रकट की है उससे उसकी विनम्रता और भक्ति-भावना प्रकट होती है। वास्तव में कवि ने जिस प्रसंग को लेकर देवी के चरित्र

१–वचनिका पृष्ठ २५.

इसी महामाई, संता सुखदाई। इण रै चिरत कहतां किणही पार पायौ नही। तौ आज रा कविसर किण विध कही सकै। तौ पिण आपणी उकति सार, असुरां विडार, धूमर संघार, चड मुड चंगाळ, रगत बीज खैगाळ, सभ निसंभ संहारण, भारथ खग खेरण, तिण रौ बखाण देवी दीवांण, सुकवि कहै सुणावै, परम मन वंछित पावै॥

ओर कार्य-कलापो को व्यक्त किया है, वह कवि की प्रौढ प्रतिभा का परिचय हमें देता है। आदि से अन्त तक इस कृति में ओज गुण का एकसा निर्वाह तथा भाषा की सजीवता और प्रवाह इस बात की पुष्टि करते हैं कि कवि डिंगल-काव्य की परम्पराओ और भाषागत विशेषताओ से भली भाति परिचित ही नही है, वह काव्य के उचित स्थलो के मर्म को भी पहचानता है। इस दृष्टि से कथा के कुछ अश द्रष्टव्य हैं—

"तिण वेळा सुर जस प्रथप देवागना राग मुनेसर सूर चद मिळ बैठा सिगळा ही सुरपति सू असतूत करण लागा। राजि समस्त देवना रा सिरमोड, आग्याकारी तैंतीस कोडी। प्रिथी रा पाळगर, अटळ जोति, वाचा अविचळ, भळक्त भ्रिकट, सोवनो छत्र, जडाव मे मुकट, अमोप सगत, आवुध विकट, जुध रा जीपणहार, सिरदारे सिरदार, त्रैभवण पति, अनेक अग आसति इद महराज, अमरगण सिरताज, इसो कहिनें हाथ जोडि अरज करण लागा।"

शक्ति का देवी के रूप में अवतरित होते समय अपने रूप-निर्माण के लिए विभिन्न देवी-देवताओ तथा प्राकृतिक वस्तुओ से आवश्यक उपकरण ग्रहण कर विराट रूप को प्राप्त होना।—

नियं नियं तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर।
अप्रम सुज तेज प्रगट धुर आणण, विसन तेज भुज दैयत विडारण॥
वणे डसख तेज ब्रह्मांणे, आतस नेत्र वेण सस भाण।
सज्या तेज मुहारा सोहै, मारुत तेज स्रवण मन मोहै॥
उतवग वणे तेज सा ईसर, वणे इन्द्राणी तेज वासचर।
चिहरा वरण तेज वणि चाचर, सामे तेज थळथूळ फनेसर॥
तेज कुमेर रिदो बण तारी, भुअग तेज उदर वण भारो।
सोभति तेज कठ सरसति, पवण तेज अहरण वणि पत्ती॥
धरणी तेज नितब वणे धर, काळ तेज ओवण वण दिढकर।
पग साखा वणि तेज प्रभाकर, पाण आगुळी तेज रमा पर॥
अबा रूप अैमि फबि अद्भुत, समेप आवध देव मिळे सत।
करे तिसूळ सूळ मजि काढै, चौभुज पहिल पिनाको चाढै॥

असुरो को छलने के लिए देवी के अत्यन्त मोहक रूप का जहाँ वर्णन किया गया है, वहाँ राजस्थानी वेश भूषा के उपकरणो के प्रयोग भी ध्यान देने योग्य हैं।

पिक कठ सोभति चीठ परेठ सघण वण मोती सरी।
परवध हीरा जडित पाखल कुसम माळा सकरी॥
भुज कमळ पहिरै चूड[१] आभ्रण ककण धर सुर कज्जए।
सिणगार असुरा छळण समहर सगति अदभुत सज्झए॥

१—बांह मे पहिनने का स्वर्ण का एक आभूषण।

आंगुळी कंचण जड़ित आमख बहरखा[1] ओपै वहां।
कुच कळस पंकज कळी कोमण कंचुवौ ऊपर कहां ॥
कटि लंक केहर माप करली घड़ि कड़ो भू धूजए।
सिणगार असुरां छळण समहर सगति अदभुत सझ्झए ॥

शुंभ के उमरावों की मस्ती के जीवंत चित्रण में कवि की कल्पना शक्ति देखिए—

"त्यां उमरावां रा बखांण। लोह री लाठ। चालता कोट। आंवर चोधा। अनेक भारथ किया। भांति भांति रा लोह चाखिया नैं चखाया। ईसा दुवाह, आंण विराजमान हुआ। तिण विरियां री सोभा, किण सूं कहणी आवै। तथापि जांणै करि संझ्या फूल फूल रही होई। तिण मांहे वादळा भांति भांति रा निजर आवै। तिण भांति केइक तौ गाहड़मल झौला खाई रह्या छै। केइक डाकी जमदूत, भूखिया नाहर ज्यूं हुंकार करनै रह्या छै।"

युद्ध वर्णन में योद्धाओं की गति और अस्त्र-शस्त्र वर्णन में ध्वनि-साम्य अपनी अलग विशेषता रखता है।

घड़ां घड़ां कड़ां धमौड़ बोटिजै वड़ां वड़ां।
गड़ां गड़ां गजंत गौम हूकळै हड़ां हड़ां ॥
पड़ां पड़ां पड़ंत पीठ रीठ वाज रूकळां।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ॥

× × ×

गणंक नाळि गोळियं फणंग धूजि झंगटां।
सणंक सार ऊपजे भणक खेल सोगटां ॥
चणंक चड मंड चाढि वाढि काढि बुगळा।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ॥

उपरोक्त वर्णन वैशिष्ट्य के अतिरिक्त हाथी[2] घोड़े[3] तथा रणस्थल[4] आदि का वर्णन भी कवि ने बड़े ही सजीव और विस्तृत रूप में किया है।

जहाँ तक इस रचना की शैलीगत विशेषताओं का प्रश्न है यह पहले ही कहा जा चुका है कि ओज गुण इस कृति की प्रमुख विशेषता है। काव्य को रोचक, सारगर्भित तथा स्थानीय विशेषताओं से अलंकृत करने की दृष्टि से कवि ने अनेकानेक मुहावरों का इतना पुष्कल और यथोचित प्रयोग किया है जो डिंगल की गिनी चुनी कृतियों में ही देखने को मिलेगा। कुछ मुहावरे उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं—असुरां माथो जोर उपाड़ियौ[5], अजेरां नै जेर किया[6], पिसाचां

१–रेशम आदि का बना हुआ कलाई का आभरण। २–वचनिका पृ० ६७, ३–वचनिका पृ० ६८, ४–वचनिका पृ० ७१, ५–वचनिका पृ० ३०, ६–वचनिका ३१।

रा रगत री पळचरा नै पैणगो कीजै[१] । वधेज री वारता करो[२], सूरा रा ग्रव गाळिया[३], प्रवाडो हाथ चढियो[४], घणा सूरा रा चाचरा री साज मेटा[५], कीत उवारा[६], किरमाळा री भाट भड उडावा[७], पहाडा नै जळ चाढा[८], भुजारा भामणा लीजै[९], उमरावा रा वैर घेरा[१०] ।

किसी भी भाषा मे प्रयुक्त कहावती पद्याश (फेजेज) उस भाषा की परम्परा और समाज सापेक्ष विशेषताओ को प्रकट करते हैं। साथ ही वे उसे शक्ति और लाक्षणिकता भी प्रदान करते हैं। इस कृति मे डिंगल के ऐसे अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। योद्धा के लिए प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्द देखिये—गाहडमल, कोटा गिळण, रणदूलहा,[११] मूछाळ, खेडी गारा,[१२] अधियावणो,[१३] गहलो री वेहडो,[१४] फौजा रो मोहरी,[१५] हठियाळ[१६]।

इस प्रकार इस काव्य-कृति की अनेक छोटी वडी विशेषताएँ हैं। जहा तक कवि के जीवनवृत्त तथा उसकी अन्य रचनाओ का प्रश्न है, अन्य कोई जानकारी के साधन हमे प्रयत्न करने पर भी उपलब्ध नही हुए हैं। केवल अन्तर साक्ष्य के आधार पर यह पता चलता है कि इसकी रचना मारवाड के कुचेरा ग्राम में सवत् १७७६ मे हुई है।[१७] कवि जोधपुर महाराजा अजीतसिंह का समकालीन है। सम्भव है उसका निवास-स्थान भी मारवाड का कोई ग्राम हो।

इस ग्रथ की अद्यावधि दो हस्तलिखित प्रतिया चारण कवि देवकरणजी के पयत्न-स्वरूप हमारे सग्रह को प्राप्त हुई हैं। जिनमे से सवत १८३१ मे लिपि-वद्ध प्रति को मूल प्रति रख कर सवत १८३४ की प्रति का पाठान्तर के रूप मे प्रयोग किया गया है। दूसरी प्रति का परिचय इस प्रकार है—

पत्र सख्या - १६, साइज - २१ ५″×२६ ४″, पक्ति - १६, अक्षर - २५, पुष्पिका - स० १८३४ मीगसर सुद १ सोमवारे, लिखत कवलगच्छे प रूप सू (सु) दरेण लिपि कृत खीजरपूरम ।'

१–वचनिका ३२, २–वचनिका ३२, ३–वचनिका ३२, ४–वचनिका ५२,
५– „ ५६, ६– „ ५६, ७– „ ५६ ८– „ ६०,
६– „ ६०, १०– „ ८२, ११– „ ४८, १२– „ ५०,
१३– „ ५२, १४– „ ५८, १५– „ ५६ १६– „ ७१
१७– सवत सत्तर छिहतरै, ग्रासू सुद तिथ तीय ।
मुरधर देस कूचौर पुर, रचे ग्र थ करि प्रीय ॥

परिशिष्ट मे विज्ञ पाठकों के लाभार्थ देवी संबंधी डिंगल की कुछ स्फुट रचनाएँ इस विषय की सामग्री के वैविध्य की ओर संकेत करने की दृष्टि से प्रकाशित कर दी हैं।

मेरे आग्रह पर राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के उपसंचालक श्री गोपाल-नारायणजी बहुरा, एम.ए. ने 'शक्ति के स्वरूप और उसकी उपासना' पर जो विद्वत्तापूर्ण लेख इस अंक में प्रकाशनार्थ लिखा है, उनके इस सहयोग के लिए मैं आभारी हूं।

परिशिष्ट में प्रकाशित सामग्री अधिकांश में हमारे संस्थान के संग्रहालय ही की है, कुछ रचनाएँ श्री सीतारामजी लाळस और श्री सौभाग्यसिह शेखावत के संग्रह से उपलब्ध हुईं जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। श्री म. विनयसागर से हस्तलिखित प्रतियों की प्रतिलिपि आदि करने में सहयोग मिला है जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

—नारायणसिंह भाटी

माताजी री वचनिका

अथ माताजी री वचनिका

जती जैचंद री लिख्यते

छंद गाथा

गवरी पुत्र गणेसं, मेकडसण[1] आखु जसु वाहण ।
गज मुख सुर अग्रेसं, सिध बुध-पतिये[2] नमः ।। १
चढ़ि मौताहळ चरियं, सेत वसन पुनि[3] सिस वदनी ।
वीणा पुस्तक धरियं, वागवादनी तस्मै नमः ।। २
तेल सिंदूर विथुरियं, सुनही[4] असवार[5] मसत अैराकं ।
चामुण्ड सुत उधरियं[6], खेत्राधीसर तुभ्यौ नमः ।। ३
भोळीनाथ भुतेसं, संकर सिध दत रत सुररांणी[7] ।
गज तुच विखभ्र चढ़ेसं, वांमदेव तस्मै नमः ।। ४
गुरु प्रसादे ग्यानं पायं, बोह भेद अरथ सिधन्तं ।
अमरसी अमर समांनं[8], सांनिध करहुं गुरु भ्यौ नमः ।। ५

छंद दूहा

वालमीक वासिस्टि[9] कवि, पौह जैदेव प्रसत्थ ।
मारकंड जेहा मुंनी, कहै न सकिया कथ्थ ।। ६

यति जयचंद कृत माताजी री वचनिका

१. एकदशन । २. सिद्ध बुद्ध पतये । ३. पुत्र । ४. सुनदी । ५. अयवार ।
६. उद्धरियं । ७. युररांणी । ८. समानां । ९. वासिस्ट ।

---

१. मेकडसण – एक दांत । आखु – चूहा । वाहण – वाहन । अग्रेसं – अग्रणी ।
२. मौताहळ – मुक्ताफल । चरियं – चरने वाला । वागवादनी – सरस्वती ।
३. खेत्राधीसर – क्षेत्राधीश्वर ।
४. तुच – त्वचा । विखभ्र – वृषभ । वांमदेव – शिव ।
५. अमरसी – कवि का गुरु । सानिध – सानिध्य ।
६. प्रसत्थ – प्रसिद्ध, समर्थ ।

कहा दिणियर दीपक कहा, मेर अनड कुण मीढ ।
ऐरापति गज अमर नर, इण विध केही ईढ ॥ ७
प्राकम मुदगर[1] नर प्रबळ, बळ दाखै बळवन्त ।
लघु बाळक करळावता, हसै न कौतस[2] सत ॥ ८
मन वछै कित मदमति, केथ काळिका कीर्ति ।
उदधि तरैवा उल्लसै[3], त्रिण नावा सु प्रीति ॥ ९
तू[4] आखिस ताहळ चरित, सुवचन रचन सगत्ति ।
सानिध कोजै साकरी[5], आछी देह उकत्ति ॥ १०

छप्पय कवित्त

प्रणमि आदि पावई, सिवर[6] माता हर सिद्धी ।
सैहस अठचासी रिख्ख[7], वीर बावन दे वुद्धी ॥
छपन[8] कोडि[9] चामुण्ड, कोडि तैत्रीस अमरगण ।
जोगणि सैहस चौसट्ठ[10], दियै[11] मुझ उकति तितखण[12] ॥
सानिद्ध[13] करौ अहनिस सदा, कामखा[14] कीरत कहू ।
कवि कवण ऐण जाणै क्रितव, ग्रथ सुण्यौ तिण विध ग्रहू ॥ ११

---

१ मुदगर। २ नकोत स। ३ उलसै। ४ तु। ५ सकरी। ६ सिवर। ७ रिख। ८ छप्पन। ९ कोडि। १० चौसठ। ११ दीयै। १२ ततखिण। १३ सानिध। १४ कामखा।

---

७ दिणियर – सूर्य। मेर – सुमेरु पर्वत। ऐरापति– इन्द्र का हाथी।

८ प्राकम – पराक्रम। दाखे – बतलाते हैं। करळावता – कारुणिक रुदन।

९ वछै – इच्छा करता है। केथ – कहां। काळिका – कालिका देवी। उदधि – समुद्र। त्रिण – तिनका।

१० आखिस – कहेगी। ताहळ – तेरे। सानिध – सानिध्य। साकरी – पार्वती, देवी। आछी – अच्छी।

११ सिवर – स्मरण कर। हर – शिव। रिख्ख – ऋषि। ततखिण – तत्क्षण। कामखा – देवी। कवण – कौन।

अथ वचनिका[1]

आद री सगति, जगत री जणणी, तीन लोक मांडणी, असुरां निरदळणी। अकन कंवारी, अनेक चिरत करणी, ताकी बात जुंजुई रूपक जाति कवि कहै दिखावै। संत साजन पंडत सुकवि कौं सुहावै ।। १२

छंद दूहा

विखमे गिर चंडी वसै, दीरघ तर डहकंत।
जळ निरमळ परमळ जिथै, रंभा[2] तेथ रहंत ।। १३

तुलजा हिगोळ तोतळा, जोगण ज्वाळा-मुख्ख।
पंच पीठ पीडी प्रभत, राजै आछै[3] रुख्ख[4] ।। १४

आबू[5] आंबा औइसां, कासी तट गिरनार।
सुर सांमण सेत्रांज सिखर, धवळागिर धू तार ।। १५

नड़ां विड़ां गढ़ नीबड़ां[7], पींपळ वागां पाजि।
वाड़ी कूवां[8] वावड़ी, सरवर विमरां साजि ।। १६

जळ थळ खेचर जीव जगि, सारां मंझ[9] सगत्ति।
तो विण ध्रंम क्रमं न थियै[10], भगवति देह भगत्ति ।। १७

---

१. वचनका। २. रंभां। ३. आखै। ४. रूख। ५. आबु। ६. धुतार। ७. नीबड़ी। ८. कुवां। ९. मांझ। १०. न थीयै।

---

१२. आद री – आदिकाल से। सगति – शक्ति। मांडणी – सर्जन करने वाली। निरदळणी – दलन करने वाली। जुंजुई – अलग-अलग। रूपक – गीत, काव्य पद्धति विशेष।

१३. विखमे गिर – दुर्गम पर्वत। डहकंत – खिलते है, पल्लवित होते है। परमळ – परिमल, सुगध। जिथै – जिस जगह। तेथ – वहां।

१४ पीठ – पीठ-स्थान। प्रभत – प्रभुत्वशाली। राजै – सुशोभित होती है। आछै रुख्ख – अच्छी तरह।

१५. सांमण – स्वामिनी। धवळागिर – हिमालय।

१६. नड़ां – नाले। विड़ां – पर्वत। [illegible] ारे।

१७. खेचर – आकाश चारी। [illegible] – नही होता।

छंद उधोर

भगवत्ति[१] आवौ भाई, मुझ मदत श्री महामाई।
नित पढै प्रहस मे नाम, त्या रोरि[२] भजि विराम ॥
सुज चरण पूजै सत, वोहि लच्छि[३] ग्रहि वाधत।
जे जपै अजपा-जाप, पुणतोया टळिजै पाप ॥
धकरोळ धूपा धार, खळ चित[४] जाय खयार।
जे कहै तो कीरत्ति[५], त्या वधै वसु विरत्ति ॥
निवाजसु रथन्नि पत्ति, अस गज दिया पुरधर अत्ति।
पौहवी प्रसिद्ध तौला पमार, ताता चवदसै तोखार ॥
जगदे सीस कीधी जोडि, तारचा सत दाळिद्द तोडि[६]।
अबा तिमहि सिमरचा आव, सामिण करौ मुझ सुपसाव ॥ १८

छंद गाहा जाति अडियल दुमेळ

विविध तुझ चरित्त वरदाई, जूनी जोगिण किणही न जाई।
पवन दुंदिद न चद न पाणी, समद सुमेर न तद सुर राणी ॥
ताढि नकौ नकौ जदि तावड, आभ न उडगण अरस न अनड[७]।
क्रम्म न भ्रम्म[८] नकौ जदि काळौ, ब्रहमंड रूप नमौ विगताळौ ॥ १९

---

१ भगवति। २ रि अक्षर नही है। ३ लछि। ४ चित। ५ किरत्ति। ६ तोर। ७ अनड। ८ भ्रम।

---

१८ आवौ भाई – भावना मे वसा। लच्छि – लक्ष्मी। अजपा जाप – नाम जप की विशेष विधि। पुणतोया – कहते ही। धकरोळ – धूप की सुवास। खळ – दुश्मन। वसु – पृथ्वी। विरत्ति वीरता निवाजसु – प्रार्थना करता हू। पौहवी – पथ्वी। ताता – तेज। तोखार – घोडे। सिमरचा – स्मरण करने पर। सुपसाव – कृपा।

१९ वरदाई – वर देने वाली। जूनी जोगिण – आदि शक्ति। दुंदिद – सूय। ताढ़ि – छाया ठड। तावड – धूप। अरस – आकाश। अनड – पवत। विगताळौ – आदि देवी।

छंद सोरठा

देवी तौ दीवांण, त्रिहूं - लोक में ताहरौ ।
विसन रुद्र ब्रह्मांण[1], आद हि सिरज्या ईसुरी[2] ।। २०
चवद[3] भवन चत्र खांण, अमर उदधि तर गिर अडग ।
उपजाया असुरांण, खळां खपाया खेचरी ।। २१
अइयौ सगति अनंत, प्रगट किया[4] सारी प्रथी ।
मुंदराळी मैमंत, रातंखी[5] तूंहीज रिधू[6] ।। २२

छंद मोतीदांम

तैंही जगदंब थपै त्रिण - लोक ।
थांभां विण थांभ अकासां थोक[7] ।।
वड़ा सिध[8] रिख्ख[9] भणै जसवास ।
वांछै तौ औवण सेवा खास ।।
सदा जगि होम करै मिळ संत[10] ।
सवाहा[11] आहुत वेद आखंत ।।
त्रिपता देव थीयै तैत्रीस ।
इंद्रादिक जोड़ि दियै आसीस ।।

---

१. ब्रह्मांणी । २. ईसूरी । ३. चवदै । ४. कीया । ५. रातींखी । ६. रीधु । ७. थौक । ८. सिद्ध । ९. रिख । १०. सांत । ११. स्वाहा ।

---

२०. दीवांण – दीवान । ताहरौ – तुम्हारे । आद – आदि । सिरज्या – सृजन किया ।

२१. चत्र खाण – चार खाने, स्वेदज, अंडज आदि । असुरांण – देवता । खळां – राक्षस । खेचरी – देवी विशेष ।

२२. सगति – शक्ति । मुंदराळी – मुद्रा धारण करने वाली । मैमंत – मस्त । रातंखी – अरुण नेत्रों वाली । रिधू – पृथ्वी ।

२३. रिख्ख – ऋषि । जसवास – कीर्तिगाथा । वांछै – इच्छा करते है । औवण – पैरों की । आहुत – आहुति । आखंत – उच्चारण कर के ।

भणा सिर सेस धरा धर भार।
अवा[1] तय तूझ[2] तणो आधार॥
निलोपै दव्घ[3] अजाद निमख्ख[4]।
रुद्राणी तेथ तमीणी रुख्ख[5]॥
मथै रतनागर माहव मन्न।
रभा मु पसाय मु लीध रतन्न॥
विरोळै दाणव लका वाळ।
सीता ले आऐ[6] राम सचाळ॥
घमोडै जुद्ध[7] सम्रा घर घाल।
तमीणै[8] पाण जीतो रिणताळ॥
त्रिलोक मे नत्थि[9] समो तो कोइ[10]।
हिंगोळ[11] होडाइ न देवन होइ[12]॥
कक्काळी मन्न[13] धरै ज्या कोप।
लसै जड खग्ग[14] खळा करि लोप[15]॥
भवानिय[16] राजि जिणा रै भाय।
कळू घन वन्न[17] प्रथी मे कहाय[18]॥

---

१ आवा। २ तुज्झ। ३ दघ। ४ निमख। ५ रुख। ६ आए। ७ जुध। ८ तमीण। ९ नथि। १० कोई। ११ हीगोळ। १२ होई। १३ मन। १४ खग। १५ लोप। १६ भवानीय। १७ घन घन। १८ कहवाय।

---

२३ तय – तत्र, वहा। निलोपै – छोडता नही। दव्घ – उदधि। निमख्ख – निमिष। तमीणी – तुम्हारी। रुख्ख – इच्छा। रतनागर – रत्नाकर। माहव – विष्णु। विरोळै – नष्ट करके। सचाळ – सत्यवादी। पाण – बल से। रिणताळ – युद्ध। समो – समान। हिंगोळ – हिंगळाज देवी। होडाइ – बराबरी। खळां – दुष्टों को। राजि – प्रसन्न, आप। भाय – अनुकूल। कळू – कलियुग।

जया सु प्रसन्न सुतां बोह जौड़ि ।
करै भंडार भरै द्रव्य कौड़ि[1] ॥ २३

छंद दूहो

नमौ नमौ[2] नाराइणी[3], चामंडा चिरताळ ।
पार न कोई प्रांमही[4], कळि करणी कंकाळ ॥ २४

अथ वचनिका

इसी[5] महामाई, संतां सुखदाई । इण रै[6] चिरत कहतां किणही पार पायौ नहीं । तौ, आज रा कविसर[7] किण विध कहि सकै । तौ[8] पिण आपणी उकति सार, असुरां विडार, धूमर संघार, चंड मुंड चंगाळ, रगत बीज खैगाळ, संभ निसंभ संहारण, भारथ खग खेरण, तिण रौ वखांण देवी दीवांण, सुकवि कहै सुणावै, परम मन वंछित पावै ॥ २५

छंद गाथा

सुर सान्निधे कज्जं, ब्रह्मांणी[9] रूप अनेक विध करियं ।
मधुकीटक रिण मज्जं, असुर निरदळण जयौ जय अंबा ॥
वासर पंच सहस्सं, महिसासुर भारथ[10] हणियं ।
किय सुरपति सरस्सं[11], निरसंजोति निसचरां कियं[12] ॥ २६

---

१. कोड़ि । २. नमो नमो । ३. नारायणी । ४. पांमही । ५. ईसी । ६. रे । ७. कवीसर । ८. तो । ९. ब्रह्मांणी । १०. भारथं । ११. सरस । १२. कीयं ।

---

२३. जया – माता ।

२४. चिरताळ – विभिन्न चरित्र करने वाली । प्रांमही – पा सकता है । करणी – कर्म, कृतीत्व ।

२५. चिरत – चरित्र । उकति – उक्ति । सार – अनुसार । विडार – ध्वंश । संघार – सहार । चंगाळ – काटने वाली । खैगाळ – वहा कर । खेरण – नष्ट करने वाली ।

२६. भारथ – युद्ध । हणियं – मारा । सरस्स – प्रफुल्लित । निरसंजोति – ज्योति-विहीन ।

अथ कथा आरम्भ लिखते

छंद दूहा

दाखवी सभ निसंभ यौं, वधव जोडि वहाळ ।
वसै गिरदासै विचै, असुरा पति असराळ ।। २७
अनड दुरग भुरजा उघट, विकट त्रिकुट गढ बाद ।
पौळि सुद्रढ कपाट पुण, गह लग्गौ[1] गैणाद ।। २८
प्रचड देह वाहा पलव[2], वाहर सद्दा वाण ।
अह बुद्धि मानै इळा[3], गिणै न किण ही ग्यान ।। २९

छंद दूहा वडा

अव कठीर सूडाळ, निळिया[4] प्राक्रम मेळिजै[5] ।
क्यु इधकौ अग आदि सै, पोह असुरेस प्रौचाळ ।। ३०
पावस बुद पुणाह, उदध जळ वेळू कणाह[6] ।
त्यौं दाणव पति साभरै, भ्रित अणपार भणाह ।। ३१
अधकौ[7] तन आकाहि[8], ओण धरा पडिया सेहस ।
जागै जुध जुडता जवन, माझी कटका माहि ।। ३२

---

१ लगो । २ प्रलब । ३ ईळा । ४. नीळीया । ५ मेळीजे । ६ कणा । ७ अधक । ८ आकाई ।

---

२७ दाखवी – कहते हैं । गिरदासै – पहाडो के बीच का ऊँचा सुरक्षित स्थान । असराळ – शक्तिशाली ।
२८ अनड – कब्जे मे न आने वाली । दुरग – दुर्ग । उघट – उभरी हुई । गह – गर्व । गैणाद – आकास ।
२९ पलव – लम्बी । वाहर – जोर की चिल्लाहट । सद्दा – शब्द । इळा – पृथ्वी ।
३० कठीर – सिंह । सूडाळ – हाथी । निळिया – ललाटो पर । इधकौ – अत्यधिक । प्रौचाळ – बलिष्ठ ।
३१ पुणाह – कहूँ । उदध – उदधि । वेळू कणाह – रेत के कण । भ्रित – भाई । भणाह – कहते हैं ।
३२ आकाहि – बळ । जवन – असुर । माझी – मुखिया । कटका – फौजें ।

रगतासुर अै रीत, सूर उदै जसण सझै ।
माह्व व्रहम महेस सुं, गावै आडा गीत ।। ३३

मल[1] अगवास्यां मांण, रूकां बळ रिणताळ भड़ ।
आप सुभावै चल्लही[2], करै न केंरी कांण ।। ३४

जप तप आहुत ज्याग, लुबधी ध्रंम[3] तीरथ लुपै ।
खोलै रिख तपस्या खरी, भ्रियंद्रिज मांगै भाग ।। ३५

मांडै असुर मसीत[4], देव भवन छोडै दुरस ।
पछिम मांनै पारसी, ऐही ग्रही अनीत ।। ३६

घट घड़ि हंसा घाति, वेध अचूक बांणावळी ।
निसचर मन धेट निपट, मरण गिणै तिल माति ।। ३७

जम रूपी जोधार, आवध छत्रीसौं आवरै ।
अणलेखै सांमंत इसा, खोहिण अमित खंधार ।। ३८

डाकी दूभर डांण, सुर जख रिख उर सालिया ।
आता बे मुर भवण में, राज करै असुरांण ।। ३९

---

१ मील । २. चल ही । ३. ध्रुंम । ४. मसात ।

---

३३. रीत – तरह । जोसण – कवच, सुसज्जित होते है । आडा गीत – विरोधी ।

३४. मल – मिल कर । अगवास्यां – स्वर्गवासी देवताओ से । रूकां – तलवारे । भड़ – योद्धा । कांण – मर्यादा ।

३५. ज्याग – यज्ञ । लुबधी – लोभी । ध्रंम – धर्म । रिख – ऋषि । खरी – पक्की ।

३६. मसीत – मसजिद । दुरस – श्रेष्ठ । ऐही – ऐसी ।

३७. निसचर – असुर । धेट – ढीट । तिल माति – तिल के समान ।

३८. जोधार – योद्धा । आवध – आयुध । अणलेखै – अनगिनत । खोहिण – अक्षोहिणी सेना ।

३९. डांण – प्रचंड । जख – यक्ष । मुर – तीनों । भवण – भुवन ।

छंद ग्राटको

असुराण ग्रणहुर वाह वळत्तर गात गिरव्वर गत्ति ।
गति राख समव्वर उडे ग्रम्वर भुजा डारण भत्ति ।।
भुजडड[१] महाभड मेर समोवड ऊना[२] जोध ग्रबीह ।
जुड जोध जडाळे देव उदाळे लीधा लोपै लीह ।।
इदलोक ग्रैरापति खेध करै खळ गोडवि ग्राणै[३] गेह ।
सपतास[४] रातवर साजि ग्रसमर रोहडळ घारेह ।।
रिण रोहिड दधि मथाण विरोळै लीघा रतन[५] लाल ।
रत रढ[६] सुपाण विमाण बिडारे हूरा[७] कोधा हाल ।।
हल देवा ग्रागा लूस विहगा[८] खूद[९] तका दियै खेस[१०] ।
खळ खेस कुमेर खखेर खडग्गा[११] निधा ग्राणै नेस ।।
निध ग्रोवन ग्रच्छा छत्त निरम्मळ वारण कोधी भेट ।
सिसि लूस उग्राहे वाहण सारग जोडै इमरत जेट ।।
जुडि वेद बभाण उडाण झझोडे दोख खळि दईवाण ।
दईवाण मराळ झडाळ[१२] दमगा डाकर साजै डाण ।।
महराण मेछाण वंका मद मोडण छोडण देवा छग ।
छग ज्यागि हुतासण तेज छडावे[१३] चीर पखाळण चग ।।

---

१ भुजदड । २ उना । ३ ग्राणे । ४ सपठास । ५ रतन । ६ रढ । ७ व्हारा । ८ निहगा । ९ खूदथ । १० सेख । ११ खडगा । १२ जडाळ । १३ चुडावे ।

---

४० गिरव्वर – पवत । गत्ति – समान । समोवड – समकक्ष । ऊना – घटिया । ग्रबीह – निडर । उदाळे – भगा देते हैं । लीह – लीक । रिण रोहिड – योद्धा । रढ – हठ । हूरां – ग्रप्सराएं । खेस – नष्ट कर दिया, निकाल दिया । कुमेर – कुबेर । खखेर – झकझोर कर छिन्न-भिन्न करना । निधी – धन । नेस – घर । वारण – हाथी । लूस – छीन कर । बभांण – ब्रह्मा । झझोडे – झकझोर कर । दोख – दुख । मराळ – हस । झडाळ – तलवार । दमगां – युद्ध । डाकर – ललकार । डाण – प्रचड । मेछांण – राक्षस । ज्यागि – यग । चग – पवित्रता ।

रंग भौम उतंग सुढ़ालै रोदां मारुत मूकै[1] मांण ।
मदमूक महाबळ प्रंम परघ्घळ[2] वारामास वसांण ॥
सुर कड़ त्रैतीसां इसां सोभा सारथि रत्थ सधीर ।
अमीर वजीर उडीर उडांणां वीर वड़ा वड़ वीर ॥
वड़वीर सधीर रेणपुर[3] रांजिद धोम उजागर धाड़ि ।
पहाड़ औनाड़ विभाड़ पधोरे राहां चक्कर[4] राड़ि ॥
विसराळ त्रंबाळ घुरै रवि वीहस लाह आखेट लंकाळ ।
अजेरां जेरण घेर असंगां फेर दुहाई फाळ ॥
सुरलोक चळाचळ कोधा मांजे मांण सुरां पति मौड़ि ।
वे भाई[5] भाई जोड़ि बहादर[6] ठावा एकठ[7] ठौड़ि ॥ ४०

छंद दूहा वड़ा

ठावा एकठ[8] ठौड़, रहै राजस करता रवद ।
भारथ कोई न भिड़ सकै, वीरति[9] वस बहौड़ ॥ ४१
अहिपुर[10] नरपुर अेम, अमरापुर सोचां अथग ।
सुर[11] परछंन[12] मिळ सांमठा, त्रापविया कहि तेम ॥ ४२

---

१. मुकै । २. परघळ । ३. पुड़ । ४. चकर । ५. बिभाई । ६. बाहादर ।
७. हेकण । ८. एकठ । ९. वीरत । १०. अैहिपुर । ११. सुरपति । १२. नरपति

---

४०. रोदां – राक्षस । मूकै – छोड़ते हैं । परघ्घळ – अत्यधिक । उडीर – पक्षी । उडांणां – उड़ा दिये । धोम – धूम्र । औनाड़ – प्रचड । विभाड़ – नष्ट कर । विसराळ – भयावह । त्रंबाळ – नगारे । लाह – उल्लास । लंकाळ – सिंह । अजेरां – अजेय । असंगां – विरोधी । मांण – मान । ठावा – स्थायी । एकठ – शामिल ।

४१. राजस – आनद । रवद – असुर । भारथ – युद्ध । बहौड़ – वड़े, बहुत से ।

४२. अहिपुर – नागलोक । परछंन – गुप्त रूप से । सांमठा – बहुत से । त्रापविया – त्रस्त ।

सुज असुरा सग्राम, किया नह पोहचा कदै ।
काई न राखी ठकुरा, सुर भवण पति माम ॥ ४३

अथ वचनिका

तिण वेळा सुर जख ग्रध्रप[1] देवागना[2] नाग मुनेसर मूर चद मिळ बैठा सिगळा ही सुरपति सु असतूत करण लागा। राजि समस्त देवता रा सिरमौड, आग्याकारी तैतीस कौडि। प्रिथी रा पाळगर, अटळ जोति, वाचा अविचळ, भळकतै भ्रिकट, सोवनो छत्र, जडाव मे मुकट, अमोघ सगत, आवुध विकट, जुध रा जीपणहार, सिरदारे सिरदार, त्रैभवण पराति, अनेक अग आसति, इद महराज, अमरगण सिरताज, इसो कहिनै[3] हाथ जोडि अरज करण लागा। देवा दाणवा आद विरोध हुवा, वडा वडा भारथ कर मुवा। लकापति रामण[4] सारिखा कुभक्रन इद्रजीत[5] सारिखा, हिरणाखस हिरणकासिव सारिखा मुर दाणव महावळी सारिखा, मधकीट महिखासुर सारिखा तिकै पण खै गया, वासस्ट मारकड कथा मे कह्या, तो आजरै काल सभ नै निसभ महा जोधार, असुरा धणी निडार, तिण रौ उदिम कीजै दोखी मरै सुजस लीजै। इतरा मे भळकतै कमळ, तेज रौ पुज, निसचर निरदळण, काळिगा[6] दैत रौ कळण, वोम रौ सिणगार, ओटण अधार, झाभी जोति, कासिव वस रौ उद्योत, राणादे रौ नाह भासकर देवाध देव बोलिया—ऊवाहा जी ऊवाह[7], हाजी असुरा माथौ जोर उपाडियौ

---

१ गध्रप। २ देवगना। ३ कहनै। अँहिपुर। ४ रावण। ५ कुभक्रन और इद्रजीत नही। ६ कालिग। ७ उवाहा जो आहा।

---

४३ मुरभवणां पति – तीनों भवनो के पति। मांम – प्रतिष्ठा।

४४ सिगळा – सभी। पाळगर – पालन करने वाले। वाचा – वचन। भ्रिकट – भृकुटि, ललाट। सगत – शक्ति। जीपणहार – जीतने वाले। आद – आदिकाल से। खै गया – नष्ट हो गये। वासस्ट – वशिष्ठ। निडार – निडर। उदिम – उपाय। दोखी – दुश्मन। कळण – नाश करने वाला। वोम – आकाश। ओटण – लुप्त करने वाला।

पिण अस्ति कदा काळ भलीं नहीं। तठा उप्रांत निसाचरां आपरै पांण देवतां रा साथ नै दयांमणां किया। देवांगनां रा आभरण उतार लिया। तिका तो बरबंधी बात, उसरां[1] मांड्यौ उतपात। इतरा में पुळसत रिख रौ कुळोधर, उतराध री वजीर, लिछमी रौ निवास, मांझी दिगपाळ, कुमेर बौलियो—आगै ही लंकापति रांवण सीता री चोरी करी ले गयौ। तरै आप चत्रभुज मांनवी देह धार नै विणासियौ। बभीखण नै पाट दियौ, नै श्री सांभुनाथ रौ वर थौ, चवदै चोकड़ी रौ राज थौ, तौही खै गयौ। इतरा में सहस फुण धारी, कुरम रौ असवार, धरती रौ धरणहार बौलियौ—ठाकुरे; दांणवां तो भुजाडंड करी अडंडां नै डंड लगाया, अजेरां नै जेर किया। देवतां का आयुध उदाळी लीधा। भोळीनाथ चकवै कमाळी[2] रौ वरदाई, तिण सूं पांण न लहां। मन रौ दुख[3] किण आगै किण सूं कहां। इण भांति[4] पंकति बैठां देवगण[5] आप आपरा दुख रौ निवेदन कियौ। इतरा मांहे छिळतै मछर सूर पूर रौ उजागर, केवियां[6] रौ काळ, सत्रां रौ साल, बोलिया इन्द महाराज[7]—सुरां ठाकुरां दिल रौ दरिद, मंडळी मांहे, भांति भांति कर जाहर कियौ। मालूम हुवौ। तठां उप्रांत मसिलत करां। दोखी खळ दईवाणां नै दहां। इतरौ सुण नै देवतां रा झूल उठ उभाथ या, अरज करै, देवता इम उचरै—देवाधदेव महाराज, गरीबां निवाज,

---

१. असुरां। २. कमाळ। ३. दूख। ४. ईण भांत। ५. देवगणां। ६. केवीयां। ७. इन्द्र महाराजा।

---

४४. दयांमणां – दयनीय। आभरण – आभूषण। वरबंधी – प्रसिद्ध। कुळोधर – वंशज। मांझी – मुखिया। कुमेर – कुवेर। विणासियौ – विनाश किया। खै गयौ – समाप्त हो गया। धरणहार – धारण करने वाला। भुजाडंड करी – जबरदस्ती कर के। अडंडा – अदंडनीय। उदाळी – उन्मूलन कर के। वरदाई – वर प्राप्त। पांण – वल। पंकति – पंक्ति। छिळतै मछर – शौर्य से परिपूर्ण। उजागर – प्रकट करने वाला। केवियां – दुश्मनों। साल – शल्य। दरिद – दर्द। मसिलत – गुप्त मंत्रणा। दहां – नष्ट करे। झूल – समूह।

श्री मुख सु कहीजै। सुरा[1] चो सताय दहीजै। खळा नैं उनमूळ नाखोजै, खळा रा ताडळ कीजै। पिसाचा रा रगत रो पळचरा नैं पैणगो कीजै।[2] खळा रा सीस महारुद्र नैं पेस कीजै। दुस्ट मरैं सरगापुर रो दुख टळै। इतरो साभळ, विळकुळतै वदन पुरन्दर वोलियो— जाणै कर उजळा, अमोलक मोताहळ सा वचन झडैं। तठै कह्यो— वधेज री वारता करो, म्हैं कहा तिकु मन धरो। धुरा आदि करता, पुरस सिस्ट रचना कोधो। तठै जोडो पैंदास कियो। धरती नैं आकास, चद्र नैं सूरज, पवन नैं पाणो, दिन नैं रैंण, नर नैं मादा, तो देव नैं दाणव पैंदास किया। आदु विरोध, उखेळा खेटा, कर भारथ मे हिच किया।[3] सूरा रा अभ[4] गाळिया[5], आपरैं पोरस कर भाजै। अभख भखो, अक्रम करता न लाजै। काछ रा काचा, वचन रा साचा, अगो रिखोसर[6] रा सिख, सजीवनी[7] विधा मुख, वर[8] रा अधकारो त्या निसचरा नैं मारता वात भारी। तठा उप्रात सुर[9], रिख, जस्य[10], अध्रप[11] माहे व्रिध, जूनी[12] मोहर घणी दीठी। विवध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा[13] श्री ब्रह्माजो[14] कनै सिधाईजै दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर विहडीजै, कीत्त[15] काने सुणोजै ॥ ४४

१ सूरा। २ यह वाक्य नही है। ३ हिचकीया। ४ अब। ५ गाळीया। ६ अगीरिख। ७ सजोवन। ८ मूखवर। ९ सूर। १० जक्ष। ११ गध्रप। १२ जुनी। १३ ईसा। १४ ब्रह्माजी। १५ कीत्त।

४४ ताडळ – टुकडे टुकडे। पैणगो – पेय पदार्थ की गोठ। विळकुळतै – आकुल, शौर्य युक्त। मोताहळ – मुक्ताफल। वधेज – व्यवस्था। सिस्ट – सृष्टि। उखेळा खेटा – युद्ध, बखेडा। हिचकिया – भिडे। अभख भखो – न खाने योग्य वस्तुओ को खाने वाले।' काछ रा काचा – व्यभिचारी। सिख – शिष्य। अधकारो – गर्वान्ध। व्रिध – वृद्ध। विहडीजै – नष्ट करें।

छंद दूहा

सबै सचाळा सुर सांभळि, ब्रहमा दिस बहस्स[1] ।
गमागम राखस गिळण, चळ-चळ थई सरस्स[2] ।। ४५

तन-पौरस ग्रहियां[3] तुरस, करग धरै किरमाळ ।
पावक ध्रत संजोग पुण, कोप वधै विकराळ ।। ४६

इन्द्रादिक सुर अब अमित, पोंहचे[4] धाता पास ।
आदिर मोहत वधार अति, वंदन करै विलास ।। ४७

छद स्तुति गाथा

पितामहं परमेसं जग करता विरंच जगनेता ।
चतुराणण धातारं कमळासन[5] तुभ्यौ नमः ।। ४८

सुर[6] जेठौ सायंभू[7] प्रजापति पंकज[8] जोनि ।
सावत्री[9] पति सिद्धं हिरगग्रभ[10] नमौ नमं[11] ।। ४९

भाखित वेद चियारं[12] माळा अपकंठ धरमधर आसन ।
चर थिर जंत्रु[13] दयालं लीलंग वाहेणै[14] नमं[15] ।। ५०

---

१. बहस्स । २. सरस्स । ३. ग्रहीयां । ४. पोहचै । ५. कमळासर । ६. सूर । ७. सयंभु । ८. पंकजं । ९. सावत्रि । १०. हिरण्यगर्भ । ११. नमो नमः । १२. चीयारं । १३. जंतु । १४. वाहणे । १५. नमः ।

---

४५. सचाळा – उद्यत । सांभळि – सुन कर । गमागम – एक साथ, चारो ओर । चळ-चळ – हलचल ।

४६. तुरस – ढाल । किरमाळ – तलवार । वधै – बढते हुए ।

४७. धाता – ब्रह्मा । मोहत – ममत्व ।

४९. सुर जेठौ – देवताओ में सबसे वृद्ध । पंकज जोनि – कमल से उत्पन्न ।

५० भाखित – उच्चरित । चर थिर – चलाचल । लीलंग – हंस ।

छंद दोहा

सुरपति मुख अस्तुति सुण, वोलै वाणि[1] व्रहम ।
सतोखे सनमान करि[2], धरि मन आतिथ[3] ध्रम ।। ५१
किण कारण कारज किसै, अमर पधारे केम ।
कहौ फिकर आगम कहौ, आखि विधाता अम ।। ५२
देवा पति दुमना वदन, किम भाखौ किरणाळ ।
सीतळ मगळ सोच सुर, ताखौ निवळ तेखाळ ।। ५३
गुमर तजे विश्रा गळिण[4], हुलसै जोडै हथ्थ ।
घेठो असुरा चौ धणी, कहे सुणाई कथ्थ ।। ५४
आप मुरादा आपरी, असमर जीते आण ।
थाणा सुर भवणा[5] थपै, छत्र अेक मेछाण ।। ५५
व्रिध जूना दीठौ वोहत, कनै राजि इण काज ।
देवा सुख असुहा दमण, उकति वतावौ आज ।। ५६

छंद विग्रखरी

व्रहमा[6] वासव सुणी मुख वाता, आलोचै मन माहि अराता ।
वाधव वे पीठाण वहादर, सभ निसभ दईत सरोतर ।।

---

१ वाण । २ करे । ३ अतिथि । ४ गतिण । ५ सुर भवने । ६ ब्रह्मा ।

---

५१ अस्तुति – स्तुति । सतोखे – सतोपप्रद । ध्र म – धम ।
५२ कारज – काय । किसै – कौनसे, कैसे । अमर – दवता । आखि – कहो ।
५३ दुमना – अनमने । भाखौ – ताक्ते हो । किरणाळ – सूय । सीतळ – तेजहीन । ताखौ – तक्षक । तेखाळ – दिखाई पडता है ।
५४ गुमर – गव । विश्रा – वृत्रासुर, राक्षस । गळिण – मारने वाला । घेठो – ढीठ । सुणाई – सुनाई । कथ्थ – कथा ।
५५ मुरादा – मर्यादा । असमर – युद्ध । थाणा – चौकियां । मेछांण – असुर ।
५६ जूना – प्राचीन, अतीत । राजि – आपके । उकति – उपाय ।
५७ वासव – इन्द्र । आळोचै – गभीर विचार करते है । अराता – दुश्मनो । पीठांण – युद्ध । सरोतर – बराबरी के ।

मोहरी दळ रगतासुर मांझी, सार भंवर सैहस बळ साझी ।
चालणि कढ़ि चंड मुंड चुंचाळा, बगसी राखस कटक बड़ाळा ।।
आखळ खेट मोल लै[1] आहव, सेना धुंवर लोचन साहव ।
उंमापति मुख तप करि आसुर, वर प्रामें सुर दमण बीरवर ।।
पुणै अैम मन सोच प्रजापति, जंभण भेद चाळौ जिथ जग पति ।
क्रितब पिसण[2] चां तणा कहीजै, जळसाई जोयां जीवीजै ।।
मतौ इसौ दिढ़ाय महा भड़, सालुळिया प्रंम सनमुख सोहड़ ।
पोढ़े जेथ अखै वड़ पारै, धाता इंद अमर पांव धारै ।।
त्राहि त्राहि उबारौ त्राता, असुरां त्रिभवण दीध असाता ।
इळ कुरम अवतरे उधारे, वेदां बाहर मीन बकारे ।।
संत पैहळाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळे हिरणाखस काहुळि ।
ग्राहि कन्हि ली वारुण गिरधारी[3], मोखै दोहूं तैं हींज मुरारी[4] ।।
वार अनेक देवां कजि वाहर, दोद्रे रूप विवध दामोदर ।
जागि जागि प्रभु अंतरजांमी, ससिमथ जोग निद्रा तजि सांमी ।।
उरध कर साखा कर आखै, राज विनां सरणै कुंण राखै ।
दांणव दूठ अरूठ दुझल्लां, सुर जख (रिख)[5] ग्रंधप उर सल्लां ।।

---

१. ल्यै । २. पिसाचां । ३. गिरधारि । ४. मुरारि । ५. रिख पाठान्तर की प्रति से दिया है ।

---

५७. मोहरी दळ – सेना का अग्र भाग । रगतासुर – रक्तासुर । सार भंवर – तलवार का रसिक, तलवार चलाने में निपुण । चालणि कढ़ि – बुरी तरह पराजित करने वाले । बगसी – मुखिया, प्रधान । आहव – युद्ध । पिसण – शत्रु । दिढ़ाय – दृढ़ निश्चय करके । सालुळिया – प्रस्थान किया । सोहड़ – वीर । अखैवड़ – अक्षय वट । असाता – अशान्ति, त्रास । हिरणाखस – हिरण्यकश्यप । दूठ – दुष्ट । दुझल्ला – तलवारें । जख – यक्ष । गंध्रप – गंधर्व ।

सुणे पोकार विसन सळसळिया, रत चखि अकट[1]कोट घोम रळिया।
प्रळै काळ रौ घिखतौ पावक, प्रगटे जोति पिंड प्रम भावक।।
निय निय तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख मुनेसर।
अप्रम सुज तेज प्रगट घुर आणण, विसन तेज भुज दैयत[2] विडारण।।
वणे डसण तेज्र ब्रह्माणे, आतम नेत्र वणे मस भाण।
सज्या तेज भुहारा सोहै, मारुत तेज श्रवण मन मोहै।।
उतवग वणे तेज सा ईमर, वणे इन्द्राणी तेज वासचर।
चिहरा वरण तेज वणि चाचर, सोम तेज थळथूळ फवे सर।।
तेज कुमेर रिदौ वण तारो, भुअग तेज उदर वण भारी।
सोभति तेज कठ सरसत्ती, पवण तेज अहरण वणि पत्ती।।
धरणी तेज नितव वणे धर, काळ तेज ओवण वण दिटकर।
पग माखा वणि तेज प्रभाकर, पाण आगुळी तेज रमा पर।।
अवा रूप अैमि फवि अदभुत, समपे आवध[3] देव मिळे सत।
करे तिसूळ सूळ मजि[4] काढै, चौभुज पहिल[5] पिनाकी चाढै[6]।।
विसन चक्र चक्र[7] हू वावे, निजरा कीध[8] त्रिजग हित नावे।
नागपास निरदळण निसाचर, समपे वरण जुडेवा समहर।।
धजवड जमराजा कर धारै, सुरमुख[9] सावळ पेस त्रित सारै।
मारुत कोवड वाण महावळ, समपै वजर सुरापति सामळ।।

---

१ त्रिकट। २ दैत। ३ आवुध। ४ मझि। ५ पहल। ६ काढै। ७ वक्र। ८ किम। ९ सूरमुख।

---

५७ पोकार – पुकार। सळसळिया – चलायमान हुए। घिखतौ – प्रज्वलित। अप्रम – अपरिमित। दैयत – दैत्य। विडारण – नष्ट करने के लिए। डसण – दात। आतस – तेजामय। सज्या – सध्या। उतवग – सिर। कुमेर – कुबेर। रिदौ – हृदय। भुअग – भुजग। पवण – पवन। अहरण – अधर। ओवण – पैर। पग साखा – पैर की अगुलियां। तेज प्रभाकर – किरणें। अवा – अविका। समप – दिय। जुडेवा – भिडने को। समहर – युद्ध। सावळ – शस्त्र विशेष। वजर – वज्र। अपे – सौंपे।

पुण अपे निज घंट पटाभर, खळां गमणहर समपे खपर ।
पंकजमाळ समपे प्रजापति, कमंडळ समपे रिखां मिळ क्रित ।।
समपे अनड़ दाढ़ाळ सहट्टां, दैतां दहण करण दहवट्टां ।
रातंबर तन रोम विराजै, झळकंत तेज सुरां मझि आजै ।। ५७

अथ वचनिका

तिण वेळां आदरी सगति । जोति री धणियांणी । सुरां रो सहाय । सुक्रित री वाहरू । खळां री खैगाळ । चवदै भवणां री प्रतिपाळ । प्रगट विराजमांन हुवा । इंद्रलोक में उछाह हुवा । इंद्रांणी सिणगार किया । देवांगनां धवळ-मंगळ[1] किया[2] । नारद तुंबर सपत सुर संगीत किया[3] । अपछरा मिळ ग्रंधप ग्यान किया । हूरां पौहप बरखा कीधी । तिण विरियां[4] बारै आदीत मुखा कमळ विराजमांन हुवा । ब्रहमादि[5] रिखीस्वरां आसीस दीधी । मन रा संकोच भागा । इंद्र आदि समस्त देवता असतूति[6] करण लागा ।। ५८

छंद दूहा

कर जोड़े नांमै[7] कमळ, द्रग अनमल दरस्स[8] ।
पै लग्गै[9] सुरपति[10] पभण[11], वांणी वैण विहस्स[12] ।। ५९

---

१. धवळ-मागळ । २. कीया । ३ कीया । ४. वीरीयां । ५. ब्रह्मादि । ६. अस्तुत । ७. नांमे । ८. दरस । ९. लगै । १०. सूरपति । ११. प्रभण । १२. विहस ।

---

५७. अपे – सौंपे । दहण – नष्ट करने के लिए । आजै – सुशोभित होती है ।

५८. आदरी – आदि काल की । धणियांणी – स्वामिनी । सहाय – सहायता करने वाली । वाहरू – पीछा करने वाली । खैगाळ – नष्ट करने वोली । उछाह – उत्सव । धवळ-मगळ – आनन्दोत्सव । ग्यान – गायन । पौहप – पुष्प । बरखा – वर्षा । विरियां – वेला । बारै······हुवा – बारह ही सूर्यों का मुख-कमल पर सुशोभित हुआ । संकोच भागा – भय रहित हुए । असतूति – स्तुति ।

५९. कमळ – सिर । अनमल – निर्मल । पभण – बोलते हुए ।

नमो[1] आदि[2] नाराइणी[3], ब्रहमाणी[4] ब्रहमाड[5] ।
रुद्राणी जाणी रिघू, अतुळित तेज अखड ॥ ६०
तू[6] करता हरिता तूही[7], वापर भू अविरत्त ।
जाणै कुण विध जोगणी, चामड[8] तूझ चरित्त[9] ॥ ६१

छद भुजगप्रयात[10]

जपै देव सोभा मिळै हाथ जोडे, चढे व्यान हीगोळ कीता चहोडे ॥
नमो जालपा[11] सारदा आदि नारी, नमो मद्ध रुपी नमो मद्द धारी ॥
नमो मात व्याता[12] नमो रग जाणी, नमो वाल व्याती ब्रहमा वखाणी ॥
नमो राखि श्रधा[13] नमो छाह रुपी, नमो उमया चौभुजी द्रग ओपी ॥
नमो रूप नद्दा सवद्दा रसीली, नमो लच्छि रभा नमो वोम लीली ॥
नमो मोहणी कमळा मूख मूनी, नमो धोम धूतारणी मभ धूनी ॥
नमो खाग हथ्थी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळरात्री ककाळी ॥
नमो श्रव व्यापी नमो सुख दाता, नमो गौरी पारवत्ती ग्यान गाता ॥
नमो कूखमाडी नमो कान्ति काळी, नमो त्रिपूरा तोनला प्रेत ताळी ॥
नमो वीसहथ्थी नमो वीर सगा, नमो उडळा ओडणी गोम अगा ॥
नमो पिंगळा मगळा चक्रपाणी, नमो मौदिता जोत आभा म्रडाणी[14] ॥
नमो कामणी वेद माया कुमारी, नमो मैहस नैणी प्रवोधा सैसारी ॥
नमो सेसकठी नमो सीळ सामा, नमो भूचरी खेचरी रुद्र भामा ॥

---

१ नमो । २ आद । ३ नारायणी । ४ ब्रह्माणी । ५ ब्रह्माण्ड । ६ तु । ७ तुही । ८ चामुड । ९ चरत्त । १० भुजगीप्रयात । ११ जालपी । १२ धाता । १३ श्रद्धा । १४ मडाणी ।

---

६० रिघू – पृथ्वी । अतुळित – अतुलनीय ।

६१ वापर – उस पर भी । अविरत्त – निरतर । कुण विध – किस प्रकार । जोगणी – योगिनी । चरित्त – चरित्र ।

६२ कीता चहोडे – कीर्ति गाथा कह कर प्रसन्न करते है । मद्द – गर्व, शक्ति । छाह रूपी – छाया की तरह अस्पृश्य । लच्छि – लक्ष्मी । धूतारणी – पृथ्वी को तारने वाली । गोम – आकाश । सहस नैणी – सहस्र नेत्रा वाली ।

नमौ डोकरी[1] डाइणी दधी[2] डोही, नमौ कुंडळी जोति मुद्रांक[3] लोही ॥
नमौ सीतळा सूळ क्रांगी साहिरी[4], नमौ चांपणी सांपणी पापचारी ॥
नमौ तापसी त्रीण संझ्या तुलज्जा, नमौ ध्रंम रूपी नमौ ध्रंम धज्जा ॥
नमौ भगवती निराकार भ्रंती, नमौ बांभणी वेद तूंही[5] वचंती ॥
नमौ मंत्रणी तंत्रणी मेघमाळा, नमौ संकरी सुंदरी प्रेम साळा ॥
वणे[6] जेथ तेथां तोहि जोति वासी, प्रिथी वौम सामंद्र तूंही[7] प्रकासी ॥
नहीं ठौड़ तूं जेथ ते दाख[8] नेसं, अखै इंद ऊभा आदेसं आदेसं ॥ ६२

गाहा चौसर

इम अस्तूति[9] सुरांपति आखै, आतम रसण सफळ हित आखै ।
उरधिवास्री जोड़ि करि आखै, अइयौ अनंत प्राक्रम[10] आखै ॥ ६३
दाखै वैण सुधारस देवी, दुजड़ ग्रहे कर जागी देवी ।
दैतां कळियळ भूंजै[11] देवी, दुमना वदन केम भणि[12] देवी ॥ ६४

छंद दूहो

डख डख वख वख डौलती, आफळ हास अटट्ट ।
हंसे हिंगोळा कंप सुर[13], थरहर* धूजै थट्ट ॥ ६५

---

१. डोकारी । २. दधि । ३. मुद्राक । ४. सहीरी । ५. तुंही । ६. वणि । ७. तुंही । ८. खाद । ९. अस्तुत । १०. पराक्रम । ११. भुजै । १२. भणै । १३. सूर । *'हसै' पाठ अधिक है ।

---

६२. दधी – उदधि । डोही – मथने वाली । त्रीण – तीन । ध्रम रूपी – धर्म का स्वरूप । वासी – निवास करती है । प्रकासी – प्रकाशमान है । अखै – कहते हैं ।

६३. रसण – जिह्वा । उरधिवासी – देवता ।

६४. वैण – वचन । दुजड़ – तलवार । दैतां – दैत्यो को । भूजै – नष्ट करती है ।

६५. हास – हास्य । अटट्ट – अट्टहासपूर्ण । थट्ट – समूह ।

छंद कवित्त जाति चोपई

उदधि अब ऊछळे[1], सेस सळसळे सचाळे।
कमठ पीठ कळमळे, सुमेर डिगडिगे सुढाळे॥
खित पुड विध खळभळे, दिस द्रिगपाळ[2] दहल्ले[3]।
चद सूर चळचळे, इद आसण उथल्ले[4]॥
ब्रहमड किना फुट्टी[5] वळे, घसक[6] तळातळ आतळे।
मुखे हसे सकति महाबळ[7], वेताळा कुळ व्याकुळे॥ ६६

छंद कवित्त

खमा खमा खेचरी, जैव जैत जुग जणणी।
तू[8] करता तू[9] आदि, तूही[10] पतिता उधरणी॥
सुणि वोलै सकरो, भणी कारज कुण आता।
चितातुरा दुचित, विगत सुध दाखो वाता॥
पुण इद करग जोडे पभण, कहर कळह किसणा किया।
वर जोर सुरा थापे अवन, पाणि न पौंहचै[11] किण विया[12]॥ ६७
कथै इम[13] काळिका, चाव डसणा रत चख्खा[14]।
खळाडळा करि खळा, गळा रुद्रा भर भख्खा[15]॥

---

१ उच्छळे। २ द्रिगपाळ। ३ दहले। ४ उथले। ५ फुटो। ६ घसक। ७ महाबळणी। ८ तु। ९ तु। १० तुही। ११ पोहचै। १२ वीया। १३ ईम। १४ चखा। १५ भखा।

---

६६ ऊछळे – उछलता है। सळसळे – हिलता डुलता है। खित पुड – पथ्वी तल। खळभळे – कंपित होते हैं। आसण – आसन। तळातळ – पाताल। व्याकुळ – व्याकुल होते है।

६७ उधरणी – उद्धार करने वाली। दुचित – दुश्चिता। कहर – दुष्ट।

६८ कथै – कहती हैं। चाव – चबा कर। रत चख्खा – लाल आखें। खळाडळा – नष्ट भ्रष्ट करके।

गहे पळां गूडळां, पोख पळचरां वळावळ ।
असग्गां[1] जड़ ऊखळां, भांजि किरमाळ मुहांभळ ।।
चकचूर करूं अब चुग्गळां[2], आहव ब्रिद राखू इळां[3] ।
दिल सोच छांड देवाधिपति, पांव धारौ आपण बळां ।। ६८

सुणै इंद उससै[4] अमर उल्लसै[5] सजोसे ।
बहसे आंणण बरस हंसै नारद सकसे ।।
हरसै हूरां[6] हुळस निहस दुंदभी निर्गमां[7] ।
बरसै कुसम अरस धमस आतम ऊधमां ।।
जस कर सुरेस सुर गण सहित, पोहचै निज देवां पुरी ।
मन धार क्रोध करिवा मदत, सुर हित गिर दिस[8] संचरी ।। ६९

छंद दूहौ

गहिक गिरंदां गौरज्या[9], बैसि सुद्रिढ़ करि भाव ।
रचै रवद्दां[10] कारणै, विध विध भांति वणाव ।। ७०

छंद जाति सारसी

धरि कौप करग्गां[11] ग्रेह धजवड़ रूप रचि रोद्रांयणी ।
जळ न्निमळ करे मंजण चरणा चीर धर चंद्रायणी ।।

---

१. असगा । २. चुगलां । ३. ईळां । ४. उससे । ५. उलसै । ६. हुरा ।
७. निगमां । ८. दीस । ९. गोरज्या । १०. रवदां । ११. करगां ।

---

६८. वळावळ – चारों ओर । असग्गां – दुश्मन । ऊखलां – उखेड़ कर । आहव – युद्ध । ब्रिद – विरुद ।

६९. उसस्सै – जोश में फूलता है । अमर – देवता । उल्लसै – उल्लसित होते हैं । निहस – बजती है । गिर दिस – पर्वतो की ओर । संचरी – प्रस्थान किया ।

७०. बैसि – बैठ कर । रवद्दां – असुरों । वणाव – श्रृंगार ।

वणि माग उतवग गूथ वैणी[1] मोताहळ मिळ मझ्झऐ[2]।
सिणगार असुरा छळण समहर[3] सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७१

करि भ्रिकुटी निळवट तिलक कुकम खोलि रचि खेमकरी।
कमि नैण भीभळ सारि काजळ बिदका दे अवरी॥
सुभ नाक वेसर जडित श्रौवन असुर पास अळूझऐ।
सिणगार असुरा छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७२

फवि अलिक वासिग वचा बिहु फरि श्रवण कुडळ सौहीय।
मुखवास परिमळ डसण दाडिम अहर ब्रब रत औपीय॥
विधु वदन ईखे लजे विध विध दयत पावक दझ्झऐ।
सिणगार असुरा छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७३

पिक कठ सौभति[4] चीठ[5] परठे सत्रण वण मोती सरी।
परवध हीरा जडित पाखळ कुसम माळा सकरी॥
भुज कमळ पहिरे चूड आभ्रण ककण धर सुर कज्जऐ[6]।
सिणगार असुरा छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७४

आगुळी कचण जडित औमण वहरखा औपे वहा[7]।
कुच कळस पकज कळी कोमळ कचुवौ ऊपर कहा[8]॥
कटि लक केहर माप करली घडि कडी भू धूजऐ।
सिणगार असुरा छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७५

---

१ वेणि। २ मज्झए। ३ समूहर। ४ सोभती। ५ चीढ। ६ कजए।
७ वाहा। ८ कहा।

---

७१ उतवग – सिर। भींभळ – लाल। समहर – समर।

७३ बिहु फरि – दोनो तरफ। अहर – अधर। ब्रब – बिम्बा फल। औपीय – सुशोभित होते है। ईखे – देख कर। दयत – दैत्य। दझ्झ ऐ – जलते है। छळण – छलने के लिए।

७५ वहरखा – बाहु पर का पहनाव। कचुवौ – कचुकी। माप करली – मुट्ठी से नापी जा सकने योग्य।

रंभ खंभ कुंजर सूंड[1] राजै जुगळ जंघा जांमली।
कंज पौहप कुरम चरण कांमा पहिर नूंपर प्रावली[2] ॥
झणकार जेहड़ सबद झीणां[3] गुहिर अंबर गज्झिऐ[4]।
सिणगार असुरां छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७६

क्रिस अंग चीर सुरंग कन्या वणी खट दस वेसऐ।
चिहुं पास अळियळ भवैं[5] चोसर देह सुरंभ सुंदेसऐ ॥
देख पदमणि असुर[6] दाझै लीलंग गय गति लज्जऐ।
सिणगार असुरां छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७७

मद मसत सोभित महामाया पात्र मदरा पूरऐ।
चख चौळ गोसां जोस चंचळ घुळै लोचन घूरऐ ॥
मंदहास मुळकै म्रिघा व्रंगी विछीयां पै वज्जऐ।
सिणगार असुरां छळण समहर सगति अदभुत सझ्झऐ ॥ ७८

तन मौड़ वांकी[7] निजर त्रिपुरा सलज चढ़ियां[8] सौहळी।
सळ नाक चाढ़ै विकट सोहै अहर वेसर अळवळी ॥
सुर भीर कारण सझै सुंदर छोळ करती छज्झऐ।
सिणगार असुर छळण समहर सगति अदभुत सज्झऐ ॥ ७९

---

१. सूड। २. पावली। ३. जीणा। ४. गज्जियं। ५. भवै। ६. अछर।
७. वंकी। ८. चढ़ीयां।

---

७६. जुगळ – युगल। जेहड – जैसा। गुहिर – गहरा।
७७. चिहु – चारो ओर। अळियळ – भौरे। लीलंग – हंस। गय गति – गज गति।
७८. मदरा – मदिरा। चख चौळ – लाल आखे। गोसां – आंख के कोने। विछीया – पैरो का आभूषण विशेष।
७९. सलज – लज्जा युक्त। सौहळी – कांति। अहर – अधर। वेसर – नाक का गहना। अळवळी – हिलती हुई। छोळ – उमंग। छज्झऐ – शोभायमान होती है।

छंद कवित्त जाति राड़

सुर प्रमोद सुरपति विनोद इद्राणी आभ्ररण[1] ।
सेस जोम तप्पण सतेज गान तुबर गण ॥
गह[2] गिरद मचौ समद नारद्द किलक्का[3] ।
पळचरा घ्रिप[4] ब्रह्मादि क्रत वारिद्द[5] गहक्का[6] ॥
जम जौस रौस दिगपाळ मिळ वौम पौहप वरमाविया ।
सुर राइ[7] सुरा सिणगार सथ किया[8] मिळ ऐता किया ॥ ८०

छंद दूहा वडा

सझि आभ्रण सिणगार, हेमाचळ बैठी हरख ।
ऊठी दैंता ऊपरा[9], गज सिर जाण गिलार ॥ ८१
खुद दाणव सू खीज, धारे मन विहसे धुरा ।
केवी कासै कडकती, वादळ भळको वीज ॥ ८२
दोपै ऊचै[10] द्रग, आप विराजी ईसरी ।
कोटि तरण ऊगा[11] अकळ, आभा तेज उतग ॥ ८३
घण मेळै घमसाण, राखस आहेडै रमण ।
चड मड वे आता चढै, प्राजळिता निज प्राण ॥ ८४

---

१ आभरण । २ गहरि । ३ नारद । ४ किलका । ५ ध्रित । ६ गहका । ७ सुरराय । ८ कोया । ६ उपरे । १० उचै । ११ उगग ।

---

८० गह – वडा, पळचरां – मास भक्षी । वारिद्द – वादल । वौम – आकाश । पौहप – पुष्प । राइ – राजा, मालिक ।

८१ आभ्रण – गहन । गिलार – सिंह ।

८२ केवी – दुश्मन । कडकती – क्रुद्ध होती । भळको – चमकी ।

८३ द्रग – दुर्ग । विराजी – विराजमान हुई । तरण – सूय । ऊगा – उदित हुए । उतग – अत्यधिक ।

८४ घमसांण – युद्ध । राखस – राक्षस । आहेडै – शिकार । प्राजळिता – जलते हुए ।

ठावी मूठां ठीक, मूकै बांण महाबळी ।
म्रिघ सांबर सूकर महिख, भेदंतां निरभीक ।। ८५

दाबै कर दाढ़ाळ, गिड़ सांबळ कीजै गरिक ।
आंठू अस दाबै असुर, दांतां चढ़ै दांताळ ।। ८६

झांफंता अघ झेल, पुळता तीतर पाकड़ै ।
आवरीयां नांह ऊबरै, अणियां[1] दियै ऊथेल[2] ।। ८७

चालवता चौधारि, जंगम चढ़िया जोस में ।
कुमुंहां दीठी काळिका, निरुपम रंभा नारि ।। ८८

थह सेना थिरकेह, सनमुख देखै सुंदरी ।
पनंग खिल्यौ जिम गारड़ी[3], गह छूटौ[4] गरकेह ।। ८९

द्रिग पहाड़ि दिसीह, बक लग्गी[5] ऊंचै[6] वदन ।
परठी पाहण पूतळी, असुरां सेन असीह ।। ९०

घूमर फौजां घेर, पूठा घरिया[7] पारधी[8] ।
चंड मंड त्री चीतारता, आया नगरी ऐर ।। ९१

छंद अरधनाराच

आवे सवेग आकळा, वदन्न नैण व्याकुळा ।
पवंग छाड पाधरा, उसस्स[9] रोम ऊधरा[10] ।

---

१. अणीयां । २. उथेल । ३. गारडू । ४. छुटौ । ५. लगी । ६. उंचै । ७. घरीया । ८. पाधरी । ९. उसस । १०. उधरा ।

---

८५. म्रिघ – मृग । सांभर – सामर । सूकर – सुअर । भेदंतां – भेदन करते हुए ।
८८. जंगम – योद्धा, बहादुर । कुमुंहां – दुष्ट । दीठी – देखी ।
८९. थह – झुंड । थिरकेह – रोमाचित हो गई । पनंग – सर्प । खिल्यौ – प्रसन्न हुआ । गारड़ी – सपेरा । गह – ताकत । गरकेह – सहज ही में ।
९०. परठी – स्थापित की । पाहण – पत्थर । पूतळी – मूर्ति । असीह – ऐसी ।
९१. घूमर – फौज के गोलाकार झुंड । घरिया – मुड़े । पारधी - निशानेबाज, योद्धा । चीतारता – याद करते हुए ।
९२. आकळा – आकुल । उसस्स – जोश युक्त ।

दीवाण मभ दाइम[१] करे सिलाम काइम।
चवत चड मडय, महा जोधार तडय[२]।
करवा जोडि कामणी, भाळी[३] अनोप भामणी।
सरूप हेक सुदरी, इला नका अगोचरी।
प्रतख[४] चरख[५] पोइणी, महा मदन मोहिणी।
मयक मुख[६] मजळी, करार नैत कजळी।
गरव्व धारि गेहणी, सुरत्त अत सोहिणी।
छयल्ल[७] देह छेदती, भ्रुहा कोवड भेदती।
धानखणी सु[८] घाडि धाटि, रत्ति[९] माडै वीर राडि।
चटी सु चित्त चचळा, सुरग रग[१०] सल्लळा[११]।
निहल्ल मूठि नाखती, धमोड लोड[१२] वाखती।
भरे लोचन भाळिय[१३], छौगाळ कीध छाळिय[१४]।
कुमार का नाऊढ[१५] काय, हेकै जीह न कहाय[१६]।
ईखी पहाड[१७] ऊपरा[१८], निरत्त[१९] पग्ग[२०] नूपरा।
अजव्व[२१] नार अकलो, भरी कळा गुणा भली[२२]।
वुलाइ[२३] गेह वासिजै, परम सुरस[२४] प्रामजै ॥ ६२

---

१ दायम। २ ताडय। ३ भली। ४ प्रतख। ५ चख। ६ मुख। ७ छयळ। ८ सु। ९ रती। १० अग। ११ सलला। १२ लोल। १३ भाळीय। १४ छाळीय। १५ नऊढ। १६ कहालीय। १७ पाहड। १८ उपरा। १९ निरत। २० पग। २१ अजव। २२ भरी। २३ वुलाय। २४ सुग्र।

---

६२ तडय – जोर से बोले। भाळी – देखी। अनोप – अनुपम। भामणी – स्त्री। चरख पोइणी – कमलनयनी। गेहणी – गृहिणी। छयल्ल – रसिक, शौकीन। कोवड – धनुष। राडि – युद्ध। छौगाळ – छोगे धारण करने वाले पुरुष। ईखी – दिखाई दी। वासिजै – बसावें, रखें।

छंद दूहा

चौंड़ै चंड मंडां चवी, संभ आगळि सकाज ।
मोहण वेली अघ[1] नयण, मूंध अजब महाराज ।। ९३

छंद मुड़ियल

धर पौरस मेछां धणी कांमणि हंदी कथ्थ ।
सांभळि बैठी सांप्रत महागिरिंदां मथ्थ ।।
महागिरिंदां मथ्थ श्रवण कथ सांभळी ।
वेहळ मदन विरांम थयौ तन व्याकुळी ।।
तेड़े तद सुग्रीव दाखि कथि[2] त्री तणी ।
धूंणे साबळ चाहि थइ मेछां धणी ।। ९४
हेम वरनी[3] हेम गिर[4] बाली लहुवे वेस ।
कंथ[5] विहुंणी कांमणी सांचौ कहि संदेस ।।
सांचौ कहै संदेस वैंण मीठा करूं ।
राज मुदै पट हथ्थ रंग महिलां धरूं ।।
भूखण सेझ हुकंम सहेली हेत भर ।
हिरणांखी[6] ले आव वयट्ठी[7] हेमगिर[8] ।। ९५

छद दूहा

कळह वधारण काळिका, सांम हुकम ससमथ्थ[9] ।
चाले दूत स चांपरौ, पदमणि सांम्है पथ्थ[10] ।। ९६

---

१. मृग । २. कथा । ३. हेमवरणी । ४. हेमगीर । ५. कंत । ६. हिरणांखी । ७. बयठी । ८. हेमगीर । ९. स समथ । १०. पथ ।

---

९३. चौंड़ै – खुले आम । चवी – कही । मोहण वेली – मोहिनी लता । मूंध – मुग्धा ।
९४. मेछां – राक्षस । सांभळि – सुनी । व्याकुळी – व्याकुल । तेड़े – बुला कर । दाखि – कही । धूणे – घुमा कर । साबळ – बड़ा भाला, भाले की आकार का शस्त्र ।
९५. हेम गिर – हिमालय । लहुवे – लघु । वेस – उम्र । कंथ विहुंणी – बिना पति की । भूखण – आभूषण । हेतभर – प्रेम पूर्वक । वयट्ठी – बैठी ।
९६. कळह – बखेड़ा । साम – स्वामी । सांम्है – सामने । पथ्थ – मार्ग ।

सिखर हेमाचळ सुदरी, निसचळ थकी नितोठ[1] ।
दरसी दुरगा दुगम गति[2], भेली[3] जाइ न दीठ ॥ ९७

दूतो वाच

कर जोडे नामै कमळ, मुणै सु दूता मीड ।
विखम पहाडा मिर वसौ, ठावी वणी न ठौड ॥ ९८
देवी दैतेसर दुझल्ल, त्रिणलोकी परमेस ।
महत बोहत कर मेलियौ, हू[4] सुग्रीव दूतेस[5] ॥ ९९
लघु वयै भीभळ लोयणी, वनिता अदभुत वेस ।
कुण तू[6] मन की वात कहि, दाखै इम दूतेस ॥ १००
सिर ढाकण कुण सा ग्रह्यौ[7], जुवती चढतै[वैसा][8] जौम ।
दिन दिन जौवन दीहडा, वूहा[9] जावै वौम ॥ १०१
गाहडमल[10] कोटा गिळण, रिण दूला[11] राजान ।
भ्राता संभ निसंभ वे, दूणा भड दीवाण ॥ १०२
असुरा पति तो आगळी, मो मेलियौ मसद ।
माणण भीच आछा महिल, गहिरा छाडि गिरद ॥ १०३

---

१ नितिठ । २ भगवती । ३ भेलि । ४ हु । ५ दुतेस । ६ तुं ।
७ सग्रहयौ । ८ वैसा अधिक है । ९ वुहा । १० गाहड मिल । ११ दुला ।

---

९७ झेली – सहन नही की जाती । दीठ – दृष्टि ।
९८ कमळ – मस्तक । मुणै – कहे । विखम – विषम ।
९९ दैतेसर – दैत्यो का स्वामी । दुझल्ल – वीर । मेलियौ – भेजा ।
१०० लघुवयै – छोटी आयु । लोयणी – नेत्रो वाली । दाखै – कहता ।
१०१ सिर-ढाकण – पति । जुवती – युवती । दीहडा – दिन । वूहा – चले जाते हैं ।
१०२ गाहडमल – महान् वीर । कोटां गिळण – दुर्गो को ध्वस्त करने वाला । वे – दोनो । दूणा – दुगुने ।
१०३ आगळी – सामने, पास । छाडि – त्याग कर । गिरद – पहाड ।

श्री देव्युं वाच

छंद कवित्त

देवी कहै सुण दूत, कथ माहिरी विध करणी ।
अखन-कंवारी आदि, जोति मुर लोकां जणणी ।।
परणी किण ही न पांणि[1], जटा धारण हूँ[2] जोगणि[3] ।
मैं रचिया ब्रहमंड, हुई ज भोळी हूं भोगण ।।
अंतरीख हूंता ऊतर[4] अनड़, आठौ परबत आदरूं ।
कहै कविण[5] मुझ हूंतो[6] सबळ, धणी तिकौ माथै धरूं ।। १०४

दूतो वाच

भणै दूत सुण रंभ, बकै अणहूंत[7] वड़ाई ।
श्रवणे नथी सांभळया, संभ निहसंभ सवाई ।।
मछराळा मूंछाळ, वेहद हद वेढ़ीगारा ।
सुर भग्गा[8] लख वार, प्रथी इक छात्रप[9] सारा ।।
अहि इंद अनल पावक अरक, नित प्रति सेवै जोड़ि कर ।
मौ वत्त सच्च[10] मांनीस जदि[11], नारी तूं[12] देख स निजर ।। १०५

असंख जोध[13] ओळगै, असंख पांवै नमि छूटै ।
असंख डंड आदरै, असंख रिण बूथां छूटै ।।

---

१. पांण । २. हुं । ३. जोगणी । ४. उत्तर । ५. कवीण । ६. हुंती । ७. अणहुंत । ८. भगा । ६. छत्रप । १०. सच । ११. जदी । १२. तुं । १३. जोग ।

---

१०४. अखन-कंवारी – अक्षत कुमारी । मुर लोकां – तीनों लोक । परणी – विवाही । अनड़ – पहाड़ पर । कविण – कौन । धणी – स्वामी, पति ।

१०५. रंभ – सुन्दरी । अणहूंत – अत्यविक्य, अनहोनी । नथी सांभळया – नही सुने । मछराळा – मात्सर्य वाले । वेढ़ीगारा – युद्ध करने वाले । छात्रप – छत्रपति, राजा । अहि – सर्प । अरक – सूर्य । जदि – जब ।

१०६. ओळगे – सेवा करे । आदरे – स्वीकार करे । रिण बूथां – युद्ध में कट कर ।

अमल पटाझर प्रौळ[1], असख भिडज घणमूला ।
अवर चो घा अनमि, असख उमराव अडूला[2] ॥
खमस्या रहै जोधा खयग, अमुरा धिप कोवा अणी ।
कहि दूत किसू अखै कवि र, कूडी वाता कामणी ॥ १०६

छद दोढ़ो मोतिदाम

पभणै सुरराइ सतेज पणै अव दूत सही ।
अहियो[3] व्रत ए वाळा पणै गोरी गाढ अही ॥
जुडि जग खतग उपाडि जडाळ भडाग[4] भळै ।
मथि आहव सामद आप तणै वळ माण मिळै ॥
जुध जीत घुराइ आवाळ जिको धणी सीस धरा ।
परणू[5] तिण भूप महावर प्रामे कळि करा ॥
पयपै पूठा दूत पधार कहो जै ईस अखै ।
भिडिया[6] विण भारथ नारि न आवै नेमि भगै ॥
वदै फिर दूत वकै अविचारी दाणव दूठ दळा[7] ।
नृप सभ निसभ स[8]भूझा नाहरि काळि[9] कळा ॥
गज थट्ट अवाहट चोपट ऊपट[10] कीध गिरा खळ खट्ट ।
द(ह)वट्ट खिलाडै खाखर खेल खरा पछाडि ॥
भिजाड देवा पति पाकड खेध करै ।
भिडै कुण जुद्ध[11] महाभड भोळी काळी वात करै ॥ १०७

---

१ पौळ । २ अडुला । ३ अहीयो । ४ भडाळ । ५ परणु । ६ भिडीया । ७ कळा । ८ 'स' पाठान्तर की पक्ति मे नही । ९ करिला । १० उपट । ११ जूध ।

पटाझर प्रौळ – द्वार पर हाथी । (घूमते हैं) । भिडज – घोडे । घणमूला – अत्यधिक मूल्य के । खमस्या रहै – सजे हुए तैयार रहते हैं । खयग – तलवारें । धिप – अधिप । अखै – बोले । कूडी – असत्य ।

१०७ पभणै – कहती है । सुरराइ – सुरराय, देवी । गाढ़ – दृढ, पक्का । खतग – क्षतअग । आहव – युद्ध । घुराइ – बजवा कर । आवाळ – नक्कारे । जिको – वह । परणू – विवाह करू । पयप – कहते है । पूठा – लौट कर । वदै – कहे । दूठ – वीर, दुष्ट । खेध – युद्ध, चिन्ता । काळी – कालिका ।

छंद चंद्रायणा

दूतो वाच

काली जेही वत्त[1] गहिली[2] नां करौ ।
खांची ले जासी मुंध धकौ जम सुं[3] खरौ ।।
तद भणि केही कांण रहेसी ताहरी ।
हरिहां संभ न मूकै हठ दुवाई साहरी ।। १०८

जीता लाखां जुद्ध[4] विहंडै जूजूवाह[5] ।
हाजिर बंदा देव सकौ किंकर हूवाह[6] ।।
प्रगटी पेस अमोल दियै[7] नित सुरपती[8] ।
हरिहां गुमिर कितो इक तूझ कहीजै जगजती ।। १०९

बेली पास प्रौचाळ नां दीसै बाहरूं ।
पाखिल पवंग सूंडाळ नकौ तो पाहरूं ।।
बोलै केहै जोरि करारि बावळी ।
हरिहां रमणी तज हठ चालि दुवाई रावळी ।। ११०

छंदा दूहा वडा

श्री देवी वाच

सांचौ तूं सुग्रीव, भाखै दुरगा भगवती ।
तैं कहिया तिम हीज तिकै, दांणव बिहूं[9] दईव[10] ।। १११

---

१. वात । २. गहेली । ३. सू । ४. जुध । ५. जूंजूवा । ६. हुवा ।
७. दीयै । ८. सुरपति । ९. विहुं । १०. दइव ।

---

१०८. काली – वेसमझ की । गहिली – पागलपन की । खांची – खींच कर, वलात् ।
जम – यम । तद – तव । कांण – मर्यादा, इज्जत । मूकै – त्यागे ।

१०९. विहंडै – नष्ट करे । पेस – पेश, नजराना ।

११०. वेली – सहायक । बाहरूं – रक्षक । पवंग – घोड़े । सूंडाळ – हाथी । बावळी –
पगली ।

१११. तिम हीज – उसी प्रकार । तिकै – वे । बिहू – दोनों । दईव – योद्धा, राजा ।

अगलूणौ[1] पण ऐह[2], व्रत गहियौ वाळा पणै।
अळी न थावै[3] आचरयौ, दीसै ज्या लगि देह ॥ ११२

सभ तिसौ हिज[4] सूर, अनुज तिसौ हिज[5] अवियामणौ।
रमणी परणै[6] जिण रहै, नाराजी मुख नूर ॥ ११३

छंद दूहा

चाडि हुवै[7] तौ आव चढि, जा खुद सू कहि जाव।
पिंड जीता विण परणवा, हूसा म करि हिसाव ॥ ११४

दूतौ वाच

वात सुणौ वनिता वहिद, वदै दूत वरियाम[8]।
हल हू दूजे[9] देखा हमै, कळिहणि मचियै काम ॥ ११५

नारी तौ हूता निपट, कहिता लाजा कथ्थ।
वाता सोहरी वीसहथ, भड दोहरौ भारथ्थ ॥ ११६

सुत्री वयण दाखे सकळ, आवै सभ हजूर।
मुणसागुर साभळि मछर, भुजै हुई भक-भूर ॥ ११७

छंद कवित्त

दूत वैण[10] साभळे आग लागी[11] उर अन्तर।
मगळ धिखता माहि, जाण ढुळियौ व्रत जातर ॥

---

१ अगलूणो। २ एह। ३ थायै। ४ हीज। ५ हिज नही। ६ परणी। ७ हूवै। ८ वरीयाम। ९ हुइजे। १० वेयण। ११ लगी।

---

११२ अगलूणौ – पहले का, प्रथम। अळी – व्यथ। आचरयौ – ग्रहण किया हुआ।
११३ अवियामणौ – भयकर वीर। परणै – विवाह करे।
११४ पिंड – शरीर। हूसा – इच्छा।
११५ वरियाम – श्रेष्ठ।
११६ वीसहथ – वीस भुजा वाली देवी। दोहरौ – कठिन, दुलभ।
११७ मुणसागुर – मानव श्रेष्ठ। भक-भूर – चूर चूर।
११८ मगळ – अग्नि। व्रत जातर – घृत-पात्र।

कर तोले केवांण, धरा पीटै तन धूजै ।
पौरस चढ़ै प्रचंड, पांण कुंण मौसूं[1] पूजै ।।
खेसूं सुंमेरि[2] गिर गाहटूं, गहि पटकूं इंद गैण हूं ।
सै किण ही अबळ सिखावी सुर, वाढ़ि चढ़ाई वैण हूं ।। ११८

भणै कनेठौ भ्रात, गाज निहसंभ भटकी ।
चींटी ऊपर चढ़ण, कहौ कुंण सझै कटकी ।।
पंकज कारण प्रतख, कवण गजराज धकावै ।
पैलवण कुंण पुरख, त्राग तोड़ेवा बुलावै ।।
लाठियां[3] ग्रहै पापड़ मसळ, दुख हांसौ बेऊ दुरस ।
अबळा अनाथ बाळी निपट, नारी तिम बोली निरस ।। ११९

छंद पाघड़ी

भणै संभ दनज भांमी भुजाळ, चाठे[4] कळाव उससि चंचाळ ।।
त्राडूकि तेड़ नकीब त्यार, जालिम[5] संभ सांचौ जण्यार ।।
औनाड़ रंगत[6] असुरांण ओट, कौंकंद रौद चालंत कौट ।।
धूमरा नैण ऊठन्त धाड़, प्राझैत दैत सेना पहाड़ ।।
चूंगाळ[7] फूलंत खेलत चौधार, प्रह फट्टिय[8] चंड मुंडां पधार ।।
विरदैत कोड़ि करमैंत बैंस, साखैत जैत जू वीर सैंस ।।

---

१. मौसु । २. सूमेरी । ३. लाठीयां । ४. चाढ़े । ५. जालिम । ६. रगत । ७. चुंगाळ । ८. फटीय ।

पूजै – बराबरी कर के सहन करे । खेसूं – नष्ट करूं । गाहटूं – ध्वस्त करूं । इंद – इन्द्र । गैण – आकाश ।

११९. कनेठौ – कनिष्ठ । सझै कटकी – सेना सजावे । पैलवण – पहलवान । लाठिया – लट्ठ ।

१२०. उससि – जोश में आकर । त्राडूकि – गर्जना करके । औनाड़ – पराक्रमी । रौद – राक्षस । धाड़ – भभकती है । चूंगाळ – राक्षस । प्रह फट्टिय – पौ फटते ही । साखैत – साक्षात । जैत – विजय ।

धूमरलोचनो वाच

ईखै सगति धूमर ग्रखत, सभ निसभ महिळ चाळो हसत ।।
तो सुखा ताम करिसी त्रिपत्ति, नखतैत ग्राप वाछै निपत्ति ।।
मति करे ढील चलि साथ मुज्झ, त्रिण वाच वाह ग्रप्पु सु तुज्झ ।।
तढ मल्ल[1] लेजासी लटी ताण, कहि रही तदी तो किसी काण ।।

श्री देव्यु वाच

कुवंण[2] देवी साभळ कराळ, वीफरै तिणा इम कहे वाळ ।।
वृथा ग्रवोट जीपै वाणास, ग्राखाढ-सिद्ध सो करै ग्रास ।।
पुण प्राजळे ग्रगनि पूरै पवन, लडियग[3] धाइ धूवर लोचन ।।
देवी हूकार[4] किये भसम दैत, जालिम सघार जुध जैत जैत ।।
नभ हुता जेमि नाखित्र जाण, झडियौ ग्रौंचाळ किळळत झाण ।।
पडियौ धरत्ति माझी सुपेख, भयकर भभक्कै[5] रुद्र भेख ।।
ग्रहमड सीस ग्रोवण पयाळ, वळ[6] छळण वामण वधे वाळ ।।
ग्रह ग्रहे ग्रवाळ जागी ग्रमक, सीधवो राग प्रगटत सक ।।
करि वीरहाक ग्रोरै केकाण, मच राडि ग्राडि गोळा मडाण ।।
महमाइ चढै प्रगट मयद, गह करे गमै मेछी गयद ।।
नीकडो काट झाटा निराजि, पीजरै दळा मुगळा ग्रपाजि ।।

---

१ तढमल । २ कुवेंण । ३ लडोयग । ४ हुकार । ५ भभकं । ६ ळळ ।

ईख – कहता है । महिळ – महिला । त्रिपत्ति – तृप्त । वाच – वचन । लटी – बाल । ताण – खींच कर । काण – इज्जत । कुवेंण – ग्रपशब्द । वीफरै – क्रोध के ग्रावेश मे ग्राकर । जीपै – जीतें वाणास – तलवार । ग्राखाढ़ सिद्ध – रण-कुशल । ग्रास – ग्राशा । पुण – कह कर । प्राजळे – प्रज्ज्वलित कर । लडियग – पक्ति समूह । सघार – सहार कर । किळळत – चमचमाता हुग्रा । ग्रोवण – पैर । पयाळ – पाताल । वामण – वामन । ग्रवाळ – नगारे । जागी – युद्ध का एक वाद्य । ग्रोरै – डाले, प्रविष्ट किए । राडि – युद्ध । मयद – सिंह । झाटा – शस्त्र प्रहार से ।

रिणताळ रूक वाजंत रीठ, दांणव बरंगळ पड़त दीठ ।।
घड़ धड़छ किलंब धारां घिरौळ[1], हुई जैत जैत पहिलूं हिंगौळ ।।१२०

कवित्त चौप

साठि सैहस संघरे, दूठ दांणमां विडारे ।
भख लाधो भूचरे, ध्राप ग्रीभ्रां ध्रौकारे ।।
अमर जैत उवचरे, पोहप बरखे अंबारे ।।
गूद्र रंग गिरवरे, अवनि लुध भार उतारे ।।
धूमर भसम कीधा गरे, डोहे रिण सात्रव डरे ।
संभ रांण अगै पोंहतो सरे, इक किंकर इम उवचरे ।। १२१
थह गयंद नह थट्ट, विडंग नह तिसा विकट्टह ।
सामंत धीर सुभट्ट, नकौ तिण त्रिया निकट्टह ।।
भुजा च्यार अवियट्ट, दुपी आरोह दबट्टह ।
खग हथी खळखट्ट[2], किया असुरांण गरट्टह ।।
हूंकार प्रथम धूंवर झपट, हेळ कीध दैतां उहट्ट ।
मांणणी राड़ि राखै मरट्ट, सांच संभ मांनौ सुभट्ट ।। १२२

इति ध्रुमलोचन वध

छंद दूहा

पड़े सुणे सो चांपड़े, जूझे[3] जळा पड़ि जुद्ध ।
चडे जोम मेछां छतर, कड़े कड़े अति क्रुद्ध[4] ।। १२३

---

१. घरोळ । २ खगहट्ट । ३. जुड़े । ४. क्रूध ।

रूक – तलवार । रीठ – शस्त्र-ध्वनि । बरंगळ – टुकड़े । दीठ – दिखाई । किलंब – दानव । घिरौळ – ध्वंश कर । जैत – जीत । हिंगौळ – हिंगलाज देवी ।

१२१. दांणमां – दानवों को । विडारे – नष्ट किए । ध्राप – धपाया । ध्रौकारे – आवाज करते है । उवचरे – बोलते हैं । अंबारे – आकाश से । डोहे – मथे । सात्रव – शत्रु । पोंहतो – पहुंचा ।

१२२. थट्ट – समूह । विडंग – घोडे । सुभट्ट – योध्दा । नकौ – नही । अवियट्ट– तलवारे । दुपी – हाथी । आरोह – चढाई की । खळखट्ट – सहार । गरट्टह – पैल कर । दैतां – दैत्य । उहट्ट – उखाड़ कर, छिन्नविच्छिन्न कर । मरट्ट – मरोड़ । सुभट्ट – योद्धा ।

१२३. चांपड़े – युध्द क्षेत्र । मेछां छतर – दैत्यपति ।

अथ वचनका

तिण वेळा सभ ने निसभ रै कानै, आ अमगळ री वात कानै आई। वोहत सकोच सोच उर मे हुवौ। दिवाण किया। वडा वडा उमरावा रा मोहला लिया। त्या उमरावा रा वखाण। लोह री लाठ। चालता कोट। आवर चो धा। अनेक भारथ किया। भाति भाति रा लोह चाखिया नै चखाया। ईसा दुवाह। आण विराजमान हुवा। तिण विरिया री सोभा, किण सू कहणी आवै। तथापि, जाणे करि सझ्या भूल फूल रही होई। तिण माहे वादळा, भाति भाति रा निजर आवै। तिण भाति केइक तो गाहडमल झोखा खाई रह्या छै। केइक वाका पाघडा रा लोली दे रह्या छै। केइक डाकी जमदूत। भूखिया नाहर ज्यू[1] हूकार करनै रह्या छै। तिणा माहे सभा रो[2] सिणगार। भाग रो डळो[3]। मेछाधिपति सभ वोलियौ—गुमान रा भार सू भाजै। जाणै सघण वादळा माहे, गैहरो मेह गाजै। तठै कह्यो—हिमगिर ऊपरै चाळा री करणहार। कळा री लगावणहार, तिण रै धूवर लोचन जिसा भीच रो हेळा मात्र माहे प्रवाडो हाथ चढियो। कैहण सुणण[4] ज्यू वारता हुई। दाणवा री अजाद क्यू ना रही। इतरी वात करता माहे दाठीग दूठ प्राक्रमी विरद अणभग। गहिली रो वेहडो अनुज भाई निसभ वोलै। मन री वात खोलै। एक वार घणा सूरा

---

१ ज्यु। २ छभा रो। ३ भाग मोडळो। ४ सूण।

---

१२४ दिवाण किया – सभा बुलाई। मोहला – अभिवादन। आवर चो धा – आकाश तक पहुचन वाले। दुवाह – योद्धा। वादळा – बादल। गाहडमल – वीर। झोखा – मस्ती मे झूमना। लोली छै – सिर हिला रह है। भाग – भाग्य। डळो – पुज। भाजै – टूटता है। सघण – सघन। गाजै – गजन करता है। चाळा – झगडा। कळा – युद्ध। लगावणहार – प्रारभ करने वाली। हेळा मात्र – सहज ही मे। प्रवाडो चढियो – विजय प्राप्त की। अजाद – मर्यादा। दाठीग दूठ – महा पराक्रमी। विरद – विरुद। गहिली रो वेहडो – प्राणो की किंचित परवाह न करने वाला।

रा चाचरां री खाज मेटां। कण कण करां। धकचाळा[1] करि कांमणी भेटां। क्रीति उबारां। आगलां जाळंधर महाजोधार सारिखां रा वैर कळियां काढ़ां। भसमासुर रा विरोध मांहे इंद्रादिक देवता वाढ़ां। इतरा मांहे तोरण रा आखा। गुमांन रौ गाडौ। चवदै भवण मालिम। अगंजियां गंजण। देवां निरदळण रगत बीज बोलियौ—मूंछां ऊपर हाथ दे फेर कह्यौ, खार खंधार होय। सुरपति नैं उथाप राळां। ऐरापति सारीखा कुंजरां री घड़ां मोड़ां। सत्रां री जड़ उखेळां। दौखियां रै मोरां उपरि किरमाळां री झाट-झड़ उडावां। देवां दांणवां देखतां हियै[2] चढ़ाई पैलै पार ले जावां।

काळी बुरछियां रा[3] घमोड़ा पाड़ां। चौरंगणी फौजां विरोळां। हील पाड़ां। जाडा लोहां री रीठ[4] झाड़ां। सुरपतियां रा ग्रब गाळां। रांमाइण रा भोळा भांजां। इतरा मांहे फौजां रौ मौहरी। दळां रौ सिणगार। अतुळ पौरस धर चंडमुंड बोलिया—हंसागमण री हांम[5] पूरां। वडौ प्रम उबारां। दोखियां रा कांध भिरड़ां। एक वार घणां रा तन विहंड करां। अणियां रै मुंहडै बूथां री वड़ी वड़ी करां नै करावां, नै आगै पिण इसौ कहै छै—भारथ मांहे भिड़तां सूरां पूरां री आरबळि घटै नहीं। कायरां री वधै नहीं। तौ औ वडौ अवसांण लाधौ। सिर मौड़ बांधौ। नाळ, कवंण वडौ दूहौ कह्यौ छै—

रिण रचियां मा रोइ, रोऐ रिण छांडे गया।
इण घर तौ आगा लगै, मरणै मंगळ होइ[6] ॥

---

१. धकचाळ। २. हीयै। ३. 'रा' नही। ४. रीव। ५. हांस।
६. दोहे की अर्द्धाली इस प्रकार है—मरणै मंगळ होय, इण घर तौ आगा लगै।

चाचरां – सिर। खाज मेटां – पीटें, दंडित करे। धकचाळा – युद्ध। कळियां– युद्ध में। आखा – अक्षत। अगंजियां – अजेय। उथाप राळा – अपदस्थ करदे। दौखियां – दुश्मनों। मोरां – पीठ। किरमाळां – तलवारां। झाट-झड़ – प्रहार। हियै चढ़ाई – सीने से ढकेल कर। बुरछियां – बरछिये। घमोड़ा पाड़ां – जोर से प्रहार करे। ग्रब – गर्व। गाळां – समाप्त करें। भोळा भांजां – भुला दे। मौहरी – अगुवा। पौरस – पौरुष। हांम पूरां – इच्छा-पूर्ति करे। प्रम – पर्व। कांध – कंधे। भिरड़ां – भिड़ा दे। बूथां – मांस पिंड। वड़ी-वड़ी – मांस के टुकडे। आरबळि – आयु। अवसांण – अवसर। लाधौ – मिला। मौड़ – सेहरा। मा – मत।

तो घणा जाडा पीठाण माहे हैवरा नै ताता करि खुरी करावा। रुद्र-माळ रचावा। पहाडा नै जळ चाढा। इतरी माभळी नै सभ नै निसभ वेऊ दावाई[1] भाई बोलिया—उवाह उवाह। अणी रा वींद[2]। रिण मे बावळा। बाकी मूछाळा। कळिया वैरा रा वाहरू। दळा री ढाल। अमरपति रा साल। भुजा रा भामणा लीजै। अखियात[3] कीजै। तौ चड मड राजि[4] भारथ नै चढीजै। कळहागारी रा हाथ देखीजै, दिखाइजै। तौ अगापुर[5] वसीजै। चद लग नामौ कीजै। १२४ ॥

छद दूहा

करि मसिलत प्रणाम करि, किरवर तोल करग्ग[6]।
करण कळह देवा कळण, वहसे मेछ वरग्ग[7] ॥ १२५
अव बीजौ सोभा पली, किव सासी किरमाळ।
साम धरम साभण सरस, रचा सवळ रिणताळ ॥ १२६
दैत दूवाहा लाख दस, किया विदा धुर कस्स[8]।
वापूकार पुतारत्या[9], हळ हळ थई हमस्स[10] ॥ १२७

---

१ 'दावाई' नही। २ अणीया वीरद। ३ अखीयात। ४ 'राजि' नही। ५ अगापूर। ६ करग। ७ वरग। ८ कस। ९ पुतारना। १० हमस।

---

१२४ पीठाण – युद्ध। हैवरा – घोडे। ताता – चचल। खुरी करावां – युद्ध के लिए तत्पर। दावाई – बराबरी वाले। अणी रा वींद – सेना के दूल्हे। रिण – युद्ध। बावळा – पागल। वैरा रा वाहरू – वैर लेने को सदैव तत्पर। अमरपति – इन्द्र। साल – शल्य। भांमणां – बलैया। अखियात – प्रसिद्धि। चद लग नामौ – चन्द्रलोक तक यश फैला दें।

१२५ मसिलत – गुप्त मन्त्रणा। किरवर – तलवार। करग्ग – हाथ। कळण – नाश करने के लिए। मेछ – दत्य।

१२६ साभण – सिद्ध करने।

१२७ दूवाहा – द्वि भुज, विकट वीर। पत्यारतां – ललकारते। थई – हुई।

घुरै त्रंबाळां घोर सुर, निधड़क धरे निसांण[1] ।
मेवट-कोट महाबळी, चंड मुंड करे प्रयांण ।। १२८

छंद नाराच

चढ़े प्रचंड चंड मुंड खंड खंड खूंदता ।
कसीस त्रीस टंक बांण भग झालि कूंदता ।।
जळंत आप रोस जे कठोर काजि काहळा ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

बिहांमणां[2] अजांन बांह चूंच भूंच छाकिया[3] ।
औघाट रूप हेक भांति आप जौम याकिया[4] ।।
भखै सहूं भुजाळ यूं बणे जवांन बावळा ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

मंडे पिलांण कोडियं केकांण[5] मौल ऊंचरा[6] ।
करे सनाह कंठळी घैंसार सैन घूमरां ।।
चढ़ै कड़ै अणी चढ़ै विवांण ढूक वादळां ।
करंति[7] देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

बंगाळ छक्कडाळ[8] वीर आविया[9] करै अणी ।
रचंत राड़ि रौद रूप धूधड़ै थकां धणी ।।
ध्रमंक भौम मेर धूं समंद सात सळांसळां ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

---

१. नीसांण । २. बीहांमणा । ३. छाकीया । ४. याकीया । ५. केकंण । ६. उचरा । ७. करिंति । ८. छकड़ाळ । ९. आवीया ।

---

१२८. घुरं – वजे । त्रंबाळां – नक्कारे । मेवट-कोट – मरोड़ तथा गर्व के समूह ।
१२९. कसीस – खेंची । टक – धनुष । काहळा – भयावने । डाकरे – वीर घोष । चूंच-भूच – मदोन्मत्त । पिलांण – जीन, काठी । केकांण – घोड़े । सनाह – कवचादि । घैंसार – सैन्य समूह, मार्ग । छक्कडाळ – कवचधारी । धूधड़ै – दृढ निश्चय । धूं – मस्तक, ध्रुव । सळांसळां – चलायमान हुए ।

अनेक वीर हाक हाक घेग खाग ओरता ।
भूखै मयद सिंघळी ओग्राज जागि भौरता ॥
डोहे उदधि डाक डाक कपि सेन आकळा ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळा डळा ॥

देखे सगत्ति आवरत्ति[1] अऊब भत्ति[2] दोखिय ।
तुरत्त[3] हथ्थ[4] साहती तिसूळ तोल तोखिय ॥
चौरग खेल चड मुड मडियो[5] महाबळा ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळा डळा ॥

घडा घडा कडा घमोड बोटिजै वडा वडा ।
गडा गडा गजत गौम हूकळै हडा हडा ॥
पडा पडा पडत पीठ रीठ बाज रूकळा ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळा डळा ॥

झपट्ट खाग झाटके[6] प्रगट्ट खेत पाधरै ।
लोटै कटै घटै खळा[7] डीगाळ भूझ दाधरै ॥
करै निरत्त[8] लोथ लोथ लोथ लोथ काठळा ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळा डळा ॥

विछूट बाण आसमाण भाण झात वध ए ।
हुबे[9] जत्राण थहै राण साधेणा सू सध ए ॥
केवाण पाण काळिका साधेण भाजि साकळा ।
करति देव मेछ कोटि डाकरे खळा डळा ॥

---

१ आविरत । २ भति । ३. तुरत । ४ हथ । ५ मडीय । ६ जाट्टके । ७ लखा । ८ निरत । ९ हूवे ।

घग – प्रचण्ड वीर । ओरता – चलाते । मयद – सिंह । सिंघळी – श्रेष्ठ । भोरता – प्रात काल । डोहे – मथन करे । डाक डाक – कूद कूद कर । तोखिय– सम्हाल कर । बोटिजै – काट कर । गौम – आकाश । रीठ – प्रहार । रुकळा – तलवारें । झाटके – प्रहार करे । खेत पाधरै – खुले मैदान मे । डीगाळ – दीघकाय । काठळा – किनारे । साधेण – सधि स्थल ।

वळां वळां झड़ै बंगाळ श्रौण खाळ सीलता ।
गळां भरंत गुद्र[1] गांम राळि उड़ी मालिता ।।
डळा डळा कियां दबोड़ धरा धाड़ धूंधळा[2] ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

घड़ी घड़ी घमौड़ घोड़ वोकड़ा बड़ी बड़ी ।
झड़ी लगै छड़ाळ झीक फेफरा फड़ी फड़ी ।।
फुरोळि फाड़ि डाडरा नहाळ भखंती गळां ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।।

गणंक नाळि गोळियं[3] फणंग धूजि फंगटां ।
सणंक सार ऊछजे[4] भणंक खेल सोगटां ।।
चणंक चंड मंड चाढ़ि वाढ़ि काढ़ि बुंगळा ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरें खळां डळां ।।

पछाड़ि कौड़ि पाखती धपाड़ धाड़ धांमळी ।
मजाड़ि संक मुंगला कहाड़ि[5] क्रीत कंमळी ।।
वजाड़ि जैत जैत अब दुंदुंभी वळां बळां ।
करंति देव मेछ कोटि डाकरे खळां डळां ।। १२९

छंद कवित्त जाति कुंडळियौ

अखै भ्रित संभ अग्गळी[6], कूके सबद[7] कराळ ।
चौरंग जूटे चंड मंड, भळिया[8] जोति भुजाळ ।।

---

१. गूद्र । २. धूंवळा ३. गोळीयं । ४. उच्छळे । ५. काहाड़ि ।
६. अगळी । ७. सरबद । ८. भळीया ।

बगाळ – दैत्य । सीलतां – नदी । गळां – मांस पिण्ड । बोकड़ा – वृक्क । छड़ाळ – तलवार । झीक – अनवरत चोट । नाळि – तोपे । फणग – शेप नाग । सार – तलवार । ऊछजे – तेजी से उठती है । चणंक – रोमांचित होकर । धपाड़ – तृप्त कर । संक – शंका, भय । वळा बळां – चारों ओर ।

१३०. अग्गळी – आगे, सन्मुख । कूके – चिल्लाहट कर, पुकार के । कराळ – विकराल । भळिया – चमक वाले । भुजाळ – योद्दा ।

भळिया जोति भुजाळ, करे गजगाह[1] केवाणा ।
आवट कूट अयार, टहे असुराण ढाकाणा ।।
मलपै वैस विवाण, वरे अछरा वरमाळा ।
पसरे जस दधि पार, साम ध्रामका सचाळा[2] ।।
राखसा मील भगी रवन, सुदर रिण[3] जीती सखै ।
डिगोयळ भाजि आवे दुरस, डम भ्रित मभ आगळि अखै ।। १३०

छद कवित्त

फूलधार पीजरे, काढि कीजरा कमाळी ।
चड मड चापडे, लिया मारे रुद्राळी[4] ।।
वरखा पौहिप विवाण, करे सुर हरख उपज्जिय[5] ।
जैत जैत चामड, नाम लधत गरज्जिय ।।
सुरराज भीर चढती भई, नाटारभ नव नव करै ।
अणदीठ चकर नारी तणा, वूहा किंकर उवचरै ।। १३१

इति चड मड वध

सुणे सभ मन सौच, खूट राखस सळ खट्टा[6] ।
इचरज[7] ऐ अखियात[8] कीध कामण[9] विछट्टा[10] ।।

---

१ गजगाहा । २ साम ध्राम कोम स चाळा । ३ रीण । ४ रुधराळी । ५ उपजीय । ६ खळ खटा । ७ ईचरज । ८ अखीयात । ९ कामणी । १० विछटा ।

गजगाह – युध्द । आवट कूट – सहार । अयार – दुश्मन । ढाकाणां – रक्षा करने वाले । साम – स्वामी । ध्रामका – धर्म मे । सचाळा – सच्चे । भ्रित – भत्य ।

१३१ फूल धार – तलवार की धार । चापडे – युध्द मे । भीर – मदद । नाटारभ– युध्द मेलि । अणदीठ – अदृष्ट । चकर – चक्र । वूहा – चने । उवचरै – कहते है ।

१३२ इचरज – आश्चय । अखियात – विख्यात । कामण – कामिनी । विछट्टा – विद्रोह ।

जिकै[1] जोध जमदूत[2], भूत कारणां भडांगां[3]।
रासा भड़ रंढ़ाळ, लड़े धड़ झड़े रे खगां ॥
सांफळा मिळे साझे तुरत, फुरत करे दळ फंकिया[4]।
मेछांण बंस तपस्या घटी, ढहसी जे वळि ढूकिया ॥ १३२

तांम भणै रगतेस, ऊसस लागौ[5] आधन्तर।
दळ किमाड़ दळ फाड़, सुणौ नृप वैण सरोतर ॥
हीलोहळ नद हेक, टळत कीं कजी कहीजै।
अंबर[6] मझि[7] नाखित्र, झड़े कुंण ओछ भणीजै ॥
किलबांण छात्र कारण कवण, मौ ऊभां[8] चिंता करौ।
भारथ अबळ हूंतां[9] भिड़ण, सनमुख सूर न संचरौ[10] ॥ १३३

तांम संभ ऊफणै[11], कहै इक बात करारी।
श्राप इंद सांसहै, दीध गोतम हित नारी ॥
धूवर कर सिर[12] धरे, भसम हुवौ उमिया भति।
रांवण कुळ संधार, थयौ जांनकी संगति ॥
मुरदैत महाबळ साझोया, रूप ईग्यारस परवरे।
रगतेस तिका ऐहज त्रिया[13], असुरां गंजण अवतरे ॥ १३४

---

१. जीके। २. जोमदूत। ३. भड़ीगां। ४. फकीया। ५. लगौ। ६. आंबर। ७. मांभि। ८. उभां। ९. हुंतां। १०. संचरै। ११ उफणै। १२. सीर। १३. त्रोया।

रंढ़ाळ – हठीले, योध्दा। सांफळा – युध्द में। बंस – वंश। ढहसी – समाप्त होगे।

१३३ ऊसस – जोश में आकर। आधन्तर – आकाश के। हीलोहळ – समुद्र की लहर। अंबर – आकाश। नाखित्र – नक्षत्र। किलबांण – दैत्य। अबळहूंतां – अबला से, नारी से।

१३४. तांम – क्रोधातुर हो, तब। सांसहै – सहन कर। कर – हाथ। थयौ – हुआ। साझोया – मारा गया। परवरे – मस्त हुए, फैले।

भणै रगत वड भीच, गरव धारे गढ गाहण।
भडा लाज मो भुजा, दळा पाखर[1] दळ ढाहण।।
रिण दूल्हौ रिम राह, इद थपू[2] उथपू[3]।
अकह कहणी करे, अवस पदमिण तू[4] अपू[5]।।
त्रिभाग सेल अहीया तुरस, वाहर असुरा कारणा।
असपति प्रणाम करि आफळे, धवळ विढण धू धारणा।। १३५

छंद दूहा

दिया हुकम सीके फजर, तेडे पाडव त्यार।
वारण साझौ महाबळी, सावत है मिणगार।। १३६
दिया हुकम सिरपाव दे, किसणा[6] धणी सकज्ज[7]।
दाखे तिम मुख ऐ वयण, मो लज्जा[8] तो भुज्ज[9]।। १३७
कह कह गह गह किलकिले, थह थह वह वह थाट[10]।
चह चह करता चचळा, छूंडे गज थज घाट।। १३८

छंद त्रोटक

मिणगार पटाझर फील सजे। गरजत अैरापति माण गजे।।
दळथभ दळा गिळ रूप दळा। सजि ऊच पहाड तना सवळा।।

---

१ खाखर। २ थपु। ३ उथपु। ४ तुभ। ५ अप्पु। ६ किसना। ७ सकज। ८ जल्पा। ९ भुज। १० थाट्ट।

---

१३५ भींच – योद्धा। गाहण – नष्ट करने का। ढाहण – गिराने। थपू – स्थापित करू। अपू – अर्पित करू, सुपुर्द करू। तुरस – ढाल। वाहर – रक्षार्थ पीछा करके। आफळे – बेचैन होकर। धू धारणा – दृढ निश्चय के साथ।

१३६ सीके – विदा। तेडे – बुलवा कर। पाडव – चरवादार, सईस। वारण – हाथी।

१३७ किसणां धणी – दैत्या के स्वामी। वयण – वचन।

१३८ थाट – समूह। चचळा – चचल। थज – घोडे।

१३९ पटाझर फील – मद बहते हाथी। अैरापति – ऐरावत पति, इन्द्र।

फबि तेल सिंदूर तिलक्क[1] फटा । भद्रजात भंयकर स्यांम भटा ।।
निलवट्ट किरीट झिलंत निलै । चपळा घण मंझ चमंक[2] चलै ।।
मदवास[3] कपोळ भमै भंमरा । सद खीझ धैंधीगर धैं समरा ।।
तथ दांत ऊभै छिब ऐह तके । जळधार मधां बग पंत जिके ।।
जरबाफ जरक्कस झूल झिले । खित डूंगर ऊपर वाग खुले ।।
जुत नग्ग अंबाड़िय हीर जड़ी । नभ नाखित्र माळ सौभंत नड़ी ।।
गह चामर सेत कपोळ गजां । सुरमेर हुंता गंगनीर सजां ।।
ढळ पाखर भाखर द्रंग ढ़हा । किरमाळ सूंडां कस जूध कहा ।।
सुज पूठि नेजा फररंत सही । गिर सीस तरोवर ऊगि[4] गही ।।
मिळ द्वादस मास मैमंत मदा । नित जांणि पहाड़ खळक्क[5] नदां ।।
छुट पास चरख्खि[6] उपट्ट छिलै । परजंत्र धूंवारव देखि पिलै ।।
भिड़ ढाहि सरीख जुड़ै भिरड़ै । अणपल्ल अटल्ल गढ़ां उरड़ै ।।
मकना मेकदंत घटा अमळा । किळळंत घूमंत रिणां विकळा ।।
गति धीर घंटाळ पटाळ गिणं । वप[7] वींद अणी क्रम ढाल वणं ।।
मदमत्त दुरत्त प्रभत्त मता । धधकार महावत धत्त धता ।।
त्रिणलोक कतोहळ देखि तिसा । अदभूत पराक्रम घोम इसा ।।
घड़ि कांठळि भाद्रव जांणि घटा । सझि आंण हजूर किया सुघटा ।।

---

१. तिलक । २. चमक्क । ३. मदमास । ४. उगि । ५. खळक । ६. चरखि । ७ वय ।

किरीट – शिरोभूषण, मुकट । **निलै** – ललाट पर । **घण** – मेघ । **धैंधीगर** – हाथी । **खित** – पृथ्वी । **डूगर** – पहाड़ । **नग्ग** – नगीनें । **नड़ी** – बंधी या जडी हुई । **सुरमेर** – सुमेरु गिरि । **किरमाळ** – तलवार । **तरोवर** – तरु, वृक्ष । **मैंमंत मंदां** – मद में उन्मत्त । **चरख्खि** – हाथियों को काबू में करने का चर्खी नाम का यत्र । **उपट्ट** – ऊपर, उछलती है । **उरड़ै** – साहस करे । **मकना**– मदमस्त । **मेकदंत** – एक दाँत वाले हाथी । **रिणा** – रण में । **घंटाळ** – घंटा वाले, समूहबध्द । **पटाळ** – पट्टा वाले । **वप** – शरीर । **अणी** – सेना । **कतोहळ** – कौतुक । **कांठळि** – घन-घटा ।

अथ घोड़ां रा वर्णण

सझि अग उत्तग ग्रहास समा । रवि वाहण रेवत सोह रमा ॥
लोह वस कूदत मिरघ लजै । धर डाण ध्रमक पयाळ धुजै ॥
भर माकड फाळ भिदाळ भिडै । तळधारि त्रिकुट्टित घात घडै ॥
झणकार निरत्ति अनत[1] झिलै । खुरताळ धराळ खयग खिलै ॥
सिहगोस जिसा वेहु[2] कान सही । पग पीड पघा सुद्रिढ पही ॥
जुडि तामस जाडाई ह्लाड जिया । उलटत कटोरा चरख[3] इया ॥
कध कूकड[4] वक मुहा कवळा । उछळत कुळाछि जिके अवळा ॥
अवलक्ख अैराकी चखा अजणी । राग दावत नाचत मोररणी ॥
डहि आठुआ ढाहत कोट डकै । लोह छकिक लडै रिण भीच लखै ॥
कछी घाटी कमैत करति कळा । चलि वीस घणी गमतै चचळा ॥
राहदार केकाण विवाण रिधू । सुज पीयत अजळि नीर सुधू ॥
सोनेरिय[5] पचकल्याण सुरी । तुरकी महु वाज सुरग तुरी ॥
धुप[6] पास खेवत चोफेर धणी । लूण ताम उवारत चाल वणी ॥
रहवाळ खडा है कीध रहे । टगटग्गी[7] लगो मुरलोक तहे ॥

---

१ अनित्त । २ वेउ । ३ चख । ४ कुकड । ५ सोनेरीय । ६ धूप । ७ टगटग्ग ।

ग्रहास – घोडे । समा – समान, बराबरी के । रेवत – घोडे । लोह वस – लगाम के सकेत पर । मिरध – मृग । डाण – चौकडी । पयाळ – पाताल । माकड – बन्दर । फाळ – छलाग । निरत्ति – नृत्य । खयग – खिग, घोडा । वेहु – दोना । पही – पखी, पैर । चख्ख – चक्षु, नेत्र । कूकड – मुर्गे । वक – टेढे । कवळा – सुन्दर, कोमल । कुळाछि – कुलाच । अवळा – विपरीत गति से । अवलक्ख – रग विशेष के घोडे । अराकी – ईराक देश मे जन्मे हुए घोडे । राग – रान । मोररणी – मयूरी । डकै – कूद कर पार जाए । लोह छकिक – शस्त्रा के प्रहारो से घायल हुए । वीस – चाल विशेष । केकाण – घोडे । पचकल्याण – रग विशेष के घोडे । तुरी – घोडे । धुप – धूप । खेवत – करत है । धणी – स्वामी । उवारत – योछावर करते है । रहवाळ – घोडो की चाल विशेष । टगटग्गी – टकटकी । मुरलोक – तीना लोका मे ।

अथ असुरां रा बखांण

असुरांण सभै मुख आखि अला । ढल ढांहण गाहण फौज ढला ॥
छकड़ाळ कंधाळ मदां छिळता । भुजि वासिग कंदळ जे भिळता ॥
त्रिण मूकत झाळ उठै तरसै । रिण मज्झि[1] पतंग पड़ै हरसै ॥
गज भंज गहै तिन तीस गजा । ध्रमराज तणी भिड़ पाड़ि धजा ॥
विकराळ अभख्ख भखी विकळा । सुग[2] जीति अनीत मंडै सबळा ॥
व्रन लाल वेताळ सरूप वरै । अंग आगि व्रजाग धुखंत अरै ॥
धड़ कुंभ निवांण कि भौण दुड़ै । उर पाट कपाट सु प्रौळ अड़ै ॥
जुंग जंघ तरोवर मूळ जिसा । अणभंग उत्तंगई सिला[3] इसा ॥
उरजस्स[4] कबांण जंजीर अखै । मसळै कर सौव्रन प्रांण मुखै ॥
भणि भीम अरज्जन सींग भड़ां । तरसींग नमाड़त मारि तड़ां ॥
अणचूक सबद्द-वेधि[5] असहा । वक-बांद वधारण सैं वसहा ॥
धरि टोप झिगल्ल हाथाळ धड़े । जड़ि जौसण पाखर खैंग जड़ै ॥
विड रूप भयंकर कुंभ बिया[6] । हुइ कायर देखि हैंकंप हिया[7] ॥
घट भंगन बीहै घात घड़ै । चमराळ इसां[8] असवार चडै[9] ॥१३९

छंद दूहा

चढ़ौ चढ़ौ वेगा चढ़ौ, खड़ौ खड़ौ खंधार ।
लड़ौ लड़ौ पड़ियाळगां[10], जुड़ौ जुड़ौ जोधार ॥ १४०

---

१. मांझि । २. सूग । ३. सीला । ४. उरजस । ५. सबदवेधी । ६. बीया । ७. हीया । ८. ईसा । ९. चढ़ै । १०. पड़ीयाळगी ।

आखि – कह कर । अला – अल्लाह । ढल – वीर । ढला – ढाले धारण किए, वीर । छकड़ाळ – कवच । वासिग – वासुकि । कंदळ – समूह, संहार । झाळ – अग्नि । मज्झि – में । सुग – स्वर्ग । व्रजाग – वज्राग्नि । धुखत – जलती । कुंभ – घट । निवांण – जलाशय । भौण – सूर्य । दुड़ै – छिपे । जुग – युगल । मूळ – जड़ । तरसींग – जबरदस्त । तड़ां – वांस के दण्डकों से, शाखाओ के । असहा – ऐसे । वधारण – बढाने वाले । झिगल्ल – कवच । जौसण – कवच विशेष । खैंग – घोड़े । विड रूप – विद्रूप, भयावने । कुंभ-बिया – दूसरे ही कुम्भकर्ण हों । हिया – हृदय । बीहै – डरते । चमराळ – घोड़ों । १४०. वेगा – जल्दी । खंधार – कंधारी घोड़े । पड़ियाळगां – तलवारो से ।

जूथ जूथ[1] आगळि जई, कही नकीब सुकथ्थ ।
उनथ्थ नथ्थ[2] अचागळा, भिड जीपौ भारथ्थ ।। १४१

तुरही भेर नफेरि अहि, रुडि रिणतूर विहद्द ।
वाजि जुझाऊ वीर रस, सीधू वाज[3] सवद्द ।। १४२

चणणे उभ थीय चिहेर[4], ठाहर[5] नीवू ठाण ।
जौसण फटै जोस मे, उतवग अडि असमाण ।। १४३

रगतासुर आगै रवद, भेळा होय भुजाळ ।
सामद्र माहे मापरत, नदिया भिळै निराळ ।। १४४

असुरा नासा पुट सबद, वाजै विनै निसाण ।
आधी किहा उनाळ री, छूटी सबळै पाण ।। १४५

छद दूहा पखा

वे वे कडि वाणास, वधे मेछ वहादर ।
ऐराकी भिडजा अवल, आरोहै अनयास ।। १४६

गाहड मल गुरजाह, कर साही सोहै कामरा ।
आफळना[6] झिलता असुर, भाजण गढ भुरजाह[7] ।। १४७

---

१ जुत्य जुत्य । २ उनथ नथ । ३ ताम । ४ चिहुर । ५ वाहर ।
६ आफळाता । ७ भुरजा ।

---

१४१ जूथ जूथ – प्रत्यक समूह के । उनथ्थ नथ्थ – वधन मे न आने वालो को वधन मे लेने वाले । अचागळा – वीर, अडिग । जीपौ – जीतो ।

१४२ अहि – वजी । रुडि – वजे । जूझाऊ – युद्ध के । सींधू – सिंधु राग ।

१४३ चिहेर – केश । जौसण – जिरहवख्तर । उतवग – मस्तक ।

१४४ रवद – दैत्य । सापरत – प्रत्यक्ष ।

१४५ विनै – दोनो । उनाळ री – ग्रीष्मकाल की । पांण – बल से ।

१४६ वे वे – दो दो । कडि – कमर । वाणास – तलवार । मेछ – दैत्य । भिडजां – घोडे । आरोहै – चढे, सवार हुए ।

१४७ गाहडमल – वीर । गुरजाह – गुर्ज शस्त्र । आफळता – अत्यधिक प्रयत्न करते हुए ।

सवामणी हथ सेल, तौलै तांम[1] कतौंहळी ।
जमदढ़ जड़ि कड़ियां जरद, खहिया[2] करिवा खेल ।। १४८
तरगस भरिया तीर, दोय दोय[3] बांधे दांणवां ।
मद वहता मतवाळ ज्यूं[4], मिळिया भूरा मीर ।। १४९
रूक ग्रलीबंध राळ, बड़फर कोट बराबरी ।
गिळ बिळ[5] करता चढ़ि गजां, इंद्रां दियण[6] उथाळ ।। १५०
ग्रसली टांक ग्रढ़ार, चिलै कबांणां चौपटै ।
ग्राक रखै श्रमणां ग्रमित, ग्रणभंग थिय[7] ग्रसवार ।। १५१

छंद झूलण

चढ़ि रगतासुर चंचळां, दधि पड़ै दहल्ला ।
खळ भळ लग्गी[8] खेचरां, चळ चळे ग्रचल्ळां ।।
ग्राठ ग्रचळ ग्राकंपिया, दिस कुंजर डुल्ला ।
धड़ धड़ सुरपति धूजिया, हरि ग्रासण हल्ला ।।
व्रहमा चूके वेद सूं, भणतां गुण भुल्लां ।
दस ही द्रिगपाळां डरे, हठियाळ[9] हमंल्ला ।।
तेजंबर उर त्रापिया, ग्रसुरांण उथल्ला ।
चित ग्रैहराव चमंकिया, किस ऊपर किल्ला ।।

---

१. कांम । २. खहीया । ३. दुय दुय । ४. ज्युं । ५. गिळबळि । ६. दीयण । ७. थीय । ८. लगी । ९. हठीयाळ ।

---

१४८. **सवामणी** – सवा मन वजन की । **जमदढ़** – तलवार, कंटार । **जरद** – कवच ।
१४९. **दांणवां** – दानव । **भूरा मीर** – वलवान उमराव ।
१५०. **रूक** – तलवार । **ग्रलीबंध** – ढाल बांधने का वधन । **राळ** – डाल कर । **बड़फर** – ढाल । **गिळ बिळ** – ग्रस्पष्ट वचन, कोलाहल ।
१५१. **टांक ग्रढ़ार** – ग्रठारह टंक वजन का, धनुप । **चिलै** – धनुप की डोरी । **थिय** – हुए ।
१५२. **चचळां** – घोड़ो पर । **दधि** – समुद्र । **खेचरां** – युद्ध-देवियां । **ग्रचल्लां** – ग्रचल, पहाड़ । **दिस कुंजर** – दिशाग्रो के हाथी । **डुल्ला** – डोलने लगे । **हरि** – विष्णु । **हल्ला** – हिल उठा । **भुल्लां** – भूल गया । **हठियाळ** – हठीले, दैत्य । **त्रापिया** – डर गए ।

घुर टामक स घोर घण, थिर चर थर सल्ला ।
खुरताळा धर खूदळे, ढुळता गज ढल्ला ।।
प्रळौ प्रगट्टे की प्रथी, चूर द्रग अचल्ला ।
रूठा किण कारण रवद, ले सेन अलल्ला ।।
हैकपे देवा हूवा, अब छूटे गल्ला ।
सर तर गिर कीजे[1] समा, छिव छूड छयल्ला ।।
उलट पुलट किरता ईळा, वहि देत वहिल्ला ।
पासरणा पारभिया, सामि काज सहिल्ला ।।
हुई हलकारा वीर हक, आखे[2] मुख अल्ला ।। १५२

छंद दोहा

छडीला[3] दीसै छकर, जोगिण रिण खीजाई ।
भड माझी रगतेस भड, वकतौ अव समाई ।। १५३

छंद जाति रोमकद

करि कोप अटोप अलोक दिनकर[4], वोम उडे रज छाय वळा ।
घसमस्स[5] हमस्स[6] अबागळ धीव, तडाकरिया मग भाग डळा ।।
रसलूध रोद्राइण घोर मचे रिण, कोर वर्ण चढि सेन कडै ।
खळ खड विहड प्रचड भडै खग, भारथि चामड दैत भिडै ।।

---

१ किजे । २ आखै । ३ छडीया । ४ दितकर । ५ धममम । ६ हमस ।

घुर टामक – नक्कारे वज कर । द्रग – दुग । अब – गर्व । सर – सरोवर । तर – वृक्ष । गिर – पहाड । छयल्ला – श्रेष्ठ, छैल । ईळा – पृथ्वी । वहिल्ला – उतावले । पासरणा – फैलाव किया । आखे – कहते है ।

१५३ छडीला – जोशीले । छकर – मस्त हुए ।

१५४ अटोप – घिरा हुआ । दिनकर – सूय । वोम – आकाश । रज – धूलि समूह । वळा – चारो ओर । घसमस – घोडो की टापो की ध्वनि । धीव – ध्वनि । रसलूध – रसलुब्ध । रोद्राइण – दैत्य । कडै – निकट, पीछे । विहड – नष्ट होकर । चामड – चामुण्डा, देवी । दैत – दैत्य ।

खग भ्काट निराट घटैं खळि खोहिण, ऊकट काट है थाट उड़ै ।
दहवाट[1] दुघाट दबोट दुगंम्मइ, दाढ़ दढ़ाळ नहाळ दुड़ै ।।
अबियाट[2] पछांट उसांट असग्गांइ[3], धोमाजागर धुइ धड़ै ।
खळ खंड विहंड प्रचंड भ्कड़ै खग, भारथि चामंड दैत भिड़ै ।।
घाघरट्ट घरट्ट घिरोळ धाराळिय[4], सेल घमौड़ निभ्कौड़ सिरैं ।
कड़ियाळ[5] भ्कगल्ल उधेड़ किरम्मळ, धीब[6] सत्रां घड़ मौड़ घिरै ।।
वरसै किर भाद्रव धार वळावळ, पावस रुद्र प्रनाळ पड़ै ।
खळ खंड विहंड प्रचंड भ्कड़ै खग, भारथि चामंड दैत भिड़ै ।।
मछराळ आफाळ[7] चढ़ै अणियां[8] मुख, वीफर मांडि भ्कड़ाळ वटां ।
पड़ताळ धबुक्क[9] घड़ां बिच पाकड़ि, जीह बकै मारि मारि जुटां ।।
दियै रीठ अत्रीठ[10] पडंत दड़ा-दड़, घेर गडूयळ दैत गुड़ै ।
खळ खंड विहंड प्रचंड भ्कड़ै खग, भारथि चामंड दैत भिड़ै ।।
पड़ि लोथ घड़ां बहेड़ां भड पांडर, कोपर कंध किरक्क कितां ।
भुवडंड अखंड कड़ां-जुड़ि भारथि, फाड़ि उबाड़ि सनाढ़ि फतां ।।
संभ चाडि उपाड़ि खयंग ठेले[11] सक, जंग पतंग सा ऊडि पड़ै ।
खळ खंड बिहंड प्रचंड भ्कड़ै खग, भारथि चांमड दैत भिड़ै ।।

---

१. दैहवाट । २. अबीयाट । ३. अलगांई । ४. धाराळीय । ५. कड़ीयाळ । ६. धीय । ७. अफाळ । ८. अणीयां । ९. धबुक । १०. अत्रीछ । ११. छेले ।

खग भ्काट – तलवारो की बौछारें । **खोहिण** – सेना । **ऊकट** – आगे बढ़कर । **है थाट** – अश्व सेना । **दुड़े** – छिपे । **अबियाट** – तलवार । **पछांट** – प्रहार कर । **असग्गांइ** – वैरियों पर । **धोमा जागर** – विकट युद्ध । **धुम्र** – ज्वाला । **घाघरट्ट** – समूह, युद्ध । **घिरोळ** – चारो ओर से घेर कर । **धाराळिय** – तलवारों से । **कड़ियाळ** – कवच । **भ्कगल्ल** – कवच । **किरम्मळ** – तलवार । **धीब** – घुसा कर । **वळावळ** – चारो ओर, बल पूर्वक । **मछराळ** – मात्सर्य वाले । **आफाळ** – व्यग्रता से । **अणियां** – सेनाओ । **वीफर** – क्रोधान्वित । **रीठ** – शस्त्रो की बौछार । **अत्रीठ** – तेजी से, भयकर । **गडूयळ** – कुलांच । **पांडर** – प्रचण्डकाय, हाथी । **कोपर** – कोहनी । **कध** – कधे । **किरक्क** – टुकड़े होकर, हड्डी । **कड़ां-जुड़ि** – सुसज्जित होकर । **उबाड़ि** – उधेड़ कर । **सनाढ़ि** – योद्धा । **खयंग** – घोड़े ।

करडक्क[1] वडक्क[2] हाडा सध कुपिल, गुद्र अत्रावळि काढि गळा।
नवतेरही खेल मडे तन नीमज, जोड भुजा धस चाढि जळा॥
भिरडै धड कध मरौड कदाभति, झूपट नाखित्र जाण झडै।
खळ खड विहड प्रचड झडै खग, भारथि चामड दैत भिडै॥
हलकार पुतार जुवाण वीरा हक, सारि अगार धुखै सरिसा।
मच घोर अधार गिरा सिर माझळ[3], आतस काळ अकाळ इसा॥
रगतासुर सीस अरस्स[4] अडै, रति[5] वुद हजार उठत विडै।
खळ खड विहड प्रचड झडै खग, भारथि चामड दैत भिडै॥
पडि पीठ धडाधड टूक पहाडाइ, खाग खडाखड वीज खीवै[6]।
धुक ऊघडि[7] आहुड सेन लुटै धर, श्रौण दडाड तडाड श्रवै॥
किळवाण कडाकडि भाजि किरम्मर[8], घार मुडै नथि मुखि मुडै[9]।
खळ खड विहड प्रचड झडै खग, भारथि चामड दैत भिडै॥
दळ तडळ तडळ कीध दमगळ, चोटडियाळ[10] थई चहुती।
धड नाचि छुटै रत छीछ धरधर[11], कुदि भ्रुकट्टि उलट्टि[12] कती॥
हथमथ्थ[13] हुई त्रिपुराइ रिपाहण, पीजरिया नथि पार पडै।
खळ खड विहड प्रचड झडै खग, भारथि चामड दैत भिडै॥ १५४

---

१ करडक। २ वडक। ३ माडळ। ४ अरस। ५ रवि ६ खीवै। ७ उघडी। ८ किरमर। ६ मुपै। १० चोटीयाळ। ११ धराधर। १२ उलटि। १३ हथमथ।

करडक्क – कडड की ध्वनि। वडक्क – टूट कर। हाडा सध – हड्डियो के जोड। गळा – मास। जळां – कान्ति। भिरड – मिला कर। झूपट – झपट कर, टक्कर खाकर। पुतार – जोश दिला कर। सारि – तलवार। धुखै – धधकते हुए। आतसकाळ – अग्नि-प्रलय। अरस्स – आकाश। विडै – समूह। टूक – शिखर। आहुड – भिड कर। दडाड – दडादड धारा। किलवाण – दैत्य। किरम्मर – तलवार। तडळ तडळ – टुकडे टुकडे। दमगळ – युद्ध। चोटडियाळ – देवी। रत छीछ – रक्त की पिचकारी। हथमथ्थ – गुत्थम गुत्थ। पीजरिया – मारे नही जाते। नथि – नही।

छंद कवित्त

झटकां[1] बोह झूंडिया[2], अजुं नह केम खपै अरि ।
आळोचे ईसरी, भिड़त आरांण भंयकरि ।।
आप अंग आवरे, नवै दुरगा तिम नीसर ।
भुजां हुंती भुज वीस, वदन त्रिण वणै वीरवर ।।
आवध वीस ग्रहियां[3] अडग, मारण असुरां मारकां ।
सझि फौज सगति करतां[4] सफर, पिड़ भुइ जीपण पारकां ।। १५५

प्रेत सीस चामंड, महिख चढ़ी वाराही ।
इंद्राणी गज चढ़ी, गरड़[5] विसन विसमोही ।।
ब्रहमांणी हंस चढ़ै, मोर कौमारी मंडे ।
नारसंघी[6] सिंघ सिरै, नर वाहनी नर चढ़े ।।
पदमावती कमळ ऊपर[7] वणै, नामि जिसा सिणगार करि ।
तिसूळ चकर वजर खडग, तुंड कमंडळ नख खपरि ।। १५६

तांम रचै चौंसठ, जोगणी आंपणै[8] जोड़ै ।
दिव जोगी महाजोगी, सिद्ध[9] जोगी दळ मोड़ै ।।
प्रेतखी डाकणी, काळराती भणि काळी ।
फैंकारी निसचरी, उरध-कैसी वैताळी ।।

---

१. झड़कां । २. झूंडीया । ३. ग्रहीयां । ४. करती । ५. गरुड़ । ६. नारसघ । ७. उपर । ८. आंपणी । ९. सिध ।

---

१५५. झटकां – जबरदस्त प्रहार । झूंडिया – काट डाले । अजुं – अभी तक । खपै – समाप्त हुए । आळोचे – विचार करें । आरांण – युद्ध । आवरे – आवृति कर । नीसर – निकल । आवध – हथियार । पिड़ – युद्ध । भुइ – भूमि । जीपण – जीतने ।

१५६. महिख – महिष । गरड़ – गरुड पक्षी । तिसूळ – त्रिशूल शस्त्र । चकर – चक्र । वजर – वज्र । तुंड – मस्तक । खपरि – खप्पर ।

१५७. तांम – तब । आंपणै – अपने । प्रेतखी – देवी विशेष । डाकणी – देवी का नाम । फैंकारी – देवी ।

विसरूपा भयकरी, मुड धारण वाराही ।
वजरणी भैरवी, दीरघ लवी प्रेतवाही ॥

माळिणी मोहोणी माहेसरी, चकरी कुडळा[1] वालिका ।
भखणी जमदूता[2] भजा, नाम सता प्रति पाळिका ॥ १५७

ताम वीर वावन, रचै व्रहमाड सधारण ।
रिण रोसण रिण जुडण, भार श्रव[3]वास उधारण ॥
काळा गोरा कवर, रगतमल लागो[4] कळवो ।
माण भद्र हनुमान, कोइलो नरसिंघ फळवो ॥
चाचरिया भूचरचा, लोह तोडण सूळ भाजण ।
मसाणियौ श्रागियो, कवडियौ दाणव गजण ॥

किलकिलियो[5] भूतियो, श्रवल गूजे कूदे गह गहे ।
सिंदूर गरक तेल सरिस, डमरू हाथा डह डहे ॥ १५८

कठे वणे रुडमाळ[7], करग तिरसूळ[8] करारा ।
वाक[9]म दऊ उछछे[10], धरे नीसाण धूतारा ॥
हाका सोस समद, धाक मेछा धड पडिया ।
कूदे कर किलकार, चिहुर वीफर रण चडिया ॥

लगोटवध वाला सहू, लाल चिढघो मुदराळ वणि ।
श्रोभिके वीर सहू जागिया, भगवती नीपाइ भणि ॥ १५६

---

१ कुडळी । २ जमदूती । ३ श्रग । ४ लागो । ५ कळवै । ६ किलकीयो । ७ रूढमाळ । ८ तिसूळ । ९ छाक । १० उछके ।

पाळिका – पालन करने वाली ।

१५८ लागो – लगडा, भैरव । कळवो – बाल भैरव । गरक – सरावोर ।

१५६ करग – हाथ । उछछे – जोश मे उछलें । चिहुर – केश । वीफर – क्रोध मे भर कर । श्रोभिके – चौंक कर । वीर – वावन वीर । सहू – सब, सभी ।

किलंबां कजि काळिका, पलंव इक हाथ पसारे ।
खप्पर मौटिम करे, बिया[1] अनं धरणी धारे ।।
धूंमर फौजां धीस, किया एकठ तिण मज्झे ।
वाजि सरीखी विजड़, धूम घायल्ल[2] अळूझे[3] ।।
रौदां झरतो चाढ़ै रगत, भगति करी जैं जांनियां ।
केसरां सुरंग वागा वणै, धारां खग महमांनियां ।। १६०

छंद दोहा

बकै असुर फाटै वदन, काटै दाटै कौड़ि ।
पड़ै अड़ै कौड़ां मुंहां, जुड़ै जुड़ै लख जौड़ि ।। १६१
घावं मझ खळ घाइजै, काळी गैहण अकयथ्थ ।
धोबिल जै तिरसूळ घट, भारी मचै भारथ्थ ।। १६२

छंद कामंखी जाति

भड़िजै भारथं सथा सथं हाथां ठगं खग-हथां ।
बूथां भख बूथां जुथां जुथं नाथै असुरां उनथां ।।
केछिकि उछकं हाकौ हकं काटिक चपळा कर डकं[4] ।
अकरत उबकं अरि औझकं मोड़ै कंधां मरड़कं ।।

---

१. वीयां । २. घायलां । ३. अलुज्झे । ४. करकंम ।

---

१६०. **किलंबां** – असुरों । **पलंब** – लम्बा । **पसारे** – फैलाकर । **मौटिम** – मोटा, वड़ा । **धीस** – सेना नायक । **विजड़** – तलवार । **अळूझे** – उलझे, फंसे । **रौदां** – दैत्यो, शत्रुओं ।

१६१. **वदन** – मुख । **अड़ै** – सामने डटें ।

१६२. **धोबिल** – निशाने चढाकर । **भारी** – भयानक ।

१६३. **खग** – तलवार । **बूथां** – मांस के टुकड़े । **उनथां** – बंधन रहित । **काटिक** – क्रुद्ध होकर झपटी । **डकं** – वीरनाद । **अकरत** – भयकर । **उबंक** – जोश कर । **अरि** – शत्रु । **मोड़ै** – घुमाकर, तोड़े । **मरड़कं** – मरड़ की ध्वनि के साथ ।

झाटके झट बोटै बट उछळि झौड ऊलट ।
गिळ श्रोणा गट जुटाजुट सूळा पोवै सूलट ॥
खपै खळ खट थिडिया थट ऊथळ नाखै उपट ।
नाचै जिम नट फिरै फगट धड धड लोथा घड घट ॥
डाकर उडडा पिड भुइ पडा खेलै डडाहड खडा ।
झाडीजै झडा वहि तेतडा[1] पाखरिया[2] पडि परचडा ॥

छणहणिया छोळा गोमे गोळा दुरगा वीर हूवा दौळा ।
चौपट मुख चौळा भाजे भोळा रवदा सवळा मचि रौळा ॥
जुडि[3] भारथ जाडा ऊधम आडा झिलता दाणव सहि झडिया ।
लडि फौजा लाडा गाहड गाडा पवगा सुरगा भुइ पडिया ॥
अणभग आखडिया आहव अडिया धूजे रगतासुर धडहडिया ।
रुका रडवडिया इन[4] आहुडिया रिम गाहट जागी जुडिया[5] ॥ १६३

छद दूहा

जैत जैत जुग जोगणी, जीत जीत रणजीत ।
फतै फतै देवी फतै, वाण निहग ब्रवीत ॥ १६४

---

१ वेंतडा । २ पाखरीया । ३ मुडि । ४ ईण । ५ रडीया ।

झाटके झट – प्रचड प्रहार मे । बोटै बट – काटकर टुकडे कर दिए । गिळ – मास । श्रोणा – रुधिर । गट – पीते है । सूळा – त्रिशूलों । पोवै – पिरोते है । खप – नष्ट किए । खळखट – सहार । ऊथळ – उलट कर । नाखै – डालें, गिरावें । उपट – बटकर । फगट – तमक कर । डाकर – तेज आवाज देकर । उडडा – घोडे । पिड भुइ – रणभूमि । डडाहड – दण्डका से । खडा – तलवारें । झाडीजै – गिराकर । पाखरिया – पाखरधारी, योद्धा । परचडा – प्रचण्ड । छणहणिया – घुघरू की ध्वनि । छोळा – मस्ती मे । गोमें – आकाश । दौळा – चारो ओर । चौपट मुख चौळा – लालिया युक्त, चपट मुह वाले । रवदा – असुरो । रौळा – युध्द । झिलता – चमकते हुए । झडिया – वीरगति को प्राप्त हुए । फौजा लाडा – सेना के दूल्हे । गाहड गाडा – प्रचण्ड वीर । पवगा – घोडे । आखडिया – भिड गए । आहव – रडवडिया – युद्ध मे तीतर बितर हो गए । रिम गाहट – युद्ध के, सहार के । जागी – वाद्य ।

१६४ वाण निहग – आकाश वाणी । ब्रवीत – बोली हुई ।

अथ देवा स्तुति

छंद दूहा सोरठा

जोगणि रिण जीतौ, किसणां काढ़ै सांकड़ै ।
पिसणां मलपीतौ, वाढ़ै अरियां[1] वीसहथि ।। १६५

तोलै कर त्रिसूळ, रगतासुर रिण रौळवे ।
असगां जड़ अनमूळ, आधग माई वीसहथि ।। १६६

जुग जुग री जूंनीह[2], आदि सगति तूं ईसरी ।
धूतारण धूनीह[3], वेढ़ोगारण वीसहथि ।। १६७

मुर दांणव रिण मांहि, खगकर सांगे[4] खेरव्या ।
तिण विरियां त्रिपुराइ, व्रिदां उबारै वीसहथि ।। १६८

हिलीया करि करि हौड़ि, गिळिया गटगट गैरियां ।
कळिया तैं रिम कौड़ि, वाद न पुहचें वीसहथि ।। १६९

साहुळि सुणित सवार, संकट मेटे सेवगां ।
ताती होय तिवार, वाहरि दौड़ी[5] वीसहथि ।। १७०

छंद छप्पय

अनंत जुगां[6] ईसरी, आदि तूं अकन कंवारी ।
अनंत वार व्रहमंड, किया त्रिण देव करारो ।। १७१

---

१. अरीयां । २. जूनी । ३. धूनी । ४. सींगे । ५. दोड़ि । ६. जुग ।

---

१६५. **पिसणां** – दुश्मनो । **वाढ़ै** – मारे, काटे ।
१६६. **तोलै** – उठाकर । **कर** – हाथ । **रौळवे** – सहार करने । **असगां** – दुश्मनों । **आधग माई** – आदि माता ।
१६७. **जूंनीह** – प्राचीन । **धूतारण** – ध्रुव को तारने की, देवी । **वेढ़ोगारण** युद्ध करने वाली ।
१६८. **सागे** – घाव लगाकर । **खेरव्या** – खंडित किए । **तिणविरियां** – उस समय ।
१६९. **हीळीया** – मार डाले । **गिळिया** – निगल लिए । **रिम** – वैरी । **वाद** – युध्द ।
१७०. **साहुळी** – भली प्रकार । **सेवगां** – सेवकों । **ताती** – क्रुध्द, तेज । **तिवार** – उस समय । **वाहरि** – रक्षा के लिए ।
१७१. **अकन कंवारी** – आजीवन कौमार्य व्रत धारण करने वाली ।

सात दीप दधि सात, चित्र-खाणी चौवाणी ।
आठ अचळ नव नाग, कोडि तेतीस कहाणी ।।
(कै)[1] वार अनती तें किया, असुर उपाय खपाविया ।
सुर भीर अनतो वार किय[2], जै जै नाम अनतिया[3] ।। १७१

छव दूहो

वरखे पोहप विमाण, सुर हरखे अस्तुति कर ।
पोहता आपणै थाण, उवाह वडाइ[4] वीसहथि ।। १७२

छव कवित्त

अेक असुर ऊबरे[5], ताम भागो[6] रत्त झरता ।
झाग मुख छिब छिबै, नैणा तरवरै तरता ।।
पित दाणव ची प्रोळि, कूक तिम करळी कीधी ।
मिळिया सुणि तिण महुर, सभ निहसभ स वीधी ।।
कह कटक वत्त जीता कवण, भारथ किसडो किय भडे ।
रगतेस भीच ल्याया रमणि, देह वधाई दोवडे ।। १७३

भ्रितो[7] वाच

मुणै ताम हथि जोडि, रसण कटु किम अक्खु[8] ।
जुडता जग जुवाण, हुवा अैथोक अलक्खु[9] ।।

---

१ 'कै' नही। २ की। ३ अनतीया। ४ वडाई। ५ उबरै। ६ भगो।
७ भृतो। ८ अखु। ९ अलखु।

---

१७१ दधि – सागर। चित्रखांणी – चारो प्रकार के प्राणी। अचळ – पर्वत। नाग – सर्प। कै वार – कितनी ही बार। उपाय – उत्पन्न कर। खपाविया – नष्ट किए। सुर भीर – देवताओं की सहायता।

१७२ पोहप – पुष्प। सुर – देवता। पोहता – पहुंचे, गए। थाण – स्थान।

१७३ ऊबरे – बच गया। रत्त झरता – रक्त गिरते। झाग – फेन। तरवरै – अंधेरी। कूक – क्रन्दन, पुकार। करळी – किलकारी, लंबी और ऊंची आवाज। कटक – सेना। वत्त – वार्ता। किसडो – कैसा। भीच – योद्धा। दोवडे – दुगुनी।

१७४ मुणै – कहता है। ताम – तब। कटु – कठोर। किम अक्खु – कैसे कहूँ। जुडता – भिडने पर। अथोक – यह घटना।

नारद अवसर हूवा, हूवा अछरां वरमाळा ।
पळचर भोजन हूवा, हूवा रुद्र कंठहि माळा ।।
धवळ मंगळ सुरपति हूवा, रगत्त त्रिया बेहुंव हूवा ।
निसचर निबळ सारा हूवा, इक रगत भीच ढहतां सवा[1] ।। १७४

एह अमंगळ वत्त[2], सुंणे मुरछागति पड़ियौ ।
उदियाचळ जिम संभ, निसंभ असताचळ निड़ियौ ।।
थये सचेतन महुरत, बकै झकै विरहाकुळ ।
हा भवतव्य अतीठ, असुर सिर मौड़ झड़े तुळ ।।
त्री हाथ पवाड़ौ ताहरौ, लभै[3] किम देवां दमण ।
सुर-भवण सालि मेटियौ अवस[4], रगतासुर पौढ़ण धरण ।। १७५

विरह सभ

छंद नीसांणी जाति गौख सिखराळी[5]

अणभंग असुरां पति अखै । रवदां तौ विण कुंण रखै ।।
अइयौ रगत्तासुर अैसा । जालिम कुंभाजळ जैसा ।।
आहव[6] असुरां दळ आडा[7] । गाहड़दा चलती गाडा[8] ।।
भिड़ भारथ सुरपति भागा[9] । लोहां बळ अंबर लागा[10] ।।

---

१. एता । २. व्रत्त । ३. लब्भै । ४. असव । ५. सीखराळी । ६. आहुद । ७. अड्डा । ८. गड्डा । ९. भग्गा । १०. लग्गा ।

---

१७४. **अवसर** – अमंगल कार्य । **पळचर** – मांस-भक्षी । **धवळ-मंगळ** – मंगल-गान करते हुए, गाते हुए । **बेहुंव** – दोनो । **सारा** – समस्त । **ढहतां सवा** – गिर पड़ते ही ।

१७५. **अमंगळ** – अकल्याणकारी, अशुभ । **निड़ियौ** – जा लगा । **थये** – हुआ । **अतीठ** – भयंकर । **झड़े** – गिर गया, मारा गया । **तुळ** – तुल्य । **पवाड़ौ** – कीर्ति । **लभै** – प्राप्त करें । **देवां-दमण** – देवताओं का दमन करने वाला । **सुर-भवण** – तीनो लोक का । **सालि** – शल्य ।

१७६. **अखै** – कहता है । **कुंभाजळ** – कुंभकर्ण । **आहव** – युध्द में । **गाहड़दा** – दृढ़ता का । **भारथ** – युध्द । **लोहां बळ** – शस्त्र बल से । **अंबर लागा** – आकाश के जा लगा ।

डेरा की चोभा तुट्टी[1] । घोगाळा आसा छुट्टी[2] ॥
सुर सुरपति मडो सुखा । वीसमिया भाजण मुखा ॥
ग्रह्[3] करो पराभव गढा[4] । दळनायक सग अहि दढा[5] ॥
रिख ज्याग करो भ्रम रत्ता । आर्भ सुर हुवो त्रिपत्ता ॥
पिसणा की आसा पूरी । झडिया रगतासुर झूरी ॥ १७६

अथ वचनिका

इण भात दैता रै धणी सभ रगतासुर खेत रह्या री सोचा कोधी घणो । तिण विरिया ढही वीजळी भाद्रवा री पूर नदी उतराध री मेह हकारियो वाघ अनुज भाई निसभ वोलियौं—भावी पदारथ मिटै नही । विधाता लेख घातियो तठै इसो हीज लिखीयो थो । रगतवीज सामत सारिखा री परव मिहरी रै हाथ हुसी । तिका तो आका-बधी[6] । होणहार सू जोर लागै नही । पण अेक वार घणा देवता रा पापडा ऊपर[7] तरवारिया धपाडा । वावन वीर जोगणिया री ढाल पाडा । आप रा उमरावा रा वैर घेरा । क्रम क्रम असमेद ज्याग री फळ ल्या । दाणवा री कुळ उजवाळा[8] । पहाडा[9] नै जळ चाढा । कतल कर वैरिया नै वाढा । क्यु सुक्राचारिज जी । हा[10], आ कवत खैर ईमान उमर वरदराज, साहिवान साहिव री मनोरथ पूरण कीजै ।

---

१ तूटी । २ छूटी । ३. ग्रहा । ४ गढ्ढा । ५ दड्ढा । ६ साका वधी । ७ उपर । ८ उजाळा । ९ पहाडो । १० हा हा ।

डेरा – खेमा की । चोभा – शामियाना खडा करने के डडे । घोगाळ – योध्दाओ की । वीसमिया – मारे गए । आर्भ सुर – देवो का मुखिया, इन्द्र । झूरी – कट कर चूरा होकर ।

१७७ धणी – स्वामी । खेत रह्या री – रणभूमि मे मारे जाने की । घणी – बहुत अधिक । हकारियो वाघ – ललकारा हुआ व्याघ्र । घातियो – डाला, लिखा । मिहरी – मेहरी, गोपिका, स्त्री । आकांवधी – विधि-बध्द । पापडा – शरीर के पीठ भाग पर । धपाडा – तृप्त करें । पाडा – गिरादें । घेरा – बदला लें । ज्याग – यज्ञ । वाढ़ा – काटें, नष्ट करें । कवत – कहावत ।

श्री खुदाबंध[1] ताळा हमारी वाचा सत्य फुरै । गूढ़ मंत्र कीजै । इंद्रासण लीजै । आगै ही महाभारथ कतेबां पुराणां गाईजै छै तौ औ वडौ अवसांण । सेनां घमसांण सूं बिने आता साथे असवारी करि केसरियां बागां मौड़ि बांध सादी वणाई[2], वनिता रौ मांण मौड़ि महिलां आंणीजै । प्रथी प्रमांण नांमौ कीजै । जीवतसांभ गीतां गवीजै । ताता खोजां वाहर कीजै । तौ चढ़ण री ढील न कीजै ॥ १७७

छंद दूहा

पति कारज सूरां परब, निमख तासिर निमंत ।
खरहंड कौकीजैं सदा, चौड़ै संभ चवंत ॥ १७८
आतस सिर पै[3] ऊफणै, तिम बेऊ[4] तेखाळ ।
ओवण इळ[5] लागै नहीं, छोह चढ़े छकडाळ ॥ १७९
घुरै त्रंबागळ तीन लख, गूंजे रसा निहंग ।
चळ चळ हुई च्यार चक, द्रैहलिया[6] दिस द्रंग ॥ १८०
कह कह केकांणां कळळ, छूट छूट थइ छूट[7] ।
हूंकळि मचि दरगह मुखे, तोपां औपां जूट[8] ॥ १८१

---

१. खुदाबद । २. वाणाई । ३. पैठ । ४. बेउ । ५. ईळ । ६. अैहलिया । ७. छट्ट । ८. जुट्ट ।

वाचा – वाणी । सत्य फुरै – सत्य करे । गूढ़ मंत्र – गुप्त मंत्रणा । कतेबां – किताबों में । अवसांण – अवसर । मौड़ि बांधि – मुकट धारण कर । सादी – विवाह का वाना या भेप । जीवतसांभ – युद्ध में घायल होकर जीवित रहने वाला योध्दा । गीतां – वीर गीतों में । ताता खोजां – ताजे पद-चिन्ह पर । वाहर – पीछा । ढील – विलम्ब ।

१७८. परव – पर्व । तासिर – प्रभाव । खरहंड – सैनिक । कौकीजै – वुलवाइए । चौड़ै – खुल्लम-खुल्ला ।

१७९. आतस – गर्मी, क्रोध । बेऊ – दोनों । तेखाळ दिखने लगे । ओवण – पैर । छोह – उत्साह, जोश । छकडाळ – कवचधारी योध्दा ।

१८०. घुरै – वजे । त्रंबागळ – ताम्वे के पेदे वाले नक्कारे । रसा – पृथ्वी । निहंग – आकाश । चळ चळ – चलायमान । च्यार चक – चारो दिशाएँ ।

१८१. केकांणां – घोडो की । कळळ – कोलाहल । हूंकळि – युध्द का कोलाहल । दरगह – दरवार, सभा-भवन । औपां – कान्ति ।

छंद रसाउळा

समिळै आस रा । वाहरू वस रा ॥
अग ऊचास रा[1] । खीजिया खास रा ॥
मुळकती मौसरा । आविया आस रा ॥
पूर तन खड[2] रा । प्राण परचड[3] रा ॥
खुरासा खाड रा । कळ कोमड रा ॥
डाण उडड रा । खाभिया खध रा ॥
साकळा साध रा । कोट वड काम रा ॥
नीकडे नाम रा । औदकै आप रा ॥
छाह देखै छरा । थरहरै थाहरा ॥
पारभै पाधरा । बिहद आकव्र रा ॥
वाह(रा)वहाद रा । उमगे ऊधरा ॥
आसवर आच्छ रा[4] । गात गिरव्व रा ॥
अडूरा ऊमरा । सझिया आवध सातरा ॥
मिळ प्रौळ सकौ घर मछरा । माझी सु कीय मुजरा ॥ १८२
विडग छोडे वळा कूकडा कधळा ॥
किळमा कानळा । उरा चौडा अळा ॥
विक्र चालै भळा । विवाणे वावळा ॥
ऊछळै आवळा । कुळाछा[5] सो कळा ॥

---

१ ओचास रा । २ खाड रा । ३ परचाड रा । ४ अच्छरा । ५ कुळ छा ।

---

१८२ ऊचास रा – उन्नत के । खीजिया – क्रुध्द । मुळक्ती – मुस्कराती । मौसरा – दाढी मूछें । खुरासा – खुरासान देश के । कोमड – धनुप । डाण – मोद मे चलते । उडड – घोडे । औदकै – चौंक्ते है । छाह – छाया । आकव रा – परात्रम वाले । गात – गात्र । अड्रा – निर्भीक । सातरा – अच्छे अच्छे । मछरा – मात्सयधारी ।

१८३ विडग – घोडे । कूक्डा – मुर्गे जैसे । कधळा – कधे वाले । किलमा – यवन, असुर । वावळा – पागल उन्मत्त । आवळा – उलटे । कुळाछा – कुलाचें ।

चमंकै चंचळा । करै सांची कळा ॥
धूजवै धूंधळा । अंब ल्यै अंजळा ॥
आरबी अक्कळा । नील रंगा नळा ॥
अबलखी[1] ऊजळा । सौनेरी सांमळा ॥
राहदारां रळा । माटुवां मांडळा ॥
पसंमो[2] प्रंमळा । कुमैतां काछळा ॥
हरिया हांसळा । ब्रहास छोडे वळा ॥
सिंणगार सांहांणी सांकळा । आंणि हजूर अचागळा ॥ १८३

छद कवित्त

सझि अराबा सबळ, नाळि तोपां वड नांही ।
गज-नाळां है-नाळ, सुतर-नाळां हथसाही ॥
गजलां किती बंदूख, कुहक-बांणां कब्बांणां[3] ।
तरगस भरिया रत्थ, पार कुंण जांणै प्रमांणां ॥
मुदगर गुरज साबळ खड़ग, फरस कटारां चक्र सहि ।
चौकमार कुहाड़ां गोफणां, इम आयुध ग्रहियां[4] सब्रहि ॥ १८४
हुवे तांम वीर हाक, वाजि टामंक विसंमां ।
रुड़ि जांगी रिण भिड़ण, त्रहे भेरी त्रंम-त्रमां ॥

---

१. अबलखां । २. प्रसंमी । ३. कबांणां । ४. ग्रहीया ।

अंब – जल । **अजळां** – अञ्जलि । **आरबी** – अरब में उत्पन्न घोड़े । **अबलखी** – अबलख रंग विशेप के । **सौनेरी** – पीले रंग के । **सांमळा** – श्याम रंग के । **पसंमी** – पश्म । **कुमैतां** – कुमैत रग के घोड़े । **ब्रहास** – घोड़े । **सांहांणी** – चाबुक सवार । **अचागळा** – अचल, अडिग ।

१८४. **अराबा** – तोपखाना । **नाळि** – नालें, बन्दूकें । **गज-नाळां** – हाथियों द्वारा खेंची जाने वाली बड़ी तोपें । **है-नाळ** – घोड़ो द्वारा लेजाई जाने वाली तोपें । **सुतर-नाळां** – ऊंटो पर लेजाई जाने वाली तोपें । **गजलां** – बन्दूक विशेप । **कुहक बांणां** – बन्दूक विशेष । **तरगस** – भाथे । **गुरज** – गदा, गुर्ज । **साबळ** – भाले । **फरस** – परशु । **चौकमार** – शस्त्र विशेष । **कुहाड़ा** – कुल्हाड़ा ।

१८५. **टामंक** – नवकारे । **विसंमां** – भयावने, अशुभकारी । **रुड़ि** – बज कर ।

सूरनाई रिणतूर, झाझ छिम-छिमा जमता।
तुरही तीखै सद्द, भयै नाटक सामता॥
करनाळ त्रवागळ वजीय[1], गौम भौम एके थय[2]।
सद पास पास नथि साभळै, चढै सभ छत्रपतीय[3]॥ १८५

असुभ सुकन अवरे, दाह दिग रातड दीसै।
घरट स वजै गैण, प्रिथी धडहडे अनीसै॥
उळकापात उडड, पवन छूटो रज वूठी।
सादै फूही विकट, दिवस-राजा सुर ऊठी॥
वाईस[4] रैण तारा-पतेन[5], मटळ धूम रवि केत जगि।
झडि मुकट सभ चढता चचळ, देखि विरत तन दाह लगि॥ १८६

छद मोतीदाम

चढै सभ राण पदमणि चाडि। आवुधा सावत दैत औनाडि॥
किता जाग जमुख[6] वैताळ गरूर। किता घोडमुख दयत करूर॥
किता मुख वाराह जेहा किलव। पखी मुख केताहि दैत पलव॥
किता बोह हथ्थ किता बोह कन्न। किता वड[7]रूप किता मेघवन्न॥
किता पग लूघ किता ग्रध पेट। वीजूजळ केता जीह सवेट॥
भयकर केता हो रूप भुतड[8]। भरा तन केस दीरघ्घ वयड[9]॥

---

१ वजीया। २ थया। ३ छत्रपतीया। ४ वारस। ५ तारा पतिन। ६ किता गजमुख। ७ बोह। ८ भूतड। ९ वयन।

---

१८५ सूरनाई – शहनाई। झाझ – वाद्य विशेष। तीख – तेज, ऊँचे। सद्द – शब्द। गौम – आकाश।

१८६ अवरे – आकाश मे। रातड – लाल। घरट – घरट्ट। गैण – आकाश मे। अनीस – भयजनित आशका से। रज वूठी – धूलि की वर्षा हुई। सादै – शब्द। फूही – फूही जानवर जो लोमडी की आकृति से मिलती-जुलती होती है। दिवस राजा – उल्लू। वाईस – कौवे। चचळ – घोडे पर।

१८७ चाडि – रक्षार्थ, पुकार कर। जमुख – सियार मुख। दयत – दैत्य। वाराह – सूअर। पखी – पक्षी। केताहि – कितने ही। पलव – वन्दर, लम्बे। किता – कतिपय। बोह – बहुत से। कन्न – कानो वाले। पग लूघ – लगडे। वीजूजळ – विजली, तलवार, बीजू जानवर जैसे। भुतड – भयकर दैत्य।

किता वड दांत व्रिकोदर वीर। धुतारा भारथ सारथ धीर ॥
असंख गयंद व्रहास असंख। आराबा असख किलंब असंख ॥
कठठे सैन चले विकराळ। धूजे मन सेस कंपे धर चाळ ॥
मूंके धर सात समंद मजाद। वहै उलट्ट पलट्टत[1] वाद ॥
असां खुरताळ उडी रज औप। अघट्ट[2] प्रभाकर थीय अलौप ॥
दरसै रैण व्यापति दिगंत। निसाक्रित[3] दिह मधे निरखंत ॥
घुरे टामंक निसांणा घोर। चमंके इंदु दुडिंद[4] सू जोर ॥
कड़ि चढ़ दांणव कीध[5] किलक्क[6]। हौकारे नारद वीर गहक्क[7] ॥
प्रगट्टे सिंधू राग प्रगट्ट। झूंझाउ वाजै लैण झपट्ट ॥
बैताळां बापूकार बौलाइ। पुंतार जुवांणां असंमर पाइ ॥
समथ्थ थई त्रिपुराइ संग्राम। वहै तिम आयुध सांम्हा वांम ॥
पड़ै खग झट्ट[8] पछट्ट[9] प्रंचाळ। उसांसै लाखां दैत उथाळ ॥
घमौड़ि अेकहथी वहि धार। सगत्ती सात्रव मांडि संघार ॥
नाराजी तांम वहै निरलंग। खैसोजै राखस साथ खयंग ॥
ढहै तिम साव[10] झूझ ढीचाळ। वजाड़ै घावं घाव विचाळ ॥
पोऐ तिरसूळ पछांटै प्रांण। घुंमाड़ै रौदां दौमझ घांण ॥
दुवाहा जोध जुटै रिणवाट। धड़छै धाड़ मचे धर घाट ॥

---

१. उलट पलटत। २. अघट। ३. निसाक्रीत। ४. दुदिड। ५. किध। ६. कीलक्क। ७. गहक। ८. झट। ९. पछट। १०. सात्रव।

व्रिकोदर – वृकोदर। **धुतारा** – युद्धकारी धोखे का युद्ध। **व्रहास** – घोड़े। **आराबा** – तोपे। **मूके** – त्यागने लगे। **असां** – घोड़े के। **खुरताळ** – पैरों की टाप से। **प्रभाकर** – सूर्य। **अलौप** – लुप्त। **निसाक्रित** – चन्द्रमा, रात्रि के कृत्य। **दिह मधे** – दिन मे। **दुडिंद** – सूर्य। **किलक्क** – किलकारी। **गहक्क** – मस्त होकर, एकत्रित होकर। **बापूकार** – जोश दिला कर। **पुतार** – उत्साहित कर। **वाम** – तिरछे, स्त्री के, देवी के। **पछट्ट** – पछाड़ खा कर। **उसांसै** – जोश मे आकर। **नाराजी** – तलवार। **खैसोजै** – नष्ट होते है। **खयग** – घोड़े। **ढीचाळ** – हाथी। **पोऐ** – पिरोवे। **रौदां** – शत्रुओं, असुरो। **दौमझ** – युद्ध। **धड़छ** – खण्ड-खण्ड करते है।

लडै मिळ खेत पडै भडि लोय । जडै उरमैल गुडै भट जोध ॥
वळावळ छूट वहै चद्रवाण । पडता राखस छूटै प्राण ॥
आकारा भीच अटै अणबीह । पतगा जेम पडै नर वीह ॥
वगत्तर टट्टर खप्पर वाढि । उवेडै[1] फाडिस चक्रि दूआढि ॥
करै खळ खड विहड कोमड । तजै सनमध नीजोडत वड ॥
आरावा ऊछळ आतस झाळ । मडे किर भाद्रव मेह मझाळ ॥
पडै उतवग चढै तन पीठ । गैंदाळा झीक[2] किरमल्ल रीठ ॥
वरै वरमाळ वारागना वेस । पूजै मन हाम रुद्रिहि किर[3] पेस ॥
चले श्रोण खाळ रगे भुइ चग । प्रवाळी खेत नीपनो पग ॥
पडे धड कळस दीस प्रगट्ट । थहे किर खेत सिरा चा थट्ट ॥
नाचै तिम नट्ट थई जिम नाच । महोदधि मज्झ कूदै मुज माछ ॥
सपेखै सभ निसभ मधीर । ब्रमाणी ताम थई वर वीर ॥
जाडै लोह रेवत सीच सजोर । धानक टकार[4] वाणास मधोर ॥
साखा वेह[5] वाजि उछजे खाग । फवतो खेल रमै मिळ फाग ॥
कडक्का[6] काटि वडक्का[7] कध । झडक्का[8] देह दवगा झध ॥
पछटे कोपट झापट पूर । उसाटै दैत दवोट अडूर ॥
वडफर ताम खड खड बड्ढ[9] । जडै उर द्रिढ महा जमदढ्ढ[10] ॥

---

१ उखेडै । २ झिक । ३ कर । ४ टोकार । ५ छेह । ६ कडका । ७ वडका । ८ झडका । ९ वढ । १० दढ ।

गुडै – लुटक्ते हैं । वळावळ – चारा ओर से, वार वार । चद्रवाण – बदूक विशेष । आकारा – तेजस्वी, क्रोधी । भीच – योद्धा । अणबीह – निडर । टट्टर – अस्थि पजर । कोमड – धनुष । सनमध – सधिस्थलो के बधन । आरावा – तोपो से । आतस झाळ – अग्नि-ज्वाला । उतवग – मस्तक । गैंदाळा – असुरों । किरमल्ल – तलवार । रीठ – शस्त्र प्रहार । वारांगना – अप्सराए । हाम – इच्छा । भुइ – पृथ्वी । प्रवाळी – लाल, मूगे । पग – कीर्ति । माछ – मछलिया । रेवत – घोडे । वाणास – तलवारें । झध – राक्षस । वडफर – टाँगें, शरीर के पीठ के भाग विशेष । जमदढ्ढ – कटार ।

आवटै - खूंट अरी अणताग । धीवै दळ डीगळ कुंत धोयाग ।।
औरे धमजग्गर[1] मांहे अस्स[2] । धावै जगजेठ धमोड़ण तस्स[3] ।।
छेदै हीगौळ आवुध छत्रीस । अमूभै जोर न पूहचै ईस ।।
पीयैत रगत खप्पर पूर । धरा चौ भार उतार स धूर ।।
सकज्जां[4] आसुर संभ निसंभ । रवद्दां[5] नाथ वरे त्रिय रंभ ।।
फूटे उर फेफर वीखर फूल । अंत्रावळि वाखर भाखर ऊल ।।
त्रिपत्तां ग्रिध भये तन तेख । पळचर साकणि धोंकरि पेख ।।
पड़े रिणखेत कंपे धर पिंड । आडोवळो जेम ढहंत अखंड ।।
अनंत संघारे राखस अंस । संग्रांम जीतौ सुरराइ प्रसंस ।।१८७

छंद कवित्त

पड़े कौड़ि भड़ सुहड़, पड़े राखस प्रौंचाळा ।
पड़े वाजि मति कौड़ि, पड़ै गजराज घंटाळा ।।
भरे श्रौण सामंद्र, चले सळता रगतंमै ।
मिळे भंडारै महंत, पड़े धड़ सौह परंमै ।।
सुर साल मिटे मिटे संकट, राखसियां पीटण पड़े ।
अणभंग संभ निसंभ अड़ि, पड़ती संझ्या खळ पड़ै ।। १८८

---

१. धमजगर । २. अस । ३. तस । ४. सकजां । ५. रवद्दां ।

आवटै-खूंट – संहार । **अणताग** – अथाह, इस तरह । **धीवै** – प्रहार करे । **कुंत** – भाले । **औरे** – प्रवेश करके । **धमजग्गर** – युद्ध । **अस्स** – घोड़े । **जगजेठ** – योद्धा, राजा । **हीगौळ** – हिंगलाज देवी । **आवुध** – हथियार । **अमूभै** – दम घुटने की क्रिया का भाव । **पूर** – पूर्ण, भरे हुए । **चौ** – का । **रवद्दां नाथ** – असुरपति । **वीखर** – फैल कर । **अंत्रावळि** – आंतों का समूह । **वाखर** – कटि और पसलियों के मध्य का भाग । **भाखर** – पीठ । **ऊल** – चमड़ी के ऊपर की झिल्ली । **पळचर** – गृद्ध आदि मांसाहारी पक्षी । **आडोवळो** – आडावला नाम का राजस्थान का प्रसिद्ध पहाड़, अरावली । **ढहंत** – ढह गया हो ।

१८८. **प्रौंचाळा** – अति बल वाले । **वाजि** – घोड़े । **घंटाळा** – घटधारी । **सळता** – नदी । **रगतंमै** – लाल जल की, रक्त की । **पीटण** – युध्द में, उत्साह हीन । **पड़ती संझ्या** – सध्या होते समय ।

मिळे इद दुडियद, मिळे नारद ब्रह्म्मा ।
मिळे कोडि तेतीस, मिळे अधप गमगम्मा ॥
मिळे मुनी महारुद्र, मिळे चद्राणण अच्छर ।
मिळे पख आमख, मिळे रैंणीपति अम्मर ॥
नवनाथ चोरासी सिध मिळे, वर सवदन तिम विळकुळे ।
करि जोडि पयपै वाणि इम, जै जै जै किधू[1] मिळे ॥ १८९

वरखे पोहप आकास, थया सुज मगळ लीला ।
वाजे दुदभि देव, भयै जैत जैत समेळा ॥
करे ताम असतूत, नमो सुर[2] सकळ सधारण ।
सता अपण सुखा[3], गमण विमुखा अव गाळिण ॥
श्री नाथ रुद्र गणपति सकळ, भासकर मिळ पचए ।
इण माहि भेद जाणै जिको, ब्रह्मघातिको[4] मान ए ॥ १९०

छद सुद्ध लीला

आदेस त्रिपुरा अमरी । आदेस पतिता उधरी ॥
आदेस उमिया ईसरी । आदेस रूप अगोचरी ॥
आदेस आपण अवतरी । आदेस सुर सीकोतरी ॥
आदेस दुती[5] डाइणी । आदेस साप्रति साइणी ॥
आदेस तुळजा तोतळा । आदेस कामख कोइला ॥

---

१ किधु । २ सूर । ३ सुख । ४ ब्रह्माघातिकी । ५ दु ति ।

---

१८९ दुडियद – सूय । गमगम्मा – अगम्य स्थान पर प्रवेश करने वाले । मिळे – मिले । चद्राणण – चन्द्रमुखी । अच्छर – अप्सराए । पख – पक्षी । आमख – मांस । रैंणीपति – च द्रमा । अम्मर – आकाश, देवगए । विळकु ळ – व्याकुल होकर । पयपै – कहते हुए । इम – इस प्रकार ।

१९० पोहप – पुष्प । थया – हुआ । ताम – तव । विमुखा – विमुख या विपक्ष वाला का । गाळिण – नष्ट करने । भासकर – सूय ।

१९१ आदेस – नमस्कार । उधरी – उध्दार करने वाली । उमिया – पावती । अगोचरी – इन्द्रियातीत, अप्रकट । आपण – अपने ही से । सीकोतरी – सिको तरी, देवी विशेष । सांप्रति – प्रत्यक्ष । साइणी – सहायिका । तुळजा – तुल्लजा देवी । तोतळा – तोतला देवी । कामख – कामाक्षा देवी । कोइला – कोयला देवी ।

आदेस चामंड चापणी । आदेस कंटक कापणी ॥
आदेस भगवती भामणी । आदेस कमळा कांमणी ॥
आदेस बाळा बोह बुधी । हींगौळ अंबा हरसिधी ॥
आदेस जणणी जालिपा[1] । आदेस खळदह खाळिपा ॥
तैं रची ब्रहमंड तारिया[2] । अनंत बार उबारिया[3] ॥
सुख दीयण[4] सांता संकरी । करि मंगळ नित खेमंकरी ॥ १९१

छंद गाहा दुमेळ

पयंपै इम अस्तुति सुरांपति, विहसे सुणै भाखै इम भगवति ।
मांगि मांगि वर वच्छ महावर, समपुं तेह सांच हित सुखकर ॥ १९२
जांमळ पांण भणै इंद जौड़े, एवमेव तौ वचन अमौड़े ।
एह संथमर सुंणैं जिकौं इळ, पुत्र संपति तीयं परघळ ॥ १९३
भणै ग्रंथ नर त्यां दुख भाजै, लिखै क्रत त्यां सात्रव लाजै ।
देव दया करि ए वर दीजै, सत्य सत्य करि वचन सुणीजै ॥ १९४
तथा अस्तुति कहै त्रिपुराई, वांटे तांम सेवगां वधाई ।
पै लागै पोहचै वर प्रांमैं, निज निज सुर जपतां प्रम नांमै ॥ १९५

---

१. जालिखा । २. तांरीया । ३. उबारीयां ।

चामंड – चामुण्डा देवी । कंटक कापणी – वैरियो के टुकड़े करने वाली । बोह बुधी – वहुत बुद्धि वाली । हरसिधी – हरसिद्धि देवी । खळदह खालिपा – दुष्ट-दलो को नष्ट करने वाली । दीयण – देने वाली । सांता – संतों का, सप्त प्रकार के । खेमंकरी – क्षेमकरी ।

१९२. पयंपै – कहता है । विहसे – हँस कर । भाखै – कहती है । वर – वरदान । वच्छ – वत्स । समपुं – देऊं ।

१९३. जांमळ – युगल । पांण – हाथ । अमौड़े – अविचल । तीयं – उनके, स्त्री । परघळ – अत्यधिक ।

१९४. त्यां – उनके । सात्रव – दुष्ट, शत्रु ।

१९५. सेवगां – सेवकों ने । प्रांमैं – प्राप्त किए हुए । प्रम नांमै – परम नाम को ।

छंद दूहा

दुख मेटे काटे दुमट[1], दाटे असगा दूर।
वाटे घाटे वीसहथि, होइजे वेग हजूर ॥ १६६

अस्ट नाम पढिजे असट, दाइम काइम दीह।
भणू[2] तिको अहिजो[3] भला, जिम सफळो हुइ जीह ॥ १६७

छंद कवित्त

प्रथम नाम चड-घट, कूखमडा[4] भणि दूजौ।
मुर अवा सील पुत्री, महागौरी चौ पूजौ ॥
पचम नाम प्रसिद्ध, सकद माता सुरराणी।
व्रहमाणी काळि रखि, कहा निम काइयथाणी ॥
ए अस्ट नाम रिध आपणा[5], कस्ट दुस्ट कळि टाळणी।
साकणी प्रेत दूरे टळै, प्रभवै नाही डाकणी ॥ १६८

प्रहसम नित जै पढै, कटै त्या रोर अक्रमह।
वाचै नित करि वाण, धनवत[6] वधै धरमह ॥
गगा गया प्रयाग, भमैं किण कारण भुल्ला।
अडसठ तीरथ सुफळ[7], लहै गुण पठत[8] अचल्ला ॥

---

१ दूमट। २ भणु। ३ अहीज्यौ। ४ कुखमडा। ५ अप्पणा। ६ धन वध। ७ सफळ। ८ पढत।

---

१६६ घाटे घाटे – माग और विकट घाटो मे। वेग – शीघ्रता से।

१६७ असट – सन्त जन। दाइम – नित्य। भणू – कहता हूँ। तिको – वह, जो। अहिजो – ग्रहण कीजिए। भला – भली प्रकार से। जीह – जीभ वाणी।

१६८ चड घट – चन्द्रघटिका। कूखमडा – कुष्माडा। मुर – तृतीय। सील पुत्री – शैल पुत्री, पार्वती। चौ – चतुर्थ। सकद – स्कद। आपणा – देने वाले। टाळणी – दूर भगाने वाली। प्रभवै – प्रभाव।

१६९ रोर – दरिद्रता। वाचै – पढते हैं। वधै – वृद्धि प्राप्त हो। भम – भ्रमण करे। भुल्ला – भ्रमित या भूल कर। लहै – लें। अचल्ला – अटल।

मारकंड रिख वाणी रवस, कही तेम जैचंद कहै ।
भगवती भजन मोटी भगति, आखै संतां ऊमहै ॥ १९९

छंद दोहा

संबत सतर छिहंतरै, आसू सुदि तिथ तीय ।
मुरधर देस कूचौर पुर, रचे ग्रंथ करि प्रीय[1] ॥ २००
मांण दुजोयण भीम-बळ, इळ[2] किसना अवतार ।
महाराजा अगजीत सिंघ, राज तेण इधकार ॥ २०१
गण खरतर विद्या गुहिर, अमर आनंद निधांन ।
सिष चत्रभुज जैचंद सरिस, कीध वचनिका ग्यांन ॥ २०२
बुध अनुसार विचार वर, सार धार संसार ।
भुगति छेह लाभै मुगति, पढ़ि त्यां बोह परवार ॥ २०३

अथ वचनिका

इण[3] भांति श्रीमहामाया । अनेक दांणव खपाया । तिण री वचनिका कही । दुरगापाठ सूं लही । मनवंछित फळ लीजै । तौ श्री महमाईजी की वचनिका कहीजै ॥ २०४

---

१. प्रिय । २. ईळ । ३. ईण ।

रवस – रहस्य । आखै – कहता है । ऊमहै – उमंगपूर्वक ।

२००. आसू – आश्विन । तीय – तृतीय । मुरधर – मारवाड़ । कूचौर पुर – कुचेरा नाम का ग्राम ।

२०१. मांण – मान में, हठ में । दुजोयण – दुर्योधन । भीम-बळ – बल में भीमसेन । इळ – पृथ्वी । किसना – कृष्ण । अगजीतसिंघ – अजितसिंह । तेण – उनका ।

२०३. भुगति – भुक्ति । छेह – अन्त । लाभै – मिले ।

२०४. खपाया – संहार किया । लही – ली ।

छद दूहा

जोडि भणै जैचंद जती, इक कवि सू अरदास ।
छद भग आखिर छिकत[1], ईखै म करौ हास ॥ २०५

इति श्री माताजी री वचनिका ॥ सम्पूर्णम् ॥ सवत १८३१ कात्तिक वद १० रविवारै लिखत कवळगछे श्री पूज्यजी श्री श्री सिद्ध-सूरिजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री कक्कसूरिजी तत् शिष्य मतसूदर उतमसूदर रामसूदर तिलोक सूदर रुप सूदर देवीचद लिपी कृत । कूचैरा मध्ये चतुर्मास की ।

---

१ छीकत ।

२०५ भणै – कहता है । अरदास – निवेदन । आखिर – अक्षर । ईखै – देख कर । म करौ – मत करो । हास – हँसी, उपहास ।

परिशिष्ट—

क – देवी सम्बन्धी स्फुट काव्य

ख – शक्ति का स्वरूप और उसकी उपासना

ग – पुस्तक समीक्षा

क-देवी सम्बन्धी स्फुट काव्य

छंद चाळकराय री रोमकंध

सुभ भाळक दीठ संभाळक सेवक भाळ बंबाळक रोस भड़ै ।
विकराळक सिघ चढ़ै बिरदाळक खेतळ पाळक अग्र खड़ै ।।
चख नख्ख सरूप रचै चिरताळक दांणव गाळक संभ दह्यो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ।।१।।

रिणताळक भाग सत्रां सिर राळक कै महराळक सेव करै ।
चमराळक सिघ ढूळाळक चंमर तेज उजाळक भांण तरै ।।
अकराळक घाट घटाळक ओपत थाट थटाळक आंणि तयो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ।।२।।

खळ थोघण श्रोण अरोगण खप्पर छै रुति सोगण जोस छलै ।
मद भोगण मांस अरोगण मैंमत घावत मोगण दैत घलै ।।
अंग रोगण मेटि ढकै पर ओगण कीति अमोघण रीति कियो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ।।३।।

चंड मंड घुमंड बिहंडक चामंड नौ खंड डंड अडंड नमैं ।
परचंड हूं डंड भुडंड प्रचंडज रुण्ड दुरण्ड अखंड रमैं ।।
झुड जोगणि थंड उडंड झटापट खंड नऊ छड खेह खयो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो । ४।।

चट पट्ट निपट्ट झटापट चौसटि नाच उघट्ट अपट्ट नचैं ।
अट पट्ट अभट्ट रमैं झट ऊट्ट रु झट थट्ट गरट्ट रचैं ।।
झणणट्ट अघट्ट बजै पग झांझर त्रेवट हेम सुघट्ट थयो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ।।५।।

बजि डाक डमंक त्रमंक बळोबळ हाक चंडी चमक डाक हुवै ।
पड़ि धाक नराक घणांक पजोवण नाक सुरां असुराक नवै ।।
हद छाक अराक पियाक हमेसज ले बकराक चहाक लयो ।
प्रतपाळक बाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ।।६।।

भळळळक त्रसूळ बजै अंग भूखण कौर जरी पळळळक करै ।
नचतां खळळळक बजै पग नेवर तेज रवी भळळळक तरै ।।

मुळळ्ळक पोहोप फूल भटै मुगहार लडी रळळ्ळक हुयो ।
प्रतपाळक वाळक रोग प्रचाळक जोगणि चाळकनेच जयो ॥७॥

घम धम्म वजै घम घम्म नचै धर नेवर पै भम भम्म नदा ।
नम नम्म भवानी चोसठि नाचति ह्वै उमरू डम डम्म हुदा ॥
ठम ठम्म अभूसए अग ठमकत भाण उदै रम रम्म भयो ।
प्रतपाळक वाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ॥८॥

भणणाट वजै रमता पग भाभर वव टका वणणाट वजै ।
खपरा खणणाट हुवै रत सोखण खोळ तत्रा छणणाट छजै ॥
नचता ठणणाट सजै अग नूपर छन्न छटा छणणाट छयो ।
प्रतपाळक वाळक रोग प्रजाळक जोगणि चाळकनेच जयो ॥६॥

—अज्ञात

गीत सूघा माता रो

स्वय पिड व्रह्मड भुज डड ईकवी मस, दयता डह परचड दाता ।
सकळ विहमड चड कुण कर सकै, मड ज्या मडी चामड माता ॥१॥
आठ सिघ थापणो थाल आसाऊवा, आपणो माल नवनिघ अनूधा ।
रिधव रुक दे मूघा न ह्वै रायहर, सकत सूघा तणो राय सूघा ॥२॥
किन्नरा नगा गध्रप गणा राक्सा, सदा पनगा नरा सुरा सेवी ।
कव पट्टा वाद ऊथापिया जाय किण, दिढ जिका थापिया आददेवी ॥३॥
असी चालीसरी जात री ओठमण, कळू अखियातरी थीस काथा ।
दहु तारा तरी रीस दखळ न दळा, हिमायत मातरी वीस हाथा ॥४॥

—दळपत वारैठ री कह्यो

गीत तुलजादेवी रो

वेदा वरन्नी अलोका भेदा तुलज्जा तरन्नी वाळा ,
रगी सूल तोका ओक भरन्नो रगत ।
अधोका राकेस मीम घरन्नो धरन्नी ईस ,
सरन्नी अलोका नमो करन्नो सगत ॥१॥

आभा निलै नूर छाजै नवीना मयक वाळी ,
छीना लकवाळी छाजै घटका छुद्राळ ।

जुगां वाळी देहारी वेहारी अनुज्जा जयो,
मेहा री तन्नुजा जयो घंटाळो मुद्राळ ॥२॥

मती क्रोध दावै दूठ दाहणी असंत मार्डा,
सत चाडां आवै सिघ्र चाहणी सादेस।
बूडतो जिहाजां सिंध थाहणी अथाहां बाहां,
उग्राहणी साहां सिह बाहणी आदेस ॥३॥

कोड़ छैतीस देव सुरां चा सारणा काज,
महाराज तेज धू धरणां आसमांण।
नरां लोक तारणा पै आसारणां जहान्नेवी,
देवी जे कारणां नमौ चारणां दीवांण ॥४॥

—हुकमीचंद खिड़िया रौ कह्यौ

गीत माल्हण देवी रौ

गिरवर ऊधरां तर मोर गहक्कै, व्है हरियाळ हवाई।
ज्यां बिच थांन जळाहळ जोपै, देवकळा दुल्हाई ॥१॥

बिरछ अनूप बणै थळ वंका, सैंजळ कूप सवाई।
आलणवंस दिपै उजियागर, माल्हणदे महंमाई ॥२॥

अदपत छाजै तखत 'बिराई', वसुधा प्रखत बड़ाळी।
आत प्रवीत प्रवाड़ा ऊगम, बीसहथी बिगताळी ॥३॥

इम्रत खाळ वहे मढ़ आगळ, खांण पळांकण खंडी।
अे नर अमर जातरी आयै, चंवर ढुळाड़ै चंडी ॥४॥

—अज्ञात

गीत करणीजी रौ

वाट वाटे घाट औघटे रण बन, जळ थळ महियळ अजर जरे।
चेलक चाउ आप रायां रण, करणी सदा सहाय करे ॥१॥

विमरां गिरां झंगरां विखमां, सरितां सरां सूभरां साय।
भगतां भाय सदाय भवानी, मेहाई रिच्छक महमाय ॥२॥

देम अनै परदेस दर्स दिम, तिजडा वहण रिमा रिणताळ।
आसाळ्वा अखी करि आई, देवी सरणै राग दयाळ ॥३॥

दरबारे दीवाण निसा - दिन, पाय पाय पूगर रखपात।
घात अघात टाळणी घट घट, मेह सघू सेवगा मात ॥४॥

छेदण दंत भूत छळ छेहा, पीडा कसट रोग दळ पाण।
विघना हरै साद सुण वहली, देसणोक हूदी दीवाण ॥५॥

नाहर चोर डाकणी निसचर, थळराणी भाजण अरि - थाट।
भूला सकत असूळा झाले, उर चिंता कोजै दहवाट ॥६॥

गढवाटा राखण सरणागत, पूजारा बाघण भ्रम - पाळ।
विरधा तरुण चेलका वासे, घर बाहर ओठभ घाटाळ ॥७॥

अमर स कोड तेतीस ऊपरै, राजा राण वदै दोय राह।
दुहु कर जोड सुमरते 'दौला', पाळग वरण जगळ पतिसाह ॥८॥

—दौलतसिंघ बारहठ रो कह्यो

गीत घोळागिर-राय रो

दूहो

रूपाळो रळियामणो, घोळागिर रो थान।
तर नोझरण झकर तठै, सिखर मेर समान ॥१॥

गीत

रिघू आरोही नाहरा हको प्रभत्ती वधारो रेण,
जेभ रत्तो म धारो नसूळा तत्ती झेल।
गिरापती धूंधळो अधारो लजा सेवगरा,
बीसहत्थी सकत्ती पधारो वेग वेल ॥२॥

पीधा फूल प्याळा रुखाळी करै सदा पाता,
दीधा साद तीजी आवता सदाई।
आचा खगा सभाया वाढाळी सात दीप आळी,
महाकाळी आवजै डाढाळी जोगमाई ॥३॥

साय सुरांधीस री कै वारां कीधी खगां साय,
सारौ जोड़ कहै जगदीस री संसार।
सूजै नकौ तीसरी तो जसी मोनै ग्रैण समै,
ग्रावजै ईसरी हमैं गरीबां आधार ॥४॥

लीधी ग्रोर तिकां कोट दीधी मत्ता लखांरी,
सदा ग्राप कीधी निजु चाकरां री साय।
ग्रंगां राखै सवोळा देवाळ ग्राचा ग्राखरां री,
रहै सदा साय धौळा भाखरां री राय ॥५॥

—दुर्गादत्त बारहट री कह्यौ

गीत माताजी रौ

करै कांकणां खळक्कै चूड़ कुंडळा झळक्कै कांनै,
महारूप दीपै कंठ मोताहळां माळ।
हसंती खेलंती देवी झूलंती त्रिसूळ हाथ हाथै,
भलौ भलौ भलौ भलौ लील मे भुवाळ ॥१॥

नेवरां वजाऐ पाऐं रमांऐं भूतेस नाथ,
पाधरे त्रावंक वंक धुजाड़ै पाहाड़ा।
हिलोळै हमालां दैत विरोळै समंदां हाक्रे,
निमौ निमौ निमौ निमौ थांब ही ग्रौनाड़ ॥२॥

पाडवी पाछाड़ै झाड़ै भुलाड़ै कंवारी वेस,
त्रहकै नीसांण तूर डहक्कै त्रंबाळ।
गहक्कै ग्रळापै राग ग्रोइसां सुरंगै गौखै,
खेल खेल खेलै खेलै राखसां खौगाळ ॥३॥

ग्राखाड़ै ग्राखाड़ै देवी पमाड़ै पमाड़ै ग्रावै,
ग्रांच स सुरंगरंग चोळ में ग्रनूप।
विम्मरां भुरज्जां धज्जां झरोखां वजाड़ै वीण,
रंमै रंमैं रंमैं रंमैं रंमैं सांचला सरूप ॥४॥

दिवाणै दिवाणै थाणै वाखाणै वाखाणै वेम,
वरत्तै छत्तीस वस ऊगै जेती भ्राण।
काचै काचै राचै नही कुळ रै तैतीस कोड,
नाच ,नाचै नाचै दुरगा बाजता नीसाण ॥५॥

—अज्ञात

छंद चाळकनेची रौ

अघ नारी सज सांग अखाडै, आच खपर ले खाग उघाडै।
बाजोइ डमरू डाक बजाडै, जोगणि सूतोइ नाग जगाडै॥
साथ झूलर ल सकति सहेली, नृत घूमर दे रूप नहेली।
अतर फुलेल किया अलवेली, तीन लोक ऊपर छवि तेली॥१॥

काना हस विराजै कुंडळ, अदइ रूप दियै चद ऊजळ।
वणि पौसाक जरीकस बद्दळ, जा विच गात भळक्कै वीजळ॥
चगा चीर धारिया घूघर, अखन-कवारी बाळाइ सुन्दर।
रमत मात मन रगथळ ऊपर, सूधा सिखर अळग अघघकर॥२॥

खडगस खपर हाथ लिया मुख बीडी मक्कर मुख ऊपर चखिया।
॥

खग वाहण ववर माथ ही सकर नक्कर नर सुर नाग नमैं।
वणि जवान घडी खिण बुढ्ढिय बाळक रामत चाळक नैंच रमैं॥३॥

चटकी दे ताळी फिरत ऊतावळी रम्मत कमाळी सुर राया।
कुडळ किरणाळी दीप दिवाळी मगळ जाळी महमाया॥
चाळक चिरताळी मद मतवाळी धरणि पियाळी गाढ धमे।
वणि जवान घडी खिण बुढ्ढिय बाळक रामत चाळक नच रमैं॥४॥

तिलडी लड लटकत तडता तटकत गटकत भोजन गुद्द गिळा।
पीवत मद भटक्त प्याला झटकत थटकत नित मन रग थळा॥
नाचत नृत नटकत अलका छिटक्त भैचरा अटक्त वास भमैं।
वणि जवान घडी खिण बुढ्ढिय बाळक रामत चाळक नैच रमैं॥५॥

तन तेज झळक्कै बीज झळक्कै हार हळक्कै हीर हियै ।
गळ हांस ठळक्कै नग्ग पळक्कै मधुर मुळक्कै हास कियै ।।
ठम चाल टळक्कै वैण लळक्कै सेस सळक्कै जेण समैं ।
बणि जवांन घडी खिण बुढ्ढिय बाळक रांमत चाळक नैच रमैं ।।६।।

घुघर पांय धणणणण गाजै गिर गणणणण अंबर सणणणण भणणणण म्रदंग ताल भणक्कै ।
खंजर खणणणण झीझा झणणणण नेवर ठणणणण डमरु डक्क डकै ।।
फिर फिरा फणणणण घूमर घणणणण जेवर जणणणण खणणणण कचन चूड़ खिमै ।
बणि जवांन घड़ी खिण बुढ्ढिय बाळक रांमत चाळक नैच रमैं ।।७।।

गूंथै यों अंग गजरा ओपैइ अजरा रंग सो सजरा हाथ रखै ।
खिम लोयण खिजरा काटहि फजरां ईसर मुजरा जाय अखै ।।
ले घूंघट लजरा ग्यान सो गुजरा जाणत तुजरा खेल तमैं ।
बणि जवांन घड़ी खिण बुढ्ढिय बाळक रांमत चाळक नैच रमैं ।।८।।

तर गिर थंडी रच नव खंडी दांणव दंडी गयण रसा ।
सिस भांण स मंडी पिंड प्रचंडी उमग उदंडी रूप इसा ।।
चिरतां धन चंडी बप्प ब्रह्मंडी जगत अखंडी जाय रमैं ।
बणि जवान घड़ी खिण बुढ्ढिय बाळक रांमत चाळक नैच रमैं ।।९।।

छंद छप्पय

रांमत चाळक में जकी गति लखी न जावे ।
इन्द्र करत आदेस परमगत लखी न पावे ।।
सेस नवावत सीस धिनो नूत तूझ सकत्ती ।
आई आदि अनादि पुरस पुराण प्रकत्ती ।।
सुर असुर पार पावैं नहीं आप बड़ा छो ईसुरी ।
चाळक देवी चरत चवै जयो मात जोगेसुरी ।।१०।।

—किरपाराम खिड़िया री कह्यौ

गीत करणीजी रो

सदा प्रसन्न न्व सदन सीतळ नजर सुपेरी, मन वछत करै हेकं लहर माय ।
न देखै भाव भगनी दिमा करनळा, मनातन घरम लेखै कर साय ॥१॥

निवारण विघन सु प्रमन्न घणी रहै नता, सोगणी मुवघ सब दिन सदा तो ।
ताकवा बधावै प्रभत म्हिमा तणी, निभावै घणीव्रत तणो नातो ॥२॥

जुडै गज गाम औसाप सारै जगत, भुवन पुत्र सपत अणमाप भाळो ।
जगदवा सदन धारै नही जाप जप, एक चित रखै धणियाप आळो ॥३॥

वीसहथ सहायक वणी करही वगत, मावडी मदामद जोग माया ।
घटाळी रखै अठजाम चौसट घडी, छोरुवा लीवडी तणी छाया ॥४॥

—अज्ञात

गीत ओसियां राय रो

दीपै देहरे विम्मरे गिरे सिक्वरे वसतीदेवी, सरवरे तरे भरे नीजरे समत्थ ।
वर वरे नवे पूरे चात्तरे रमती वाळा, विसतरे सुरे नरे नागै वीसहत्थ ॥१॥

अवळा प्रवळा कळा अकाळा सकळा ओपै, रोप इळा पाव खिळा वळवळा रेस ।
परघळा भेळा खेलै बीर टोळा लियै पास, दूमगळा गमै रमै मगळा त्रिदेस ॥२॥

साजती स्निगार सोळै रम झोळै अग सझी, घूमती सकळ पाय घुघरा घमक ।
घूजती घमसा रागा जती गग्गन धूज, चूरती दईता चक्क च्यारु चमक ॥३॥

जणणणी त्रिदेवा जागी जागवै त्रिजाग जाया, कमाया श्रीजोग माया करती कीलोळ
त्रिपुराया त्रिवेगुणा तारणी त्रिलोक ताया, उपाया पाया माया आपरै ईलोळ ॥४॥

वाचती अगम्म वेद नाचती वजाडै वीण, राचती सुरग अग नाचती रसाळ ।
साचती मिळ ती सता माचती सुरा समेळी, आचती असुरा तोडै वदणा त्रिकाळ ॥५॥

विज्जडा असता वाटे पाचमुग्ग पीठ वैठी, सामणो चौसट सता सामणी साहाय ।
छत्रपति रिद्ध देतो सुमति प्रकत्ति छाजै, राजै सदा अमी नमो ओसिया री राय ॥६॥

—अज्ञात

छंद माताजी रौ — अ ट

बुद्ध विमळ करणी विबुध बरणी रूप रमणी निरखियै ।
वर दियण माळा पदम प्रवाळा मंत्र माळा हरखियै ।।
थिर थांन थांभां अतीय अचंभा रूप रंभा भळकती ।
भजियै भवानी जगत जांनी धी राजरांणी सरस्वती ।।१।।

सुर राज सेवत देख देवत पदम पेखत आसनं ।
सुखदाय सूरत माय मूरत दोहग दुक्ख निवारनं ।।
त्रिहुं लोक तारण विघन वारण धरा धारक धर पती ।
भजियै भवानी जगत जांनी धी राजरांणी सरस्वती ।।२।।

कवियां के पति लाख श्रीपति अवनी ओपति ईस्वरी ।
संता सूधारण विघन वारण मदन तारण तू खरी ।।
खळ दळां खंडण छिद्र छांडण दुस्ट डंडण नर पती ।
भजियै भवानी जगत जांनी धी राजरांणी सरस्वती ।।३।।

सिव सकत सांची रंग राची अन्य अजाची जोगणी ।
मद भरत मत्ता तुरत तत्ता धत्त धत्ता जोगणी ।।
जीहां जपंती मन रमंत धवळ दंती वर सती ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राजरांणी सरस्वती ।।४।।

भणणाट भल्लर धू धंमी धप मप रसंमी रवि रवि वज्जये ।
थथुकी थक्कड़ दंथ थुंक्की थिरदंथ थुक्की थगडंद गंज्जये ।।
द्रांद्रां की द्रांद्रां रसंमी द्रांद्रां तांतां की तांतां दमकती ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राज रांणी सरस्वती ।।५।।

रमि रमकी रिम रिम भू भूंमी भमभम ठमक ठम पग नच्चये ।
घम धमकी धमधम ध्रुणूकी घ्रणघ्रण अती अगम नृत्य नच्चये ।।
तत थेई यत्तत्ता मांन मत्ता अचळ आंनन ईस्वरी ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राजरांणी सरस्वती ।।६।।

जळथळां जणणी पवन पांणी वनां वखांणी वीजळी ।
गिरवरां गाहण वाघ वाहण सरप साहण सीतळी ।।

हद हाथ थारी हथा हजारी धनुख धारी भगवती ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राज राणी सरस्वती ॥७॥

चक्र चालण झटक झालण ग्रभ गाळण गाजणी ।
विडदाव धारण महख मारण दुख दाळिद्र भाजणी ॥
चरचीयै चडी खळा खडी मुदत मडी मूळक्ती ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राज राणी भगवती ॥८॥

कवि करै अस्टक काटि कस्टक पिसुण पीसण कीज्जियै ।
मन मौलि माडत पढत हू पाडत आइ आखडत दखियै ॥
दयादेव सूरी सुरा सेवी नित्य नवेली जय भगवत्ती ।
भजियै भवानी जगत जानी धी राज राणी सरस्वती ॥९॥

—अज्ञात

गीत चाळकराय रो

चरै मार देसा करै डसण विध चौगुणी, खसण विध नौगुणी धरै खूना ।
सौगुणी चितारै छाक चढी असुर सू, जोगणी चितारै वैर जूना ॥१॥

आज म्हैं आविया माडि पग अवरकै, डबर के छाडि पग मती डागो ।
दीस हथि जबर कै घणो जुग देखसी, बीस हथि जबर के धर्क वागो ॥२॥

कवल कुतळावियो जेम खाटक करै, जिको वतळावियो केम जावे ।
मात वतळावियो वोलियो मात सू, मेछ पतळावियो कठै मावे ॥३॥

मात हिंगळाज सू अकर चढि मकरियो, चकर चढि हकरियो रुधर चिगतो ।
विकट चसमाण जमदूत गत वकरियो, डकरियो गजब असमाण डिगतो ॥४॥

हाक तव लाख रौहेळ जिम हुडकियौ, थिरत भव लाख रो रूप थायो ।
आप सिव लाख रो रूप कर आहुडी, यतै नव लाख रो रूप आयो ॥५॥

मेछ दत कडड नासा ठडडहडड मुख, ब्रह्मड पुड धडड गाजिगडड वागो ।
धूतपति तनक जिम जडड खचि सूळवर, भूतपति धनक जिम वडड भागो ॥६॥

पाटपति तणा ब्रिद किसू 'केहर' पुण, थाटपति तणा ब्रिद सयर थाया ।
चाळका दैत नै भाजियो रवेची, रूप थारा नमो चाळराया ॥७॥

—कवि केहर रो कह्यो

देवीजी रा सोरठा

ऊभी कुंत उलाळ, भूखी तूं भैंसा भखण ।
पग सातवैं पताळ, ब्रमंहड माथो बीसहथ ॥१॥

सौ भैंसा हुड़ लाख, हेकण छाक अरोगिया ।
पेट तणां तोई पाख, वाखां लागा बीसहथ ॥२॥

थरहर अंबर थाय, धरहरती धूजै धरा ।
पहरंतां तव पांय, बागा नेवर बीसहथ ॥३॥

पग डूलै दिग्पाळ, हाळ फाळ भूलै हसत ।
पीडै नाग पताळ, बाघ चढ़ै जद बीसहथ ॥४॥

करनादे केई बार, मन मांही कीधो मतो ।
हुकम बिना हिकबार, देसांणो दीठौ नहीं ॥५॥

जिण दिन ओयण जाय, स्रवणे बाजा सांभळूं ।
सो दिन धिन सुर राम, मह ऊगो मेहासदू ॥६॥

दिन पलटै पलटै दुनी, पलटै सोह परवार ।
मेहाई पलटौ मती, बाई थे उण बार ॥७॥

करनी तूं केदार, करनी तूं बद्री कमळ ।
है देवी हरिद्वार, मथुरा तूं मेहासदू ॥८॥

माता तूं ही माय, पिता तू ही परमेसरी ।
सखा तूं ही सुरराय, बंधव तूं ही बीसहथ ॥९॥

करनी तूं करतार, ओर न कोई आसरो ।
सरणाई साधार, मोटो बळ मेहासदू ॥१०॥

थळवट अळग थईह, कुळवट ब्रद भूली किनां ।
करनी रूठै गईह, मो बिरियां मेहासदू ॥११॥

देवी दामड़ियो कहै, राज बड़ा या रीत ।
कोड़ गुनां छोरू करै, महर करै माईत ॥१२॥

गग जमन उलटी वहे, व्है गिरमेर गरक्क।
करनी ऊपर नह करै, ऊगै नाहि अरक्क ॥१३॥

करनी कर काबोह, मढ माही मेहासदू।
अळगा मू आवोह, वर्णं किणी विध वीसहथ ॥१४॥

आई कीजै ऊदरा, मेहाजी मढ माय।
किणक चुगा कोठार री, पहुचा रहा पडछाय ॥१५॥

देवी थारी दाय, राजी व्है ज्यूं राखजे।
मोटो सरणो माय, मैं लीधो मेहासदू ॥१६॥

—हिंगळाजदान कविया रा कह्या

गीत चण्डिकादेवी रो

ओ३म नमस्ते चडका चद्रभाळ री नवीन आभा,
छटा मणि माळ री भुजाटा रही छाय।
आरोहा लकाळ-री क सत्रां धू झाळ री आग,
रमा रूप जयो काछ पचाळ री राय ॥१॥

नाहरा नैं करै जेर जाहरा वनोज नैणी,
प्रचा दोय राहरा नै देर लेणी पेस।
दिली ईस जिसा फेर नरा नैं उथाप दैणी,
दीनानाथ सैणी बीस करा नैं आदेस ॥२॥

उभै रूप धारायणी साचेली जिहान आखै,
तारायणी सिळा धू नाजेली निरतोद।
पारायणी प्रवाडा आढेली दसा दैणपाता,
नारायणी रूप निमो काछेली आनाद ॥३॥

कळू माझ हेम पथ डोहिता सुभद्रा काळी,
निहाळी सोहिता नैत्र जाळी खळा नाम।
आसुराण रोहिता दोहिता देवी 'वेद' वाळी,
नोहिता अभेद वाळो डाढाळी नमाम ॥४॥

—नवलजी लाळस रो कह्यो

गीत गवर माता रौ

वरस आद दिन चैतरै मास नर चत्रवरण, ध्यान जगमात निज रूप ध्यावै ।
देव वीसर अवर तूझ जगदंबका, गवर ईसर तणा गीत गावै ॥१॥

त्रहूं पुर सहर गांवां पुरां चहूं तरफ, नाग देवां नरां भाव भजनेव ।
नवरता सगत नवधा भगत हुवै नित, दुलहणी दुलह देवी महादेव ॥२॥

पूज नवरात जगमात सेवा परम, प्रगट त्रहूं लोक जन मन वचन प्रीत ।
ईसां नह देव किण ही वळे अवर रा, गवर रा त्रिपुर उछरंग उमंग गीत ॥३॥

—चैनकरण सांदू रौ कह्यौ

गीत सैणलदेवी रौ

आई सैणाळ जुढ़ियै थह ऊभी, खाग भुजां बळ खंडी ।
प्रगळ हवै नव नेवज पूजा, चाचर भूचर चंडी ॥१॥

खप्पर भरै सत्रुवां पळ खाचण, हाथ त्रसूळ हलावै ।
सेवग साद सुणतांणी, ऊपर करवा आवै ॥२॥

विखमा डमरू डाक वजंती, वाघ चढ़ी वेदाई ।
दोखी दुख पावै जिण दीठां, सुख पावै सरणाई ॥३॥

पार न लाधै सेस प्रवाड़ां, परचां काछ पचाळी ।
कोड़ां नै रूठी महाकोड़ां, तूठी हाथां - ताळी ॥४॥

भेटंतां दुख दाळद भाजै, बांय ग्रहां ज्यां वेली ।
नत्थी सांची प्रीत निवाजै, क्रीत सुणै काछेली ॥५॥

—नाथूराम लाळस रौ कह्यौ

गीत सैणलदेवी रौ

भूजां साहियां त्रसूळ भूल सगत्यां स तेज भांण,
केवियां केवांण पांण हटावै कंकाळ ।
आरोधिया आवै ताळ तीसरी ईसरी आप,
कीजै माहेस्वरी रिच्छा आरोटा लंकाळ ॥१॥

अलकार वाजणा कदमा कटि सध आभा,
जटी मौळी वाम अगा पौसाका जरीस।
खभी हेम अगोटा खूगटी जडी वज्र खासा,
गाढी रोम लट्टी सीम चुट्टी नागरीस ॥२॥

अगा अक वाळा भाळ विसाला सुढाळा मध्य,
चचरीक ब्रूह लाला पकती स चूप।
वक्र मानू नाळा नासका कीर कोकवाणी,
रूपै सुराराणी हस चाळा कूभी रूप ॥३॥

रभ जगा तारकेस सीला घू रमता रास,
कळा साठ वेद साथ जोगणी कुवार।
प्रकतीस दूण पक्ष वीर स्याम स्वेत पास,
साजै तान गान ग्राम रागनी सवार ॥४॥

पधारचा वेदाई पथ हेमाळै गळै'वा पड,
गोरी पातसाह राज गभायो गहीर।
पच तुण्ड पीठ घू पीरोज वीराजै पान,
मही दूनी भरै साख चद्रमा महीर ॥५॥

सैणाला कवेसा पाय सासणा वधार सीगो,
हेळा हाथी ऊठ वाप दीरावो हमेस।
ऊकती स मायो आछी जोड बीस आच वाळी,
कहै 'पनो' काटो काळी कुबद्दा कळै'स ॥६॥

—पन्नाराम मोतीसर रो कह्यो

गीत श्री करणीजी री स्तुति रो

ऊडा पाणिया नदिया उतरता, झड मडिया खग झाटा।
सगती कीजै साय सेवगा, वहता घाटा - वाटा ॥१॥

मेवासा माझळ ठग मिळिया, नाहर आया नैडा।
कुसळ आपरा राखै करणी, वैठा सायर वैडा ॥२॥

वैरी विखधर सरब निवारै, बळती लाय बुझावै ।
लोवड़ियाळ तणां भुज लांबा, आंच न दासां आवै ॥३॥

डाकण भूत कुवै पग डिगतां, कड़की बीज आकासां ।
करतां याद मेहा सुत करणी, देव उबेळी दासां ॥४॥

वड़ावड़ी किनियाणी बांका, पोख पूजगां पाळै ।
देस वदेस मांय डाढ़ाळी, राज - दरबार रुखाळै ॥५॥

—कविराजा बांकीदास आसिया रो कह्यो

गीत माताजी रौ

अखंडी ब्रह्मंडी चंडी आनंदी अनूप आई,
महामाई सुरां राई नमौ तोनैं माय ।
चिरत्ताळी महाकाळी मत्तवाळी चित्तचोखी,
अनोखी सुरंगी चंगी अनंगी सदाय । १॥

हसंती खेलंती खूब झेलंती अकास हाथै,
रमंती भमंती माय करै सुरां राज ।
सपतां पाताळां सातां समंदां सुरंगी सांची,
परबतां अनड़ां पाड़ै सेत बंधै पाज ॥२॥

सगती भगती थांरी संता रै सदाई सोहे,
कड़ाकड़ कूटै दांणव कंटकां री काळ ।
भमाया किताई भीम रमाया अनेक रंभा,
जुगे जुग जंग जीत काटिया जंजाळ ॥३॥

दूख री दाटणी देवी सूख री समाप सदा,
ज्योत री उद्योत अंबा रंभा रूप जांण ।
कूटीया किताई काळ विकराळ रूप कियै,
भमायै भांजिया भैसा भला भुजां पांण ॥४॥

जोर री सजोर जोर सुवध री दाता जांणूं,
लसकरां जाडी जोड़ लियां वीर लार ।

अरज सुणीजो आई दीनता आधीन आनै,
'पनीयो' भोजग भणै उतारै बेडो पार ॥५॥

—पन्नाराम भोजग रो कह्यो

अथ चामुंडा जी री गीत

आई आगड गिडदा आद जागिड गडदा जोगमाया,
खागड गिडदा लिया खेला जोगणिया रे खूड ।
भागड गिडदा दैत भांति थागड गिडदा सभु थान,
गागड गिडद्दा गाजे देवी चामडा गड्ड ॥१॥

वाजै जागिड गिडदा वाजा नाचै नागड गिडदा वीर,
सिंघ चढी वागिड गिडदा सोहे सुरा राय ।
फागड गिडदा नट्ट फाळ नागड गिडदा वीर,
मागड गिडदा सैलिया सू खेले महमाय ।२॥

सागड गिडदा सीस छत्र डागड गिडदा डेरू डहे,
लागड गिडदा सिंघ सोहे सोरम लगाय ।
रागड गिडदा रमझोळ घागड गिडदा घमरोळ,
धागड गिडदा घमरौळ रम सुराराय ॥३॥

सागड गिडदा सेव सत हागड गिडदा हूक हूंत,
पागड गिडदा पूजै पाटै चागड गिडदा चैव ।
कागड गिडदा कवी हदा हागड गिडदा पूरै हाम,
कागड गिडदा कुंभ चौर काटै भला दैव ॥४॥

—अज्ञात

गीत माताजी री

श्री आदेव अरी साज गिरवरा बैठी गाज भेंटिया भावट भाज,
जोगणी जुगा लिहाज राखरा अचेह राज ।
लोपी सूर नरा लाज अमरे करी आवाज,
(तो) हीगळाज हीगळाज हींगळाज हीगळाज ॥१॥

मोड़वां दयत्ता मत्थ तोले खाग ऊभी तत्थ दोयणां दियण दत्थ,
कळकळै वीर कत्थ चौसठ जोगणी सत्थ।
राखसां पीयण रत्त खड़ै सिंघ आव खेत्र,
(तो) बीसहत्थ बीसहत्थ बीसहत्थ बीसहत्थ ॥२॥

बीस भुजां वार दार आवध साहे अपार ताकुवां उतारी तार,
म्लेछां सिरै पड़ै मार सात्रवां करै सिंघार।
भूम्र चा उतारै भार करै देव जै जै कार,
(तो) ऊंकार ऊंकार ऊंकार ऊंकार ॥३॥

लागुआं पगे लगाय घुरावै नीसांण धाय जैत रा डंका वजाय,
थर ज्यां संपत थाय मंडपे पधारी माय सेवगां सदा सहाय।
कमी नांह रखै काय 'पदम्मो' प्रणंमे पाय,
(तो) सुरांराय सुरांराय सुरांराय सुरांराय ॥४॥

—पदमै रो कह्यौ

खेजड़लेराय री नींसाणी

खेजड़ले थांन भवांनी हुंदा है नगर कोट दीपंदा है।
सब देवां वंदन गवरी वंदन सूंडाळा वणंदा है॥

अर गौरा काळा खेत्रपाळा मतवाळा सोहंदा है।
पाहाड़ वडाळा टोळा काळा अंबर सूं लागंदा है॥

तस पर देवाला पथरू लाला सींगी कांम जड़ंदा है।
अर रंग सुरंगी फरहर संगी धजां सीस लहकंदा है॥

वंका पाहाड़ां अरड सूं झाड़ां का गोड़ा कहंदा है।
पथर री चौकी जड़ी अनौखी देवळ गैब दीसंदा है॥

वड़े माथाळा लंक लंकाळा नाहर सीस गूंजंदा है।
गवरी अरधंगा माथै गंगा संकरजी सोहंदा है॥

जिहां हनमंता महाबळवंता लंका पार भूलंदा है।
लखमीनारायण जगत तारायण दरसण सो दीसंदा है॥

चौसठी हदा जोगण सहा अखाडा नाच नचदा है।
देख जिहाना होय हैगना अधर गिडा गिरदा है॥

सर्व चौसठी हेकरण भटा टोळा गोळ गंडादा है।
चौसठी ऊपर तुड गह्वर गगा नीर भरदा है॥

खोभाई गोफा गिरवर गुफा साधक सिद्ध रहदा है।
दस नाम सन्यासी वनवासी तपसी तहा तापदा है॥

अलूरण आहारी दूधाधारी ध्यानी ध्यान धरदा है।
नवनाथा धूरणी धूखै धूणी सीगी नाद पूरदा है॥

पहिरें चौतारा सोळ अगारा मोती हार भूलदा है।
रति सीदुरी मागं पूरी पीळी चूड करदा है॥

सोने दी वेला हार हमेळा वाळी वीच फूलदा है।
दुलडी खग वाळा मोहरण माळा पमाळ पोवदा है॥

बाजू वद वाळा रेसम काळा हीरा लाल भडदा है।
सोहे सोसाळा चदन माळा काळा नाग भूलदा है॥

खगवाळी चौकी हरडइ अनौखी हीरा जोति जडदा है।
सगती सेवा वडी देवा तेत्रीसू वसदा है॥

निवाज भवानी धिन धरिणयाणी देवळ खूव दीसदा है।
नवरत्ती हदा पूजरण हदा मेळा पूर भरदा है॥

सीरा सुवाळी घेवर थाळी मलिदा भोग चढदा है।
वासूधी बडार सूधी अगर धूपेडा धूखदा है॥

चौरी गिरीया जव की भरिया ज्वाळा होम जगदा है।
भवानी कथा पुस्तक हथा दुरगा पाठ बचदा है॥

जरी हदा भग्गा चीर सुचगा वागा खूब वरणदा है।
सोना का छनर मोती भल्लर हीरा लाल जडदा है॥

आनन ऊपर मेघाडवर सूरज ही भलकदा है।
केसर कस्तूरी चदन चूरी चडी तू चरचदा है॥

मूरती हुंदा ए आनन्दा नूर तिहां वरसंदा है।
छडावै छती नती खती मेंहखा महिख चडंदा है ।।

जिहां चाचर भूंचर खगां खप्पर चूरमां चढंदा है।
जिहां हाथां खपर जोगिण जहर रतां भर पीवंदा है ।।

भ्रहकै करनाळी झंझर ताळी त्रंबाळू वाजंदा है।
वाजै सरणाई ताल सहाई घाई ढोल घूरंदा है ।।

नंदा सुर नंदा संख सबद्दा झालरी झणकंदा है।
नारद्दा संकर अम्मर अच्छर आरती करंदा है ।।

ॐ आनब अती वनसपती भार अढ़ार भरंदा है।
खैरी धूवाळी सेर सूझाळी कैरी बोर करंदा है ।।

वड़ तडोवर रुखां डंब्रर परण सु सोभंदा है।
सो भूंवां झूलै फूलां फूलै फूलां सूं फूलंदा है ।।

भवानी हुंदा वाग वनंदा मौरां ले मौरंदा है।
काळै पीळै रातै नीलै भमर तिहां गूंजंदा है ।।

पपीया मोरा अरी ससि लोरा कोकिला बोलंदा है।
पंखी पारेवा अखरतेवा टुहकें टुहक करंदा है ।।

चौरासी लक्खां जीवण जक्खां कांनन में वसंदा है।
सौ कोसां हुंदा फूलां पंथ फूलंदा जाती जात मिलंदा है ।।

वंस खटतीस छप्पन छत्तीसी परदेसी वसंदा है।
विनंदा मेला राता धौळा आफू खेत फूलंदा है ।।

वडे भूपती जत्ती सत्ती मिहरी मरद मिलंदा है।
तिहां मेळ मिळंदा रूप वनंदा सकती सोहंदा है ।।

एही उगती सों वीनती खाना-जाद कहंदा है।
नीसांणी गूधर 'मान' कवीसर भवानी भणंदा है ।।१।।

—मान कवीसर री कही

छंद चावण्डाजी रो

सिर मुगट राजत कनक माहे करणपट छिव्र देत हैं ।
लीलाट उदत विसाल वाहें द्रिग कपाळग सहेत है ।।
वर नासका नथ अधर मुसकत हरख जीन रुखवाळणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आप दरसण कारणे ।।१।।

वळ भुजा कमळ अनाळ चपक डाळ उदभुन राज हैं ।
कर चमतक्रनी अति ललित भूमण अमल विवध विराज हैं ।।
गळहार नवसर उअर काचू कुसम माळ सु धारणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आय दरसण कारणे ।।२।।

नवरग लेहगो चरण नूपर वजत छिनछिन सुर वरे ।
तव मन मूनीस खग पुज गुजत वननननननन गजरे ।।
अनेक सूर मयक केअन माय केनक वारणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आप दरसण कारणे ।।३।।

नृित रत भैरव अगर नटवर ठिमक ठिमठिम पग धरे ।
तव बजत गुधरु झननननननन गजरे ।।
जग चद आनद कद मूरत विघन असुख विडारणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आप दरसण कारणे ।।४।।

घन घोर नोपत बजत मृदग न ढोल डमकत बोल हो ।
डफ नाळ डमरू झीझ मोर चग ताल वोल अमोल हो ।।
रिणसिंघ जत्रत पोनाळ वरघू सखनाद उचारणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आप दरसण कारणे ।।५।।

तुररी र भैरव और सहनाई करनाळ सीगो आरवो ।
तदूर तादुर और श्रीमटळ ढोलकी एक्तारवो ।।
वीना र वसी ताल से तनन तनन ततकारणे ।
चामुड मात प्रचड व्रिदधर आप दरसण कारणे ।।६।।

खमायची रबाव पूगी जग अलगोजा लवै ।
झणणाट भल्लर घट ठननननननन बोलवै ।।

छत्तीस बाजा बजत निसदिन दनुंत देईत विडारणे ।
चामुंड मात प्रचंड ब्रिदधर आप दरसण कारणे ॥७॥

तोय दरस कीधां मात चामुंड कोट कळिमस जात है ।
सिध अष्ट नव निध होत प्रापत हिय अति हरखात है ॥
चारों पदारथ देह अंबा कवि 'किसोर' उद्धारणे ।
चामुंड मात प्रचंड ब्रिदधर आप दरसण कारणे ॥८॥

कळस रौ दूहौ

ऐह अष्टक अंबा तणा, श्रवणे निस दिन सोय ।
विघन कदै व्यापै नहीं, हित मन वंछित होय ॥९॥

—कवि किसोर सेवग रौ कह्यौ

गरवत नीसांणी माताजी री

सिमरूं देवी सारदा, गणपत गणेसर ।
एक रदन गजवदन, ओप सिन्दूर विणेसिर ॥१॥

गवर मात सिव तात, सिध पूजंत सुरेसर ।
मद सुगन्ध ऊपर भमै, मद मत्त मधूकर ॥२॥

दत्त उबकत्ती मदमत्ती, जत्ती जोगैसर ।
गणपति छत्ती गुणां, ग्रभति जग ऊपर ॥३॥

माल मवत्ती सरस्वती, बजती बीणा कर ।
गणपत सुरसत गहर, ग्यान दीजै उर अन्दर ॥४॥

करनी जस उज्जवल, करण आपो सुभ अख्खर ।
हिंगळाज जग अवतरे, आवड़ अप्रंपर ॥५॥

सेलायन्त सिधारियो, दीनी सूमां धर ।
हेक चळू भर हाकड़ौ, सौखे सरोवर ॥६॥

मारै राकस तेमड़ौ, परठै मंढ ऊपर ।
आवड़ आय अवतरे, करनल्ल कृपा कर ॥७॥

सेसै ने पायो मही, सत बीस समोरस ।
राव लखै तद वीजळी, आई सर ऊपर ॥८॥

जा अम्बा लीधो जनम, सोयाप मुरद्धर ।
परवाडो कीधो पहल, करनल भूना कर ॥९॥

समरथ टाळी ईस्वरी, कर हूंत अया कर ।
किलमा ग्रहियो राव नै, जडिया पग जभर ॥१०॥

करनी सेवो काढियो, ग्रह अच लाई घर ।
ओ परवाडो ईस्वरी, उज्जवल यळ ऊपर ॥११॥

रावळ पीरा लाख दळ, लग पीठ लसक्कर ।
हार गया भुज पीर ही, वलिया वाई कर ॥१२॥

पड सौंपो प्रथमाद मे, तिण काळ सरोवर ।
गाय चरावण वासते, धाये जगळवर ॥१३॥

वीड मिळन्तो देखकर, वोले कानो वर ।
सुभड दोय तेडे सताव, करनाहर निड्डर ॥१४॥

अरजन वीजो आविया, धिक क्रोध मनेकर ।
पाणी अरके खूह पर, कटवरत क्रिरमर ॥१५॥

सीह हुआ मेहासदू, अडिया भुज अम्बर ।
वीजो अरज्जन विहडिया, सादा भर खप्पर ॥१६॥

इत्तरै कानो आवियो, कर क्रोध भयकर ।
राव ज आखै चारणी, छोडो म्हारो घर ॥१७॥

करनी मुख कहियो करड, रखो गाडा पर ।
करड कियो गिरमेर कह, ब्रह्मड समा भर ॥१८॥

महग्ना हाथी मोकल्या, जोपै जोरावर ।
उठै न कोइ उपाय से, निमरचा सक्यो नर ॥१९॥

तद कानो बोल्यो तमक, मत करणा मक्कर ।
वीरो टणुपण देखता, नेहे सोम चढे नर ॥२०॥

करनल परवाड़ो कियो, जांणै जग जाहर।
मारे कानां मूढ़ नै, रिणमल राजा कर ॥२१॥

रीझ दियो रिणमल ने, नव कोटि नभ्रे नर।
राव मुखां इम रट्टियो, कमधज जोड़े कर ॥२२॥

आप विराजो ईस्वरी, थरपो मंढ़ सद्धर।
दस गांवां सूं देसणोक, नीम कीधो निज्जर ॥२३॥

द्वादस कोस म्रजाद है, ओवण तण झंगर।
सरणे आवै जगत सो, प्रतपाळ करै पर ॥२४॥

सूके काठ संजोइयो, भुज मांट मही भर।
नीलो तर ह्वो नेहड़ी, बणियो गहडम्बर ॥२५॥

जळ मीठो जाहर जगत, दीठो देपासर।
धारा गंग तंरग की, आई जळ अन्दर ॥२६॥

खाखण सुत ले आविया, श्रुग हूंत मही सिर।
देवायत देवात रै, धर लीध दगोकर ॥२७॥

श्राप दियो तद ईस्वरी, घट एक रयो घर।
सींचांरै पड़ते सबद, कीधो मझ कोहर ॥२८॥

आयल आप उबारस्यो, मिळियो ओ मौसर।
वरत संधी तद नाग बण, सुझ गाढै सध्धर ॥२९॥

वेड़ी साह समंद विच, डूबत्त लागो डर।
कहियो साहूकार यूँ, करनी ऊपर कर ॥३०॥

गाय दुहंतां आंगणै, सुझ साह तरै सर।
हाथ बधारै बीसहथ, आसत थळ ऊपर ॥३१॥

बीक निवाजै बीसहथ, थळवट दी थाहर।
जिण बीका रै वंस में, जैतौ जोरावर ॥३२॥

धर पतसाही धूपट्टै, बळ पाण बहादर।
आयो कमरो पातसाह, सझ सेन्या आसुर ॥३३॥

जैत पुकारै जोगणी, करनी ऊपर कर।
पचीस भडा सू राव नै, वर दोध ब्रिदा कर ॥३४॥

सगत राव सागै हुआ, कर झाल किरम्मर।
भागो कमरो पातसाह, उडिया रिण आसुर ॥३५॥

किरण्या खोसै किलम रौ, परठै खेजड पर।
किरणे रो खेजड कियो, जाणे जग जाहर ॥३६॥

अगज नमाणो आप वळ, थरपै गढ थाहर।
अममल दळ नाहर जिही, अब राखै ऊपर ॥३७॥

अब तो सरणै आवियो, वेगी वाहर कर।
ब्रह्माणी पारवती, गगा गोदावर ॥३८॥

सात सती पुरिया सिरै, सातो पुरिया सिर।
तूं त्रिहु लोक उपावणी, अहुवे जग ऊपर ॥३९॥

आप 'मनाणै' आविया, निरभै कर नगर।
'झूझै' नीसाणी कही, मुझ सीस मया कर ॥४०॥

दस पीढी सू रावळो, रहियो यो ऊपर।
सो जस करनी मेह तणा, अहु लोका ऊपर ॥४१॥

किनियाणी कळजुग में, दिप रया दिनकर॥

—मनाणे ठाकुर जूझारसिंघ री कही

शक्ति का स्वरूप और उसकी उपासना

—श्री गोपालनारायण बहुरा

जो कुछ हम अपने चारों ओर देखते हैं, सुनते है, जिसका अनुमान करते है अथवा परिकल्पनाएं करते है, वह सब आखिर है क्या ? उसका मूल कारण क्या है, विकास और स्थिति का क्या रहस्य है और अन्त में इसका विलय कैसे, कहाँ हो जाता है ? यह एक अत्यन्त प्राचीन अथवा शाश्वत प्रश्न है—

किं कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाता
जीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः ।
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु
वर्तामहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम् ॥

(श्वेताश्वतरोपनिषत् १-१)

जगत् का कारण क्या है, हम लोगों के जन्म का कारण क्या है, हम कैसे जी रहे हैं, अन्ततोगत्वा हमारी स्थिति कहां है, विपरीत परिस्थितियों में भी हम किस कारण से टिके हुए हैं ? इत्यादि—

वेद से इसका उत्तर मिलता है—

'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्' यह जो कुछ है, हो चुका है और होने जा रहा है वह सब पुरुष ही है। यह पुरुष कौन ? क्या वह अकेला यह सब कुछ कर रहा है ? पुरुष प्रजापति है, वही इस महती सृष्टि-प्रक्रिया में छन्द, स्पन्दन या फड़कन के रूप में अभिव्यक्त होता है ।

'प्रजापतिरेव छन्दोऽभवत्'

(शतपथ ब्रा० ८-२-३-१०)

यह प्रजापति और छन्द क्या है ? कल्पना कीजिए, अतीत के अतीत काल में एक ऐसा युग था जब कुछ भी नहीं था—सर्वत्र अन्धकार था, तम ही तम छाया हुआ था, कोई लक्षण प्रत्यक्ष नहीं था, न कोई जानने वाला था; न कुछ ज्ञात था ।[1] उस प्रशांत अवस्था में, जो एक

---

[1] ताढि नकौ नकौ जदि तावड़, आभ न उडगण अरस न अंनड़ ।
क्रम्म न ध्रम्म नकौ जदि काळी, ब्रहमंड रूप नमौ विगताळी ॥१६॥

—वचनिका

तरगहीन, क्षोभविहीन परमप्रशात अधकार के सागर के समान थी, न जाने कैसे कब, कहां से और क्यो एक प्रकार का स्पन्दन या फडकन पैदा हुई, बुदबुदे से उठे और तरगे उत्पन्न हुई। ये बुदबुदे या केन्द्रबिन्दु व्यक्त हुए अथवा हिरण्यगभ मे से हिरण्यरूप मे प्रकट हुए। हिरण्य का अथ व्यक्त, प्रकाशमान या तेजो-युक्त है और अव्यक्त, अप्रकाशित एव अन्धकारपूण स्थिति का नाम हिरण्यगभ है। वह परम प्रशान्त, अस्पन्द, अज्ञात जो कुछ भी है वही पर ब्रह्म है। उसमे स्वगुणो से युक्त देवात्मशक्ति निगूढ रहती है। देव अर्थात द्युतिमान् स्व प्रकाश, आत्म अर्थात चित् शक्ति और स्वगुण अर्थात् सत्व, रज और तम नामक गुणो का सम्मिलित रूप अचितशक्ति है। जब तक वह परब्रह्म परम प्रशा त रहता है उसम वह शक्ति समान रूप मे व्याप्त रहती है परन्तु स्पन्द के कारण वैषम्यावस्था उत्पन्न होते ही उस शक्ति समुद्र मे असख्य बि दु अथवा केन्द्र व्यक्त होगए। यही शक्ति का उदभव या प्रादुर्भाव कहा जाता है। यही महाशक्ति का उन्मेष है जिससे जगत् का उदय होता है और इसी के निमेष से प्रलय हो जाता है।[१] इसी महाशक्ति को आद्या शक्ति कहते है—इसी से ससार का आदि अथवा आरम्भ होता है।

इस प्रकार जब ब्रह्म मे शक्ति अथवा बल उद्बुद्ध हो जाता है तब सृष्टिक्रम चालू होता है। ब्रह्म की सज्ञा रस है और बल की सज्ञा माया। यह बल रस से कभी पृथक् नही होता किन्तु कभी सुप्त, कभी उदबुद्ध और कभी कुवदरूप (काय करता हुआ) रहता है। जब बल सुप्त रहता है तो वह रस निर्विशेष ब्रह्म कहलाता है। इसका वाणी वणन नही कर सकती मन उस तक पहुच नही पाता।

'यतो वाचो निवतन्ते अप्राप्य मनसा सह'

उद्बुद्ध बलवाला ब्रह्म परात्पर कहलाता है, वह नि सीम होता है। उद्बुद्ध बल जब

---

[१] निमेषो मेषाभ्या प्रलयमुदय याति जगती
तवेत्याहु सन्तो धरणिधरराजन्यतनये।
तदुन्मेषाज्जात जगदिदमशेष प्रलयत
परित्रातु शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दश ॥
(शङ्कराचार्यकृत – आनन्दलहरी)

हे पवतराज हिमालय की पुत्री! सन्तो का मत है कि आपके पलक मारते ही जगत का प्रलय हो जाता है और पलक उघाडते ही उसका उदय हो जाता है। अब की बार दृगो का उन्मेष होने से जो यह ससार बन कर खडा हो गया है वह कही पुन प्रलय के गर्भ मे न समा जाय इसीलिए शायद आपने पलक मारना छोड दिया है!
—देवताओ की आँखें नही झपती है, ऐसी मान्यता है।

अइयो सगति अनत, प्रगट किया सारी प्रथी।
मुदराली मैमत, रातली तूही ज रिधू ॥२२॥
—वचनिका

निःसीम ब्रह्म को ससीम बना देता है, उसे परिच्छिन्न कर देता है तो उसकी संज्ञा पुरुष हो जाती है। इसी पुरुष से जगत् की उत्पत्ति होती है तब वह सत्य अथवा प्रकृति नाम से भी जाना जाता है।

अव्यय पुरुष दिव्य, अमूर्त, अज, अप्राण, अमान, शुभ्र, अक्षर और पर से भी परे होता है। उसमे क्रिया नही होती, वह लिप्त नही होता, न वह कार्य है, न कारण है, उसमें घटा-बढ़ी भी नही होती, परन्तु, रस और वल के संघर्ष के परिणामभूत पुरुष में अनन्त शक्तियां उद्भूत होती है। ज्ञान, वल और क्रिया उसकी स्वाभाविक शक्तियां है—अन्य सभी शक्तियो का इन्ही में अन्तर्भाव हो जाता है। यही शक्तियां संसृति-प्रपञ्च की सर्जिका है—

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते
न तत् समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञानवलक्रिया च॥

(श्वेताश्वतरोपनिषत् ६-८)

अक्षर पुरुष को ही अव्यक्त, पराप्रकृति और परब्रह्म आदि नामों से सम्बोधित करते हैं। इसी प्रकृति के साथ जब पुरुषसंज्ञक ब्रह्म का समन्वय होता है तब विश्व-रचना होती है। 'तत् तु समन्वयात्' अथवा, जैसा गीता में कहा गया है—

'मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते च चराचरम्।' (९-१०)

मुझ अधिष्ठाता के समन्वय से यह प्रकृति चराचर जगत् को पैदा करती है।

सृष्टि में जो कुछ प्रकृष्ट है और जो कुछ सृष्ट हुआ है वह सब प्रकृति ही है—

प्रकृष्टवाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः।
सृष्टौ प्रकृष्टा या देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता॥

इच्छा, ज्ञान और क्रिया इन तीनों महाशक्तियों के प्रतीकरूप में ही पराशक्ति के पाश, अंकुश और धनुप, वाण नामक आयुधों की कल्पना की गई है—

इच्छाशक्तिमयं पाशं अंकुशं ज्ञानरूपिणम्।
क्रियाशक्तिमये वाणधनुषी दधदुज्ज्वलम्॥

पाश इच्छाशक्ति का प्रतीक है। जैसे, मनुष्य पाश में उलझ कर फँसता ही चला जाता है वैसे ही इच्छाशक्ति के फन्दे में पड़ कर वह उलझता जाता है और उसका संसार वढ़ता है; ज्ञान का प्रतीक अंकुश है जो अविद्या अथवा भ्रम की ओर वढ़ते हुए मन-मतंग को सचेत करता है; धनुप और वाण क्रियाशक्ति के नमूने हैं।

इसी आदि प्रकृति से रुद्र, ब्रह्मा और विष्णु की उत्पत्ति है–वही सर्वत्र देदीप्यमान है[1]।

सम्पूर्ण सृष्टि का अन्तर्भाव प्रतिष्ठा, ज्योति और यज्ञनामक शक्तियों के अन्तर्गत हो जाता है। सृष्टि का मूल कारण अक्षर-पुरुष सब से पहले इन्हीं तीन रूपों में विकसित होता है। प्रत्येक पदार्थ में स्थितितत्त्व अथवा शक्ति होती है जिससे उसमें ठहराव या अस्तित्व आता है। इस शक्ति का नाम ब्रह्मा है। 'ब्रह्मा वै सर्वस्य प्रतिष्ठा' वही सृष्टि की मूलाधार शक्ति है। उत्पन्न होने वाली समस्त वस्तुओं में पहले प्रतिष्ठा का जन्म होता है। गतिसमुच्चय का नाम ही प्रतिष्ठा है। गति दो प्रकार की है, एक सब ओर जाने वाली गति, जो सर्वतो दिग्गति कहलाती है और दूसरी दो विपरीत दिशाओं में जाने वाली गति। इन दोनों के समन्वय से स्थिति उत्पन्न होती है। यही प्रथम सृष्टि है। स्थिति के अनन्तर क्रिया उत्पन्न होती है। बीज जब पृथ्वी में ठहर जाता है तदनन्तर अंकुरित होने की क्रिया होती है। प्रतिष्ठा के बाद नाम, रूप और कर्म के सम्बन्ध से वस्तु को स्वरूप प्राप्त होता है अर्थात नाम, रूप और कर्म ही उस वस्तु का भान कराते हैं। यह भांति अथवा ज्योतिशक्ति ही इन्द्र के नाम से अभिहित है। स्वरूप प्राप्त होने के अनन्तर वस्तु में अन्न का आदान और विसर्ग होने लगता है। अन्न से तात्पर्य उस तत्त्व से है जिसके आदान और विसर्ग से प्रतिष्ठा की स्थिति बनी रहती है। जड़ और चेतन सभी अन्न का आदान और विसर्ग करते हैं। जो शक्ति तत्तत्पदार्थ की स्थिति कायम रखने के लिए अन्न को खींचती है उसी का नाम विष्णु है। अन्न की संज्ञा सोम है। अन्न को खींच कर जिसमें आहुति दी जाती है वह अग्नि है। सोम की आहुति से अग्नि की प्रतिष्ठा बनी रहती है वह घोर, उग्र अथवा रुद्र नहीं होता। इस प्रकार विष्णु, सोम और अग्नि नामक शक्तियों के द्वारा यज्ञसृष्टि होती रहती है। यह सृष्टि की तीसरी सीढ़ी है। यही यज्ञ है, विष्णु है— 'यज्ञो वै विष्णु।' इसमें विष्णु, सोम

---

[1] देवी तौ दीवाण, त्रिहु लोक में ताहरौ।
विसन रुद्र ब्रह्माण, आद हि सिरज्या ईसुरी ॥२०॥
—वचनिका

शब्दाना जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत्त केशववासवप्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति ध्रुवम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरतौ ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी
सा त्व काचिदचिन्त्यरूपमहिमा शक्ति परा गीयसे ॥१५॥
—लघुस्तव

हे माता, आप ही शब्दों (शब्दब्रह्म) की जननी है, इसीलिए आप वाग्वादिनी नाम से समस्त भुवनों में विख्यात हैं, विष्णु, ब्रह्मा और इन्द्रादिक सभी शक्तियाँ आप ही से आविर्भूत होती हैं और कल्पान्त में आप ही में लीन हो जाती हैं। आपके रूप और महिमा का ठीक-ठीक चिन्तन करना कठिन है, इसीलिए पराशक्ति के नाम से आपका स्तवन किया जाता है।

और अग्नि-शक्तियो का अन्तर्भाव रहता है । ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, अग्नि और सोम ये पाँचों ही अक्षरब्रह्म की शक्तियाँ है और इनसे पंचाक्षरसृष्टि सभव होती है ।

सोम अन्न है और अग्नि अन्नाद अर्थात् अन्न को खाने वाला । जब तक अन्नाद को अन्न मिलता रहता है वह शान्त रहता है—उसकी शक्ति बनी रहती है । अग्नि ही रुद्र है। सोम-तत्त्व अथवा शक्ति के संयोग से वह शान्त होकर शिव बन जाता है । जब तक अन्न की आहुति नही दी जाती वह अग्नि रुदन करता है इसीलिए रुद्र कहलाता है । अन्नाहुति ही वह शक्ति है जो रुद्र को शिव अर्थात् कल्याणकारक बनाती है । सूर्य साक्षात् अग्नि है, रुद्र है । औषधि, वनस्पति आदि रस-गर्भित पदार्थों से वह अन्न का आहरण करता है तभी तक 'कल्याणो का निधान' बना रहता है । अन्नाहुति बन्द होने पर वह रुद्ररूप बन कर संहारक बन जाता है । तात्पर्य यह है कि शिव का शिवत्व शक्ति के समन्वय पर निर्भर है। अव्यय-पुरुष की चिद्घनशक्ति का ही नाम सोम है । वह विशाल अन्तरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त रहती है, वही इन्द्र, रुद्र, विष्णु, ब्रह्मादि-शक्तियो को स्व-स्वरूप मे कायम रखती है । इसी का नाम महामाया है; यही हिरण्मय सौर-रुद्र को शिव बनाने वाली हैमवती (हिमभाव-सम्पन्ना) उमा है, शक्ति है । इस महाशक्ति का आलम्बन प्राप्त किए बिना ब्रह्म का ज्ञान नही हो सकता ।

ऊपर कह चुके हैं कि चिद्घन अव्ययपुरुष की चित्-शक्ति ही जगत् का कारण है । पञ्चाक्षर-सृष्टि में इन्द्र, अग्नि और सोम इन तीनो देवताओं की समष्टि को शिव-नाम से अभिहित किया जाता है । अग्नि और सोम के योग से ही जगत् बनता है—'अग्नीषोमात्मकं जगत्'—इन्द्र उसको भा, ज्योति अथवा रूप प्रदान करता है । शिव से शक्ति का समन्वय होने पर वह परिणामी हो जाता है । शिव अधिष्ठान है और शक्ति उसकी अधिष्ठात्री; दोनों में अभिन्नता है । शक्ति और शक्तिमान् के मिले हुए विलास का ही परिणाम जगत् है । अकेला ब्रह्म अथवा शिव जगत् का कारण नही हो सकता क्योंकि वह निर्विकार है ।

शक्तिजातं हि संसारं तस्मिन् सति जगत्त्रयम् ।
तस्मिन् क्षीणे जगत् क्षीणं तच्चिकित्स्यं प्रयत्नतः ॥

यह संसार शक्ति का ही कार्य है शक्ति के आविर्भाव से तीनों ही जगत् उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होने पर उनका अभाव हो जाता है अतः उसी शक्ति का चिन्तन करना चाहिए ।

शिव की यह शक्ति दृश्यमात्र जगत् में, प्रत्येक शरीर में और जड़-चेतन-पदार्थ मे विद्यमान है। चेतन की चेतनता और जड़ की जड़ता यही है । यह अव्यक्तरूप से दृश्य-अदृश्य जगत् में व्याप्त है और विश्व में अनेक रूपों में अभिव्यक्त होती हैं, यथा—विष्णुमाया, चेतना, बुद्धि, निद्रा, क्षुधा, छाया, तृष्णा, [illegible] जाति, लज्जा, शान्ति, श्रद्धा, कान्ति, लक्ष्मी,

इत्ति दया, दीप्ति, तुष्टि, पुष्टि, भ्रान्ति आदि ।[1] भक्त भी अपनी अपनी भावनानुसार दुर्गा, महाकाली, महासरस्वती, अन्नपूर्णा, राधा, सीता, श्री नामों में इसी महाशक्ति की आराधना करते हैं, अथवा—

> देशकालपदार्थात्मा यद्वस्तु यथा यथा ।
> तत्तद्रूपेण या भाति तां श्रये संविद कलाम् ।।
> (योगिनीहृदयतन्त्र)

जो देश, काल, पदार्थ और आत्मा भेद से वस्तुओं के पृथक् पृथक् रूपों में व्यक्त होना है – ब्रह्म की उसी संवित्कला[2] का आश्रय ग्रहण करता हूँ।

संवित्कला के सोपाधिक विविध रूप मायाशक्ति के परिणाम हैं। माया अपरिच्छिन्न ब्रह्म को परिच्छिन्न या मापने योग्य-सा बना देती है। जिससे मापा जा सके वह माया अथवा वह परमचैतन्य की नैसर्गिकपूर्णता को आवृत करके जीव को भूलभूलैयाँ में डाल देती है और वह उस स्व स्वरूप की पूर्णता को न पहचानता हुआ मा या (यह वह नहीं है इस भाव) के चक्कर में पड़ जाता है।

पहले कह चुके हैं कि यह सब कुछ 'पुरुष' है। पुरुष से सामान्यरूप में जीव या मनुष्य का ही अर्थ नहीं लेना है अपितु सृष्टि का प्रत्येक कण, सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणु भी चैतन्यरूप पुरुष है जिसका प्रकृतिरूपा शक्ति से एकीभाव है। ब्रह्माण्ड का एक एक रजकण या अणु-परमाणु अपनी परिच्छिन्नता या आणवी चेतना को अभिव्यक्त करता है।

---

[1]
> अन्तः स्थिताप्यखिलजन्तुषु तन्तुरूपा
> विद्योतसे बहिरिहाखिलविश्वरूपा ।
> का भूरि शब्दरचना वचनातिगासि
> दीनं जनं जननि ! मामव निष्प्रपञ्चम ।।
>
> प्रथमा विष्णुमाया च द्वितीया चेतना तथा
> बुद्धिर्निद्रा क्षुधा छाया शक्तितृष्णावथाष्टमी ।।
> क्षान्तिर्जातिस्तथा लज्जा शान्ति श्रद्धा च कान्तिका ।
> लक्ष्मीर्वृत्ति स्मृतिश्चैव दया दीप्तस्तथैव च ।।
> तुष्टि पुष्टिस्तथा माता भ्रान्ति सर्वात्मिका तथा ।।
> (लघुसप्तशती — पृथ्वीधराचार्यकृत)

[2] संवेदन से पूर्व अवस्था में परमनान की संज्ञा 'परा संवित्' होती है। संवेदन अथवा स्पन्दन के अनन्तर प्रापञ्चिक ज्ञान के आधार पर वही संवित विविध कलाओं के रूप में व्यक्त होती है। सदाशिव ईश्वर, रुद्र, विष्णु ब्रह्मा, अग्नि, सोम अथवा चन्द्रमा की सब मिलाकर ६४ कलाएं मानी गई हैं। इनका विवरण 'सौभाग्यरत्नाकर' आदि ग्रन्थों में देखना चाहिए।

लोक मे हम पदार्थो की शक्ति उनकी गति से मापते हैं। गति ही शक्ति है। किसी में चलने फिरने, कार्य करने, भार उठाने, सोचने समझने आदि की जो सामर्थ्य या गति होती है उसको शक्ति कहते है। इसी प्रकार जिनको हम जड़ अथवा अचेतन पदार्थ कहते है उनमें भी किसी स्थान पर टिके रहने, भार को रोकने, स्वयं भारशील होने की शक्ति का माप हम करते है। शक्ति तन्तु रूप से सभी पदार्थो मे अनुस्यूत है। शक्तिरहित पदार्थ का कोई भौतिक अस्तित्व नही रहता। उसका अन्तर्भाव कहाँ, कैसे होता है, यह लम्बा विषय है। हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं और जिसको अचला कहते हैं वह स्वयं गतिमयी है। उसमें गति भी एक तरह की नही कई प्रकार की है। पहले वह अपनी धुरी पर घूमती है और इधर-उधर मडलाती भी रहती है। धुरी पर घूमने के परिणामस्वरूप दिन-रात का लक्ष्य हम करते है परतु मण्डलानी की गति बहुत मंद होती है। पृथ्वी की तीसरी गति सूर्य की परिक्रमा करने की है जिससे हम वर्ष और मास का हिसाब लगाते है। अब सूर्य भी अपने इर्दगिर्द घूमने वाले ग्रहो और उपग्रहो के साथ कृत्तिकामण्डल का चक्कर लगाता है और अभिजित् नक्षत्र की ओर बढता है। सूर्य के चक्कर लगाने वाले ग्रह के रूप में पृथ्वी की यह चौथी गति है। फिर, कृत्तिकामण्डल भी सौर-मण्डल के समान किसी वृहद्ब्रह्माड की परिक्रमा कर रहा है। वह पृथ्वीमाता की पञ्चम गति मानी जा सकती है – परन्तु इससे आगे शक्ति का स्वरूप अज्ञात और अपरिमेय है। वह 'महतो महीयान्' है। इसी प्रकार वृहद्ब्रह्माण्ड से लेकर हमारे पशु, पक्षी, कृमि, कीट, पतंगादि सभी चर पदार्थों के शरीरो का संघटन करने वाले अणु परमाणुओ में भी गति रूप से वही शक्ति व्याप्त है। यही नही पेड़ो में, पत्तियो में, वनस्पति मे भी उसी गति-शक्ति का रूप विद्यमान है। बीज से अंकुर का विस्फोट गति का ही स्पष्ट रूप है, पत्तियां निकलना, शाखाओं में रस सचार होना आदि ऊर्ध्वगति वनस्पति मे स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। मिट्टी, ढेला, पत्थर, लोहपिण्ड आदि को हम निर्जीव और जड़ पदार्थ कहते है परन्तु कण-सहति और अधोगामिनी गति-शक्ति उनमें भी होती है। अन्यथा एक से एक कण कैसे जुड़ा रहता है? ऊपर उछालते ही वह पदार्थ नीचे आ पडता है—यदि पृथ्वी न रोक ले तो और भी नीचे चला जाय। यह उसमे गति-शक्ति नही है तो क्या है?

हमारे शरीर सूक्ष्म-जीवकणो से बने है जिनको 'सैल' या कोष कहते है। प्रत्येक जीव कण में भी गति होती है। ये व्यवस्थित रूप से एक दूसरे के प्रति आकृष्ट और विकृष्ट होते रहते है–इन कणो के अवयव अणु भी सजीव परमाणुओ से बने है। इसी प्रकार जिनको हम जड़ पदार्थ कहते हैं उनका भी विगकलन करने पर कण अणु और परमाणु भी अनेक विद्युत्-कणो से बनता है। विद्युदणु दो प्रकार का होता है—'पॉजिटिव' और 'निगेटिव' इनको धन-अणु और ऋण-अणु कहेगे। प्रत्येक धनाणु के चारो ओर ऋणाणु चक्कर लगाता है। वैज्ञानिको ने इस ऋणाणु की प्रदक्षिणा करने की गति का हिसाब लगाकर बताया है कि वह एक सैकिण्ड में एक लाख अस्सी हजार मील की रफ्तार से गतिमान है। इसी प्रकार प्रत्येक ऋणाणु की प्रदक्षिणा परमाणु करता रहता है जो अणुओ से घिरा हुआ है। जैसे सौरमण्डल है वैसे ही प्रत्येक पिण्ड मे वह परमाणु मण्डल क्रियाशील रहता है। इसीलिए कहा गया है कि 'अण्डे सो पिण्डे' अर्थात् जो कुछ ब्रह्माण्ड में हो रहा है वही सब प्रत्येक पिण्ड

को पहचान कर परमानन्द की अनुभूति करता है। अत शक्तिस्वरूपा प्रकृतिमाता की कृपा-प्राप्ति के लिए ही अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार कर्म करते हुए समस्त भूत उसका अर्चन करते रहते है और उसी के द्वारा मानव को स्व स्वरूपोपलब्धिरूप सिद्धि प्राप्त होती है।[1]

इस प्रकार ज्ञात हुआ कि स्व-स्वरूप का पहचानने को छटपटाते हुए मानव के लिए शक्ति साधना की प्रवृत्ति स्वाभाविक और अनिवार्य है। बिना शक्ति (बल) के आत्मा की उपलब्धि नही हो सकती—

'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य।'

इस रहस्य को ऋषियो ने ध्यान और योग के द्वारा ज्ञात किया।[2] देश और काल भेद से उसके प्रकार और नामादिको मे अन्तर अवश्य दिखाई देता है परन्तु मूल मे समस्त ससार एकमात्र शक्ति के अधीन है और उसी के साधनाराधन मे लगा हुआ है। वेदोपनिषदादिक अत्यन्त प्राचीन साहित्य मे तो अजा आद्याशक्ति आदि रूपो मे शक्ति सन्दर्भ मिलता ही है, बाद के बौद्ध साहित्य मे भी प्रज्ञापारमिता, वज्रवाराही, तारा[3], मणिमेखला[4], करुणा, शून्यता आदि शक्तिरूपिणी देवियो की आराधना का विस्तृत और विशुद्ध विवरण प्राप्त हैं। जैन शासन मे भी प्रत्येक तीर्थङ्कर की शासन-सत्ता तत्तच्छक्ति और सारस्वतकल्प को इष्ट माना गया है। बाइबिल और कुरान आदि मे भी ईश्वर की श्वसनशक्ति को सृष्टि का कारण माना गया है तथा कहा गया है 'आदि सृष्टि मे शक्ति का स्थान प्रमुख है'।[5] इस प्रकार शक्ति की सर्वव्यापकता और सर्वमान्यता स्वयसिद्ध है।

लौकिक अर्थों मे शक्ति की परिभाषा और मान्यता अन्तरग मे एक होते हुए भी बाह्यरूप मे बदलती रही है। वैदिक कर्मकाण्ड युग मे अधिकाधिक यज्ञो का अनुष्ठान करने वाला ही

---

[1] यत प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिद ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवा ॥
(भगवद्गीता)

[2] ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्
देवात्मशक्ति स्वगुणैर्निगूढाम्।
य कारणानि निखिलानि तानि
कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येक ॥
(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

[3] बौद्ध ॐकार अथवा प्रणव को 'तार' कहते हैं, उसकी पत्नी तारा कहलाती है।

[4] समुद्र के तूफानो मे रक्षा करने वाली देवी।

[5] 'खल्क्नामिन् कुल्ले शयीन् जौजैन्।'
(कुरानशरीफ)
अल्लाह पाक ने फरमाया है कि मैंने सब चीजें जोडो के रूप मे पदा की है।

शक्तिशाली समझा जाता था। 'शतक्रतु' 'सहस्रयज्वा' आदि शब्द इसके प्रमाण है। उपनिषदों में ब्रह्मनिष्ठ और आत्मदर्शी का ही बल सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। बाद में 'यस्य बुद्धिर्बल तस्य' की उक्ति प्रयोग में आई और अन्ततो गत्वा 'लाठी जिसकी भैंस' भी चरितार्थ होती रही और होती भी है। वर्तमान में वैज्ञानिक आविष्कारो की होड़ लगी हुई है। अणु-शक्ति की वेगवत्ता और प्रभ्रशिनी क्रिया का दर्शन करके कुछ लोग फूले नही समा रहे हैं और विश्व में सर्वश्रेष्ठता का दावा कर रहे हैं। वस्तुतः यह अनात्मभाव अथवा जड़भाव के ही आधिक्य के कारण है। परन्तु, प्रकृति, आद्याशक्ति, माया, जो भी हम कहें, जगत् का अथवा अपनी सृष्टि का समत्व नष्ट नही होने देती क्योकि उसकी मूल स्थिति अमान, अस्पन्द, अनादि ब्रह्म में निहित है। यह दृश्य, कल्पनीय और कल्पनातीत भी है। विश्व, ब्रह्माण्ड आदि नाम से कहा जाने वाला प्रपञ्च केवल उस ब्रह्म में किञ्चित् स्पन्दमात्र से उद्बुद्ध चित्-शक्ति का विलास है—परन्तु, वह स्वयं और उसमे अन्तर्निहित एकीभूता अनुद्बुद्ध अक्षुब्ध शक्ति उस उद्बुद्ध अश से कितनी बड़ी है यह सहज ही में सोचा जा सकता है। संसार के सभी तथाकथित सृष्टिकर्ता, रक्षक और विनाशक तत्त्व अपना क्षणिक चमत्कार-सा दिखावेगे और भुनगो के समान अस्थायी चमक दिखाकर विलुप्त हो जावेगे,[1] शेष रह जावेगा वह अशेष जिसमें न निमेष है, न उन्मेष।

भगवती शक्ति विश्वजननी है। वह विश्व के हित में समय समय पर, जब भी अविद्या-जन्य क्लेश बढ जाते है तो, अपनी श्रेयस्करी एवं क्लेशहारिणी कलाओ को विकसित करती है और विश्व-व्यापार में अनिष्ट की बाधा को दूर करती है—

इत्थ यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्।
(सप्तशती)

'जब जब दानवों द्वारा बाधा उपस्थित की जायगी तो मैं अवतीर्ण होकर दुष्टो का क्षय करूँगी।' जगज्जननी के इसी कारुण्य में आस्था रखता हुआ मानव भगवती शक्ति की विविध प्रकार से उपासना करता है क्योकि विश्व में स्थिति अथवा सहार के देव-तत्त्वों की हीनता

---

[1] श्रीमच्छङ्कराचार्य ने कहा है—

विरिञ्चिः पञ्चत्त्व व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाश कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।
वितन्द्रा माहेन्द्री विततिरपि सम्मीलितदिशां
महासहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ॥
(सौन्दर्यलहरी)

सृष्टि को विरचने वाला ब्रह्मा पञ्चत्व (मृत्यु) को प्राप्त हो जाता है, हरि (विष्णु) अपने कार्य से विरत हो जाते है (क्रियाहीन होकर समाप्त हो जाते हैं), यमराज का विनाश हो जाता है, कुबेर की मृत्यु हो जाती है, महेन्द्र का समस्त प्रसार और व्यापार आँखे मूंद लेता है (समाप्त हो जाता है), परन्तु हे सति (सत्-शक्ति!) इस महासंहार में भी तुम्हारा पति विहार करता रहता है।

यदि किसी मे आ जाय तो उसे इतना हीन नही माना जाता जितना कि शक्तिहीन होन पर। कोई अपनी स्थिति बनाए रखने मे अथवा शत्रुओ का सहार करने मे आशानुकूल सफल नहीं होता है तो कोई बात नही, परन्तु यदि वह हिम्मत अथवा शक्ति ही खो बैठे तो तिरस्करणीय हो जाता है। किसी को विष्णुहीन या रुद्रहीन वह कर तिरस्कृत नही किया जाता किन्तु यदि वह शक्तिहीन हो गया है तो निकम्मा ही माना जाता है। इसीलिए शक्ति की साधना सतत चलती रहती है।

ससार मे, मुख्यत प्राणियो मे, अस्तित्व के लिए सघर्ष ही प्रधान है। परस्पर विरोधी तत्त्व एक दूसरे को हटा कर या नष्ट कर के अपनी स्थिति को दृढ एव कायम रखने के लिए सघष मे शक्ति का प्रयोग करते हैं और इसी के लिए शक्ति सचय के प्रयत्न करते रहते हैं। देवासुर सग्राम से लेकर आज तक के महायुद्धादिक इसी तथ्य पर आधारित है। मानवो के अन्तर्बाह्य सघष भी इसी के परिणाम हैं। इन सघर्षो मे जहाँ बलप्रयोग के द्वारा अनिष्ट तत्त्वो का अपसारण अथवा विनाश आवश्यक है वहाँ समान एव हितकर तत्त्वो की सहति अथवा उनका सङ्घटन भी परमावश्यक है। इसीलिए सघ को शक्ति कहा गया है। सङ्घ-शक्ति अस्तित्व के लिए एक महान् आवश्यक एव अपरिहार्य गुण है। राज्य, महाराज्य, साम्राज्य, भौज्य आदि की परिकल्पना, वर्ण व्यवस्थानुसार जातिसघटना एव सामाजिक निर्माण आदि भी इसी सङ्घशक्ति की साधना के परिणाम हैं। इसी प्रकार राष्ट्रशक्ति भी उसी चित्‌शक्ति का बाह्य रूप है जो जगत् के मूल मे निवास करती है। देश विशेष मे उत्पन्न हुए जन-समूह की सामाजिक इच्छा शक्ति के पिण्ड का ही नाम राष्ट्र है। गतिशील सावभौम शक्ति की क्रियाशीलता से ही इसकी उत्पत्ति होती है। इसी मे रह कर मानव अपने समाज के माध्यम से अपनी आकाक्षाओ की पूर्ति करता है, आदर्शो की क्रियान्विति के साधन ढूढता है, श्रेयस् सप्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। अपना हित राष्ट्र के हित मे मानता है। राष्ट्र की कीर्ति बढाने मे अपना योग आवश्यक समझता है।[1]

जिस प्रकार अणु सहति से अणुमण्डल और फिर उसके सतत गुणन विस्तार से असख्य सर्गाणुमण्डल, कर्पाणुमण्डल, प्रभाणु मण्डल, नक्षत्र मण्डल, सौर-मण्डल, कृत्तिकामण्डल और विश्व मण्डल आदि बनते हैं वैसे ही प्रत्येक जन के शक्ति कण से जाति, समाज, देश और राष्ट्र का निर्माण होता है। फलत राष्ट्रों की सहति से विश्व-राष्ट्र मण्डल का निर्माण होता है। राष्ट्र के जन जन की विकसित इच्छाशक्ति ही समष्टि रूप मे प्रबुद्ध राष्ट्र शक्ति के नाम से अभिहित होती है। व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र का विकास है। जिस प्रकार व्यक्ति के

---

[1] उपैतु मां देवसख कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे।
[श्रीसूक्त]

हे देवताओं के मित्र अग्नि! मुझे कीर्ति और धन प्राप्त हो। मैं इस राष्ट्र मे उत्पन्न हुआ हूँ अत मुझे ये दोनों सुलभ हों।

विकास का चरमलक्ष्य अपने सत्, चित् और आनन्दमय स्व-स्वरूप की उपलब्धि में है उसी प्रकार राष्ट्र के चरम विकास का लक्ष्य भी सत्य, शिव और सुन्दर की प्राप्ति में निहित है। जिस प्रकार जीव की परिच्छिन्न-शक्ति अव्यक्त, अव्यय, ब्रह्म की आदि-महाशक्ति का ही अंश है उसी प्रकार प्रत्येक जन और तदनु राष्ट्र विश्व-राष्ट्र का अंश है। राष्ट्र को ही शक्ति कहा जाता है। अधिकाधिक शक्ति-सम्पन्न राष्ट्रो को प्रतीक रूप में विश्व-शक्ति (World Power) कहने का उदाहरण सामने हैं। जैसे जैसे व्यक्ति का विकास होता है, वह पूर्व पूर्व संकीर्ण वृत्त से आगे बढ़ता हुआ उत्तरोत्तर वृहद्वृत्त में प्रसार करता है। माता की कोख, गोद, घर के प्राङ्गण, गाव नगर, प्रदेश, देश, राष्ट्र, राष्ट्रमण्डल और विश्व के दायरों को तोड कर वह विकसित होने की इच्छा करता है। पूर्ण-प्रबुद्ध व्यक्ति की मातृ-भावना अपनी माता, भौगोलिक-परिधि में आए हुए मातृ-भूमि या अमुक राष्ट्र नाम से अभिहित भूखण्ड तक ही सीमित नही रहती वह अखिल विश्व की जन्मदात्री अनन्त शक्ति से सम्बद्ध है। परन्तु, इन अन्तर्वृत्तो का कोई महत्त्व ही न हो, यह बात नहीं है। ये सब सीढियाँ है जिनके द्वारा उत्तरोत्तर उच्च स्थिति में पहुँचा जाता है। अतः हमारी शक्ति-उपासना का आध्यात्मिक स्वरूप जहाँ परम चित्-शक्ति के साक्षात्कार के प्रति प्रयत्नशील होने में है वहां लौकिक रूप मे अपने व्यक्तित्व-विकास द्वारा क्रमशः विश्व राष्ट्र में अपनी स्थिति को समझते हुए उसे सुसमृद्ध और समुन्नत बनाने के प्रयत्नों में योगदान के रूप में निहित है।

जब हम किसी पदार्थ अथवा आदर्श को प्राप्त करने की इच्छा करते है तो वह हमारा इष्ट हो जाता है। उसकी प्राप्ति के लिए जिन उपायों, क्रियाओ अथवा साधनों को हम गम्भीरता पूर्वक अपनाते है वही हमारी उपासना के उपकरण बन जाते है। वे हमें हमारे इष्ट के पास ले जाकर बैठा देते है। अतः उपासना का अर्थ वह साधन है जो हमें हमारे इष्ट को प्राप्त कराता है। इष्ट-प्राप्ति के लिए शक्ति का उपयोग आवश्यक होता है, इसलिए जब हम अभीष्ट वस्तु की उपलब्धि के लिए अपने में अन्तर्निहित शक्ति को उद्बुद्ध करने के जो उपाय अथवा साधन अपनाते है वही हमारी शक्ति-साधना है, उपासना है। शारीरिक शक्ति के लिए विविध प्रकार की शारीरिक क्रियाओं और योगासनादि की नियमित साधना की जाती है। इसी प्रकार मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति की सम्प्राप्ति के लिए मन्त्र-जाप और शब्द-साधन आदि आवश्यक होते है। वस्तुतः मन्त्र-साधन भी योग के ही अन्तर्गत माना जाता है। अतः योग-साधन को ही शक्ति-उपासना का मुख्य रूप कहा जाता है। योग के द्वारा हम माया-शक्ति को प्रसन्न करके उसे अपना आवरण हटाने के लिए कृपावती बनाते है और इस साधन के द्वारा जीव का ब्रह्म से योग होना सम्भव होता है अथवा लौकिक अर्थ में हमारे इष्ट से हमारा योग होता है, इसी कारण इसे योगमाया कहते है। यही हमारी समस्त उपलब्धियों के लिए आधार शक्ति है।

इष्ट-प्राप्ति के लिए अनिष्ट तत्त्वों का निवारण भी आवश्यक होता है और उस में भी शक्ति का प्रयोग अनिवार्य है। परस्पर विरोधी शक्तियों के संघर्ष का ही नाम युद्ध है। सृष्टि का प्रत्येक कण और जीव अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहता है। राग, द्वेष, मोह, अस्मिता और अभिनिवेश, ये अविद्या रूपी पञ्च-क्लेश कहलाते है, जो वैराग्य, ज्ञान, ऐश्वर्य

और धर्म-स्वरूप विद्या बुद्धि को आच्छन्न करते रहते हैं। इन्हीं के संघर्ष रूप में आदि से अब तक युद्धादिक होते रहे हैं। 'सप्तशती' का चण्डी-असुर युद्ध वर्णन इसी का प्रतीक है। महिषासुर पशुभाव और क्रोध का द्योतक है, इसी प्रकार धूम्रलोचन और मधु-कैटभ मोह के, चण्ड-मुण्ड अहंकार के, रक्तबीज काम का और शुम्भ निशुम्भ लोभ के मूर्तिमान नमूने हैं। ये सब अविद्या विकार जब जब प्रबल होते हैं तभी देवता या दिव्यभाव आदिशक्ति की शरण में जा कर इनके उत्पात को शान्त करने के लिए प्रार्थना करते है, अविद्या बल के आवरण को हटा कर विद्याबल को प्रबुद्ध करने को सचेष्ट होते हैं। अविद्याजन्य विकार आसुरी सम्पत कहलाते हैं, इनका हनन करके इनको पराविद्या की दैवी सम्पत में परिणत करना ही शक्ति की उपासना है। इन विकारों के हनन का नाम ही बलि है, यही यज्ञ है।

योग, यज्ञ और बलि आदि तान्त्रिक क्रियाओं के साथ ही शक्ति उपासना में मन्त्रों का भी बड़ा महत्त्व है। मन्त्र के द्वारा मूल साधन शक्ति अधिक शक्तिशालिनी होकर व्यक्त होती है। वस्तुतः परा चितशक्ति मन्त्र में ही व्यक्त होती है और जाप के द्वारा साधक मन्त्र को जागृत करता है। वायु की लहरियों से जिस प्रकार अग्नि प्रज्वलित होती है उसी प्रकार मन्त्र जाप से जीव शक्ति उद्दीप्त होती है। मन्त्र अक्षरों से बनते हैं, अक्षर ब्रह्म का स्वरूप है। मन्त्र से विश्व विज्ञान की सम्प्राप्ति और संसार-बन्धन से मुक्ति-लाभ होता है।[1]

भूत मात्र में शक्ति का निवास है।[2] नाम रूप गुणादि भेदों के कारण विविधता प्रकट होती है। इसी कारण उपासना के भेद उत्पन्न होते हैं। परन्तु सब का लक्ष्य एक ही है और वह है आत्मानुभव। दुर्गा, चण्डी, महाविद्या आदि भेद और विविध उपासना के प्रकार एक ही महाशक्ति की कृपाप्राप्ति के साधन हैं। यही क्यों हमारी प्रत्येक हरकत उसी महामाया की उपासना का रूप है।

साधु परित्राण दुष्कृत-विनाश और प्राकृत धर्म-संस्थापन के लिए शक्ति के विविध रूप अवतरित होते रहते हैं और लोक में प्रकृति विभेद से उपासना के विभिन्न प्रकारों का आविष्कार होता रहा है।[3] सृष्टि शक्ति ही ब्राह्मी-शक्ति के नाम से पूजित होती है, इसी प्रकार लय शक्ति को माहेश्वरी शक्ति कहते हैं, इसके एक ही इशारे में समस्त विश्व प्रपञ्च का लय हो जाता है, ब्रह्मा, विष्णु और शिव अपने अपने व्यापार बन्द कर देते हैं। आसुरी वृत्तियों के पुञ्ज का दमन करने वाली और दैवी शक्ति समूह का विकास करने वाली शक्ति 'कौमारी' कहलाती है। नव दुर्गाओं में यह ब्रह्मचारिणी नाम से प्रसिद्ध है। यह शक्ति अपने

---

[1] इस विषय पर विशेष सूचना के लिए लेखक द्वारा सम्पादित 'भुवनेश्वरी महास्तोत्र' का प्रास्ताविक परिचय पढ़ना चाहिए।

[2] जळ थळ खेचर जीव जगि, सारा मझ्झ सगत्ति।
तो विण भ्रम क्रम न थियै, भगवति देह भगवत्ति ॥ १७ ॥
—वचनिका, पृ० २१

[3] वचनिका में भी शक्ति के विविध रूपों के नाम गिनाए गए हैं, देखिए पृ० ३८ ३९

आविर्भाव के लिए लोक में कुमारिका शरीर को ही आलम्बन बनाती है। नवरात्र में कन्याओ का पूजन, समय समय पर दुष्टो और असुरों का विनाश करने हेतु इसी शक्ति के पूजन का प्रतीक है। राजस्थान और गुजरात में आवड़, आछी (इच्छा), चर्चिका, खोडियार, करणी आदि शक्तियो का अवतार कन्या रूप में ही हुआ और वे इसी रूप में पूजी जाती है। वैष्णवी-शक्ति संसार की रक्षिका है। जगत की सृष्टि, स्थिति और सहार में इसका श्रेयस्कर रूप रहता है।[1] सर्व प्रथम आत्मा को परिच्छिन्न एवं आवृत करने वाली काल शक्ति है। इसीलिए परमात्मा अथवा महान् आत्मा को आवृत करने वाली शक्ति महाकाली कहलाती है। सब कुछ इसी के गर्भ मे विलीन हो जाता है। महाकाल से इसका ऐक्यभाव है। यही शक्ति अवान्तर भेद से वाराही भी कहलाती है। लोक में वराही या वाराही माता का पूजन इसका प्रतीक है। मनुष्य जब तक अपने स्वरूप को नही जान लेता तब तक वह श्रेष्ठत्व की ओर उन्मुख नही होता। यह स्व-स्वरूप-परिचायिका शक्ति नारसिंही नाम से कही जाती है क्यो कि यह नर को नरों में सिंह अर्थात् श्रेष्ठ आत्मज्ञानवान् होने को उन्मुख करती है। चैतन्य-वर्ग मे गति और प्रकाश-दायिनी शक्ति ऐन्द्री नाम से पूजित है। इसी प्रकार प्रवृत्तिरूपा चण्डा-प्रकृति और निवृत्तिरूपा मुण्डा-प्रकृति का हनन करके उनका महाप्रलय में लय करने वाली शक्ति का चामुण्डा नाम से पूजन होता है। शक्ति के इन्ही प्रधान रूपो की अनन्त नामो से अनन्त प्रकार से उपासना की जाती है।

पुराणो में कथा आई है कि दक्ष का यज्ञ विध्वस्त करने के बाद शिवजी सती के शव को लेकर कन्धे पर धरे हुए इधर उधर उद्भट रूप से घूमने लगे। सभी देवता इससे चिंतित हुए तब विष्णु ने अपने चक्र से उस सती के मृतदेह के टुकड़े टुकड़े कर दिए, वे टुकड़े इक्कावन स्थानो में बिखर गए और तुरन्त पाषाण-रूप में परिणत हो गए। ऐसे प्रत्येक स्थान पर एक शक्ति का रूप और एक भैरव पूजित होने लगा। यही सब स्थान शक्ति पीठों के नाम-से प्रसिद्ध हुए।[2]

---

[1] गोस्वामी तुलसीदासजी ने सीताजी को शक्ति का यही रूप माना है—

'सृष्टिस्थितिसंहारकारिणी क्लेशहारिणी।
सर्वश्रेयस्करी सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।

[2]
विष्णुचक्रेण सञ्छिन्नास्तद्देहावयवः पृथक्।
विपेतुः पृथ्वीपृष्ठे स्थाने स्थाने महामुने।।
महातीर्थानि तान्येव मुक्तिक्षेत्राणि भूतले।
सिद्धपीठा हि ते देशा देवानामपि दुर्लभाः।।
भूमौ पतितास्तु ते छायाङ्गावयवः क्षणात्।
जग्मुः पाषाणतां सर्वलोकानां हितहेतवः।।

इन शक्तिपीठों का 'तन्त्रचूडामणि' ग्रंथ में विस्तार से वर्णन किया गया है। इनके आधार पर देश के कितने ही भौगोलिक स्थानो का भी ज्ञान होता है, साथ ही देवियों के

जिस प्रकार ससार मे प्रवल होते हुए ग्रासुरी भाव का सहार करने के लिए समय समय पर पुरुष के रूप मे यावदपेक्षित वैष्णवी शक्ति के अवतार हुए हैं और होते रहते हैं उसी प्रकार स्त्री देहो मे भी लोक मे शक्ति के अनेक रूप प्रकट हुए हैं।[1] धमरक्षा, अनिष्टनिवारण और दुष्टसहार की विशिष्ट शक्तियो का जिन स्त्री शरीरो मे उद्भव और प्राकट्य हुआ वे ही शक्ति का अवतार मानी गई। राजस्थान और गुजरात के चारणो मे तो "नौलख लोवडियाळ"[2] प्रसिद्ध हैं। इनमे शक्ति के काली, दुर्गा, चण्डी और ब्रह्मचारिणी रूपो के ये अश उदभूत हुए है। हिंगुलाज, आवट, हुली, गुली, छाछी (चचिका), करणी, लाल बाई, फूलबाई आदि नामो से स्थान स्थान पर ये देवियाँ पूजी जाती हैं और इनकी महिमा का वरान करने के लिए अनक काव्यो का निर्माण हुआ है, जो प्राचीन राजस्थानी साहित्य की समद्धि के अभिन्न अग है।

भारतीय जन जीवन का आधारस्तम्भ धम ही रहा है। भारतीय मानव न धम की परिभाषा उस सतत प्रयत्न को माना है जिसके द्वारा प्रकृति परिच्छिन्न जीव स्वरूप अवयव समस्त आवरण को हटाकर सत् चित आनन्द घनरूप, अपरिच्छिन्न, ब्रह्मस्वरूप, अवयवी मे ऐक्यभाव के लिए उन्मुख हो सके। इसके लिए वह निरन्तर प्रकृति या माया अथवा शक्ति को प्रसन्न करने के लिए कायरत रहता है। व्यक्तिगत, कौटुम्बिक, सामाजिक, प्रदेशीय, देशीय एव राष्ट्रीय आदि समस्त व्यापारो मे भारतीय जीवन शक्ति की उपासना से ओत प्रोत है। दैनिक जीवन का आचार, कौटुम्बिक विधान, सामाजिक-गठन देश व्यवस्था और राष्ट्रीय भावना आदि समस्त व्यापारो मे शक्ति सम्प्राप्ति का विधान है। यम नियम, प्राणायामादि व्यक्ति के लिए शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करन साधन है, प्रत्यक कुटुम्ब, कुल, ग्राम और राष्ट्र की देवियाँ नामाङ्कित हैं, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय शक्तिपर्व

नामो और शक्तियो के रहस्य भी विदित होते है, यथा—सिन्धुदेश मे हिङ्गुला नामक स्थान पर शक्ति के ब्रह्मरन्ध्र का पात हुआ था। वहाँ शक्ति का हिंगुला नाम से ही पूजन होता है। बाद मे चारणो मे अवतार लेने वाली एक देवी हिङ्गलाज नाम से प्रसिद्ध हुई और वह आद्याशक्ति का रूप मानी गई। हिम अथवा सोम भाव का प्राप्त होने वाली शक्ति को हिंगुला कहते है।

'हिम गच्छतीति हिंगु'

इसी प्रकार अर्बुदारण्य क्षेत्र मे आरासण स्थान पर शक्ति का वामकुच (हृदय) भाग गिरा था। वहाँ इसी भाग की पूजा होती है।

देवी भागवत म ऐसे एक सौ आठ शक्ति पीठो का वरान है। देवीगीता मे ७२ पीठ गिनाए है। इसी प्रकार विभिन्न ग्रथो मे विभिन्न वरान मिलते हैं।

[1] सुर सान्निधे कज्ज, ब्रह्माणी, रूप अनेक विध करिय।

—वचनिका, २६ पृ० २५

[2] एक विशेष प्रकार का ऊनी वस्त्र जिसे देविया ओढती हैं, लोवडी कहलाता है।

नियत है तथा हमारा समस्त वाङ्मय, शब्दशक्तिमय तो है ही, वह शक्ति-महिमा से भरा पड़ा है। उदाहरणार्थ, वर्ष में दो बार नवरात्र पर्व पर विशेष रूप से शक्ति-समाराधन का विधान हमारे जन-जन में शक्ति-संप्राप्ति की भावना का सञ्चार करता है। यह पर्व राष्ट्र की सघ-शक्ति को उद्‌वुद्ध करता है। घर घर में चण्डी-चरित्र (दुर्गा-सप्तशती) का पारायण होता है जिससे हमें अध्यात्म एव संघशक्ति का सदेश मिलता है। नवरात्र पर्व में नाद और बिंदु से समुद्‌भूत ससार का रहस्य ज्ञात करने वाले ब्राह्मण और साधक शरीरस्थ षट्‌चक्र के स्नायुजाल में गूंजने वाले अविनश्वर अक्षरसंघात के द्वारा अनन्त शक्ति के स्रोत से सम्पर्क स्थापित करते है। सप्तशती के अनेक श्लोक बीजाक्षरगर्भित हैं और सम्पुट सहित पारायण करने से मुख्यश्लोक की १४०० आवृत्तियाँ सहज ही मे हो जाती हैं। जब देव-राष्ट्र पर असुरो का आतङ्क छाया और अकेले देवराज की शक्ति पर्याप्त न हुई तो समस्त देवो ने संघटित होकर समवेत-शक्ति का आह्वान किया और उसी शक्ति ने असुरो का संहार कर उनका श्रेयस् सम्पादन किया। इस आख्यान से हमारे राष्ट्र में वर्ण-व्यवस्थानुसार जिस वर्ग को देश रक्षा का भार सौपा गया है उसका उद्‌बोधन होता है। सघ-शक्ति का माहात्म्य इससे समझा जा सकता है। नवरात्र में क्षत्रियो द्वारा शस्त्रास्त्र-पूजन, अश्वपूजन और विविध वाहनों का पूजन तथा एकत्रित होकर बन्धु-बान्धवो सहित उत्सव मनाने की प्रथा शक्ति-सर्वेक्षण एवं सघ-सघटन की द्योतक है।

शक्ति के विविध रूपो की कल्पना करके शक्ति-ग्रन्थो में भगवती के विविध आयुधों, वाहनो और मुद्राओ के विवरण दिए गए है। इनके रहस्यो का अध्ययन जहाँ ज्ञान-पट खोलने में सक्षम है वहाँ लौकिक में समाज के दैनिक जीवन, व्यवहार, व्यापार, आकाक्षाओ और विविध मनोभावनाओ के अन्तर्गर्भित तात्पर्यों और सांस्कृतिक विकास को समझ लेने का भी मधुर माध्यम है। इसी प्रकार विविध स्थानो में निर्मित मन्दिरो की वास्तु-विशेषता और प्रतिमा-विधान के अध्ययन का विषय भी मानव-मन और मस्तिष्क के चरम विकसित स्वरूप का दर्शन तो कराता ही, है—साथ ही, हमारे अतीत के अतीव समुज्ज्वल समय का भी स्मरण कराता है और हमारी सुपुप्त-सी शक्तियों का उद्‌बोधन करता है।

इस प्रकार सकल चराचरमयी, सर्वभूतमयी और समस्त विद्यामयी महाशक्ति के स्वरूप का चिन्तन, तत्सम्बन्धी साहित्यादि उपकरणों का अध्ययन एवं मनन तथा राष्ट्रशक्ति में उसका दर्शन करना, अनिष्टतत्त्वों का अपसारण कर इष्ट और सौभाग्यकारक तत्त्वो को विकसित करना आदि सभी सत्क्रियाये भगवती शक्ति की सदुपासना के अन्तर्गत है।
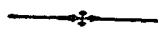
ज्ञातव्य – पृ० १२७ के अतिम पैरे की ४थी पंक्ति में कृपया 'उनका भी विशकलन करने पर' के बाद 'ज्ञात होता है कि प्रत्येक' और पढ़ें।

पृ० १२८ की १२वी पंक्ति में 'सर्व' के स्थान पर 'सर्ग' पढ़े।

—लेखक

पुस्तक - समीक्षा

राजस्थान स्वर-लहरी, भाग १

संपादक : राजेन्द्रसिंह् बारहट और श्री महेन्द्र भनावत; स्वर-लिपिकार : श्री नारायणलाल गंधर्व; प्रकाशक : भारतीय लोक कला मडल, उदयपुर; पृष्ठ संख्या : १११; मूल्य ३) रुपये

राजस्थान के लोक गीतो मे राजस्थान की सस्कृति और उसका जन-मानस प्रतिबिंबित है। इस पुस्तक में ३२ पारिवारिक लोकगीत सगृहीत हैं। इससे पहले भी लोक-गीतो के कई सग्रह् निकल चुके परन्तु इसकी अपनी विशेपता यह है कि इस संग्रह के सब गीतो के साथ इनकी प्रचलित धुनो की स्वर-लिपिया भी स्थायी अंतरो सहित दी गई है। ये स्वर-लिपियाँ शास्त्रीय संगीत की भात खण्डे प्रणाली पर है। जिस प्रकार जैन कवियों ने लोक-गीतों की ढालो को सुरक्षित रखने मे योग दिया उसी प्रकार लोक कला मंडल ने स्वर-लिपि देकर इनकी गेयता को सुरक्षित करने का महत्त्वपूर्ण काम किया है। स्वर-लिपि के साथ ही साथ तालो का निर्देश भी है। मडल के सचालक श्री देवीलाल सामर ने स्वीकार किया है कि इस संग्रह में उदयपुर के गायक तथा स्वर रचनाकारो की सहायता ली गई है अत: इन धुनो में उदयपुर की धुनों की विशेपता होना स्वाभाविक है। स्थान विशेप की दूरी के कारण धुने द्रुत या विलबित लय में गाई जाती है परन्तु मूल धुन में कोई अन्तर नही पड़ता। इसलिये सग्रह की उपादेयता निश्चित है। इसी विशेषता के कारण संग्रह का शीर्षक सार्थक है।

दूसरी विशेषता यह है कि सब गीतो के सरल हिन्दी में अर्थ कर दिये गये हैं। अर्थ के विपय में मुझे कही-कही शकाएँ है जो व्यक्त कर देना आवश्यक समझ कर निवेदित की जाती हैं। पहले गीत पीपळी को ही ले। सपादकों ने लिखा है – 'पीपळी स्वयं नारी है जिसका पति उसे अकेली छोड़ कर परदेश नौकरी पर जाने की तैय्यारी में है।' पीपळी में नारी के आरोप की आवश्यकता नही है क्योकि अगली कड़ी में 'परण चाल्या छा भंवरजी गोरड़ी जी' में नवयौवना स्त्री की अवस्था हमारे सामने स्पष्ट है। घेरघुमेर का अर्थ 'हरीभरी' किया है जिसका आशय पल्लवित एवं वर्द्धित है। घेर-घुमेर की ध्वनि हरी-भरी में नही आती। घुड़ला कसना और जीन कसना का अर्थ किया है आपके जाने के लिए किसने इस घोड़े पर सामान (जीन पलाण) रखा है। जीन पलाण वाली बात जो ब्रैकेट में दी वह तो जँचती है पर सामान रखने की बात नही जँचती क्योकि घोड़ा लद्दू जानवर नही है। सामान तो डूम ढाढ़ियों के घोड़ों पर लादा जाता है। फूट सुहाळ का अर्थ ककड़ी शायद हिन्दी के फूट शब्द को ध्यान में रख कर किया है। फिर जलेबी और ककड़ी का मेल क्या? सुहाळ राजस्थान मे काफी प्रचलित शब्द है। फूट सुहाळ ऐसी नरम है कि ओठों से फूटे। सोड़ पथरणा का अर्थ गादी तकिया किया है जिनको 'नीद लगै जद मारूजी ओढल्यो जी' ओढ़ा कैसे जा सकता है। सोड़ तो जाड़े में ओढी जाती है, न सोड़ का अर्थ गादी है न पथरणा का तकिया। 'असल बगीचो' का अर्थ सुन्दर सुव्यवस्थित बगीचा किया है। असल

का अर्थ तो सब विदित है। फिर फले फूले नीबू आम कहाँ से आए। फला फूला विशेषण पेड के लिए आता है फल के लिए नही। गीत मे 'घणा जाऊ निम्बवा आम' मे कोई विशेषण है ही नही। 'खुशी पडे जद मारुजी चूसल्यो जी' का अर्थ किया है 'समय पडने पर आप उन्हें चूस कर अपनी तृष्णा शांत कर सकें। चोष्य या पेय पदार्थ से तपा तो शांत हो सकती है तृष्णा नही, वह तो मन की है। 'उडावँ घणा कागला जी' का अर्थ किया है 'आपके लिए कौवा के साथ सदेश पहुचाते पहुचाते भी हार खा गई' हार कहाँ खा गई वह तो आकुल प्रतीक्षा मे काग उडा रही है। 'के गाधी मणियार' मे कमाई मे स्त्रियो को भी साझीदार बनाने वालो की गणना की है। यहाँ गधी (इत्र तेल फरोश) माना है। शायद हिन्दी के गधी शब्द से यह अर्थ लिया है। इत्र वाले की स्त्री कभी इत्र बेचने जाती है क्या ? राजस्थान मे गाधी को तो प्रत्येक बच्चा जानता है जो गलियो मे गट्टू खोपरा, मूगफली की आवाज लगा कर बच्चो को आकर्षित करता है। यह अन्य चीजें भी जैसे चूडो, टीकी, हीगलू आदि रखते है। स्त्री 'गाधण' भी ये चीजें बेचा करती है। 'सीटां की रुत' का अर्थ फल प्राप्ति का समय किया है। जिसने राजस्थान की उल्लासमयी सीटो की ऋतु के महत्त्व को समाप्त कर दिया है। इस गीत के अन्त मे सम्पादक लिखते हैं —पहले अधिकाश पत्र पद्य मे ही लिखे जाते थे और आज भी राजस्थान मे यह प्रथा कुछ अश मे प्रचलित है। क्या 'पीपळी' गीत किसी नायिका का लिखा हुआ है। ऐसी कितनी राजस्थानी नायिका आशुकवयित्री थी जो पद्य मे पत्र लिखा करती थी। यह गीत तो स्त्री समाज की भावना व्यक्त करता है, किसी एक की रचना तो है नही। ऐसी क्लिष्ट कल्पना की क्या आवश्यकता है ?

गीत न० ३ 'भँवर म्हाने परण पीयर मति मेलो सा' मे 'सियाळे री रैन माय सहेल्यां रे साथे गोखा माय आपने खेलावसा' का अर्थ किया है 'दोनो सर्दी की ठडी २ रातो मे वहाँ झरोखे मे बैठ चौपड खेलेंगे।' क्या सहेल्या रे साथे का अर्थ दोनो होता है ?

गीत ५ 'उड उड रे' मे 'खीर खाड रो जीमण जिमाऊं' का अर्थ किया है— खीर और शक्कर का बना भोजन (पकवान) खिलाऊंगी। यह पकवान कौनसा है ?

गीत ६ मे पोमचे का खुलासा ब्रैकेट मे किया गया है साडी विशेष। राजस्थान मे सब जानते हैं कि पीले और पोमचे ओढने होते है, साडी नही। इसी गीत मे चार पाँच मार्मिक कडियो का अर्थ नही दिया गया है।

सातवें गीत का अर्थ न लिख कर संक्षेप मे केवल भावार्थ दिया गया है। गीत ८ मे चार कडियो मे से एक का अर्थ है बाकी शब्द जाल से भर्ती पूरी की गई है।

गीत १० म वदेक झोला चले सूरियो, धीमी धीमी पुरवाई रे' का अर्थ किया गया है— 'उत्तर दिशा की ओर से धीमी मद मद बहने वाली हवा आ रही है' फिर ब्रैकेट मे सूरिया एव परवाई हवा जब आती है तो ऐसा समझ लिया जाता है कि अब बरसात होने वाली है।' धीमी, मद मद बहने वाली हवा के लिए दो विशेषणो मे क्या विशेषता है। सूरिया तथा परवाई हवा दोनो समान नही हैं, न सदा बरसात लाती है। भादो में सूरियो और श्रावण मे परवाई वर्षा कारक नही होती। फिर झोला तो सूरियो चलने पर होता है जिससे

फसल पीली पड़ जाती है। सम्पादकों को झोले का ज्ञान नही है फिर उत्तर दिशा की हवा वर्षा लाने वाली नही होती। मंद मंद चल कर तो दक्षिण पवन सुखदायी होती है।

गीत १२ में 'छाती में हबको चाले म्हारी भाभी' का अर्थ किया है उसकी पसली में भी दर्द महसूस होने लगता है और जिसके कारण चीस चलने लग जाती है। हबको और चीस का अन्तर समझना चाहिए था। छाती की जगह पसली मे दर्द कहाँ से हो गया ?

गीत १३ में पति द्वारा पीहर जाने की स्वीकृति न देने की झूठी कल्पना की गई है। बात यह है कि पीहर जाते हुए उसके प्राण पति में उलझे हुए है। यही सीधी सी बात गीत मे कही गई है । 'मुजरो मान लेनी खीला, म्हे तो पीहर चाली रे। आगे तो पग धरूं भवरजी पाछे पगल्या राखूं रे' का अर्थ किया है 'वह अपने चरण तो आगे बढ़ाती जाती है परन्तु चरण-चिन्ह (पगल्या) पीछे छोड़ती जाती है।' भाव यह है कि पैर धरती तो आगे है परन्तु वे प्रेम के कारण पीछे पड़ते हैं क्योंकि अगली पंक्ति में स्पष्ट कर दिया है 'थामें उळझ्या प्राण पति म्हे फिर फिर झांकू रे।' यहाँ विरह-जन्य टीस है जो पति के जाने पर जैसे पैदा होती है वैसे ही पति से स्वय बिछुड़ने पर होती है।

गीत १५ में 'जारजट' का प्रयोग इसे आधुनिक सिद्ध करता है। इसमें प्राचीन गीतों जैसा माधुर्य नही है। केवल तुकबन्दी मात्र है। जारजट का अर्थ जरी का किया है। इसी तरह २५वें गीत का बालमवा सम्बोधन उत्तर प्रदेश की नकल पर बना हुआ लगता है। यह भी आधुनिक ही हैं।

गीत १६ में 'धमाईलूं गोला तपाईलूं' का अर्थ किया है सुनार की धमनी से। मैं लोहे के गोले तपवा कर'। यह काम सुनार का नही, लुहार का है। 'सूरत बम्बई री ओढणी बाहरिया लेगा वाळी रे' का अर्थ किया है सूरत और बम्बई की बनी हुई साड़ी तथा हरा लहगा पहनने वाली। ओढणी का अर्थ साड़ी किया तथा लहँगा भी साथ है, फिर ओढ़ने का क्या हाल हुआ ? लहँगा और ओढणी तो यहाँ की स्त्रियो की पूरी पोशाक हो जाती है। 'अळिया हेरचो गळिया हेरचो तोड़ न पायो कागसियो' में स्पष्ट है कि कंघा नही मिला परन्तु संपादक अर्थ करते हैं 'उसे मैं अली गली मे सब तरफ ढूंढ़ कर थक गई परन्तु वह मिली नही। यहां इनका मतलब सौत से है।

गीत १८ 'म्हारी वाडी रा करेला मति तोड़ो रसिया' में सपादक कल्पना करते है कि 'वाडी के करेले' से पारिवारिक सदस्यो की ओर भी हलका सा इङ्गित मिलता है।' जब गीत में वह पति को साथ लेकर स्वयं अलग होने की मांग करती है तब यह इंगित कौन से पारिवारिक सदस्य की ओर है, यह वे ही जानें। संपादक लिखते है—'कही-कही इस गीत को केवल मनोरंजनार्थ ही गाया जाता है। फिर इसमें रहस्यवाद कहाँ से सूझा !

गीत २० में दांतां बिजली चूप जड़ा दो मदवा मारूजी' का अर्थ किया है सोनी को बुला कर बंगड़ी पर दाँतों की चूप जड़ना। बंगड़ी पर टीप जड़ी जाती है। चूप तो दाँतों का आभूषण है, जो हाथ के गहने बंगड़ी पर कैसे जड़ा जायेगा।

गीत २२ मे गोरवद के लिए लिखा है 'जिसके दोना ओर लबी लटकनें होती हैं जो काठी पर लगाते समय ऊट की गदन के दोनों ओर लटकती चमकती रहती हैं।' इससे यही पता नही चलता कि गोरवद का स्थान काठी है या ऊट की गदन।

गीत २४ मे चौसर के लिए कोष्ठक मे 'माल' लिखा है । यह कौनसा माल है, स्पष्ट नही। इस गीत मे पति पत्नी की चुहल है जिसमे तुलसीदासजी को व्यथ ही घसीटा गया है और तुलना मे 'तुम विनु रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नमक समान' उदधृत किया गया है।

गीत ३० मे यह लिख कर कि 'उसके जीण शरीर (जोजरो हाँडो) मे अरमानो के होले मिक रहे थे, कारण कि पति नासमझ मिला' तो गीत के सारे सौंदय को ही नष्ट कर दिया। पति छोटा था इसलिए भोला था और पत्नी पूण यौवना। यौवना मे ही जीण शरीर की सूझ कैसे सूझी ?

गीत ३२ में सावणिय की रितु आई, तीज त्योंहारा लाई का अथ नीमडी को सबोधन करते हुए किया गया है कि 'श्रावण के इस सुहावन मौसम मे जो तीज आदि त्यौहार हँसते खेलते आते हैं उन्हें भी लगता है तू ही बुला कर लाती है।' प्रसिद्ध कहावत है तीज त्युहारा वावडी ले डूबी गिणगौर' तीज के आगमन के बाद त्यौहार ही त्यौहार आते हैं। यहाँ इसी से मतलब है न कि नीमडी त्यौहार लाई।

गीत १२ मे वेगू और १७ मे धाणेराव शब्द—इनका जनपदीय होना सिद्ध करते है। गीत ८० 'म्है पालो कोनी काढू सा' शुद्ध ग्रामीण गीत है। चन्द्र बिन्दु और अनुस्वार मे कहीं भद नही किया है, न गीतो मे न ग्रथ मे।

ऊपर कुछेक ग्रथों की ओर सपादकों का ध्यान केवल इस आशय से आकृष्ट किया गया है कि वे इसके दूसरे सस्करण को या इसके दूसरे भाग को प्रकाशित करते समय थोडी सतर्कता से काम लें। वैसे उन्होंने इसके सपादन मे जो परिश्रम किया है वह राजस्थानी साहित्य की सेवा के नाते निश्चय ही सराहनीय है।

—श्रीलाल मिश्र

जप-सहिता

लेखक श्री स्वामी हरिप्रसाद "वैदिक मुनि", प्रकाशक विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध सस्थान, होशियारपुर, पजाब भारत, तृतीय सस्करण, सन् १९६३ ई०, मूल्य ४.७५ पै०।

धम प्राण भारत देश मे जप का बहुत माहात्म्य है । समय समय पर ऋषियो द्वारा दर्शन किए गए मन्त्र जप की सामग्री बनते रहे। मन्त्र मनन और त्राण के लिए प्रार्थना की वस्तु है। जप वही श्रेष्ठ समझा जाता है जिसमे मन्त्र का हृदय से उच्चारण होता है। इसको

'हृदुच्चार' कहते हैं 'जिह्वोष्ठादिव्यापाररहितं शब्दार्थयोर्यश्चिन्तनम् हृदुच्चार:।' वाणी द्वारा बारम्बार उच्चरित मन्त्र भी जप की संज्ञा में आता है। 'जप उच्चारे वाचि च।'

प्रस्तुत पुस्तक में श्री वैदिक मुनि ने श्री गुरुग्रंथ साहब में सकलित आरम्भ में वाणी, जो 'जपजी' कहलाती है, उसका वेद, उपनिषद् एवं अन्य प्राचीन भारतीय शास्त्रो से समन्वय करते हुए सस्कृत और हिन्दी में भाष्य किया है। पाणिनीय आदि व्याकरण नियमो के आधार पर सिक्ख-सम्प्रदाय के गुरु एव माला-मन्त्रो की पाण्डित्यपूर्ण व्याख्या भी की गई है। पुस्तक के आरम्भ मे एक विस्तृत ऐतिहासिक और चमत्कारिक अर्थोद्घाटक तथ्यों से युक्त भूमिका भी लेखक ने लिखी है।

मूलतः सिक्ख सम्प्रदाय हिन्दू धर्म के अन्तर्गत ही माना जाता है, और है भी। पिछले कुछ समय से कुछ विघटनकारी तत्वो ने ऐसा विषैला वातावरण फैलाया कि सिक्ख अपने आपको एक अलग जाति एवं राष्ट्र समझने लगे। ऐसी दुर्भावनाओं के दुष्परिणाम सहज सम्बोध्य हैं। सिक्खो में भी सनातनी और दूरदर्शी सिक्ख ऐसी निराधार बातों को थोथी और अनावश्यक समझते है। प्रस्तुत पुस्तक सिक्ख धर्म की मूल-भावनाओ का एक सहज, सुबोध और प्रकाशमान भाष्य है; जिससे प्रमाणित हो जाता है कि सिक्ख सम्प्रदाय कोई पृथक् इकाई नही है वरन् उन्हीं वैदिक मान्यताओं पर आधारित है जो समस्त भारतीय सम्प्रदायो के आदि-स्रोत हैं।

श्री नित्यानन्द-विश्व-ग्रथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप मे प्रकाशित यह ग्रथ सर्वथा पठनीय और मननीय है, विशेषतः इस युग में जब कि भारत में राष्ट्रिय एकता के लिये भावात्मक ऐक्य की अपेक्षा अनुभव की जा रही है।

पुस्तक की छपाई और सफाई सुघर है।

—गोपालनारायण बहुरा

भारत के लोक नृत्य

लेखक : लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस, मूल्य : पांच रुपये मात्र

हिन्दी में लोक साहित्य पर अब अच्छी चर्चाऐ होने लगी है। भारतीय विश्वविद्यालयो के बी० ए० तथा एम० ए० के पाठ्यक्रमों में निर्धारित करने व इस पर शोध-कार्य होने के कारण यह विषय अधिकाधिक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण होने लगा है।

नृत्य भारत की प्राचीनतम कला है। ऋग्वेद में कहा गया है कि खुले आकाश के नीचे नृत्य करते हुए लोगो के पदों की धूल से आकाश आच्छादित हो जाता था। ईसाई सन्तों ने

जहाँ नृत्य को फरिश्तो की गति माना, तो विज्ञान ने अणु-परमाणुओं से नृत्य को साकार देख कर सम्पूर्ण प्रकृति को ही नृत्यमय सिद्ध कर दिया है।

राष्ट्रीय नवजागरण के फलस्वरूप हमारे लोकनृत्य सांस्कृतिक जीवन के मूलाधार बन गए हैं। लेखक के शब्दो मे लोक कलाकार निजी विचारो, आदर्शों और अनुभूतियो को अभिव्यक्त करने की अपेक्षा, पूरे समाज के आदर्श, विचार, चरित्र, रीति रिवाज, धर्म और मनोभावो का प्रस्तुत करते है वस्तुत ये भारतीय संस्कृति के विविध सौन्दर्य का सच्चा प्रतिनिधित्व करते है।'

प्रस्तुत पुस्तक मे इसी दृष्टिकोण को ध्यान मे रख कर काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, मणिपुर नागा प्रदेश, पजाब, राजस्थान गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बगाल, उडीसा, बिहार, केरल, आध्र आदि के प्रसिद्ध लोकनृत्यो का सक्षिप्त परिचय इस पुस्तक मे दिया गया है। पुस्तक के अध्ययन से हमको विस्तृत जानकारी तो नही मिलती है, फिर भी प्रौढ नवसाक्षरो के लिये पुस्तक की उपादेयता असदिग्ध है। भाषा सरल, सुवाच्य एवम् स्पष्ट है। चित्रो के प्रयोग से विषय अधिक स्पष्ट हो गया है, इसमे सन्देह नही।

लेखक का प्रयास स्तुत्य है। छपाई सुन्दर तथा आकर्षक है। गेटअप भी विषयानुकूल ही है। फिर भी मोटे टाइप मे छपी ११० पृष्ठो की पुस्तक का मूल्य पाच रुपया कुछ अधिक ही है।

प्रद्युम्न चरित्र

लेखक कवि सधारु, सम्पादक प० चैनसुखदास न्यायतीर्थ, प्रकाशक दि० जन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर, मूल्य चार रुपये

हिन्दी साहित्य धारा की गतिशीलता मे अपभ्रश का योगदान प्रमुख है और इस अपभ्रश साहित्य को जीवन देने, उसे अक्षुण्ण तथा समृद्ध बनाये रखने मे जैन कवियो एवम विद्वानों का योग स्तुत्य है, यही कारण है कि अपभ्रश की अधिकाश सामग्री जैन भण्डारो से ही उपलब्ध हुई है।

प्राचीन विलुप्त सामग्री को प्रकाश मे लाने का कार्य निश्चय ही सराहनीय है। इधर इस ओर साहित्यकारो का ध्यान भी आकृष्ट होने लगा है। इसी के अन्तर्गत सवत १४११ मे रचित हिन्दी साहित्य का परमोज्ज्वल रत्न सधारु कृत प्रद्युम्न चरित्र है जिसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य की विलुप्त कडी प्रकाश मे आई है।

हिन्दी का आदिकाल आज तक तिमिराच्छन्न है। हिन्दी विद्वानो ने इधर प्रकाश किरणें डालने का प्रयत्न किया है फिर भी अभी तक अधिकाश भाग अन्धकारमय ही है। स्पष्टत इस रचना की खोज से आदिकाल न्यूनाधिक प्रकाशान्वित हुआ है, इसमे सन्देह नही।

आकार में यह रचना चौपाई छन्दो की एक सतसई है और काव्य दृष्टि से इसका महत्व अक्षुण्ण है। शुक्लजी के अनुसार प्रवन्ध-काव्य के जो लक्षण (देखिये जायसी ग्रंथावली, पृष्ठ ६६) निर्धारित है, वे इस पर सटीक हैं। नाना भावों के रसात्मक अनुभवों से सिक्त शृंखलावद्ध घटना-क्रमों एवं छः सर्गो में विभक्त यह प्रबन्ध-काव्य भाव, भापा, छन्द, अलकार तथा प्रभाव क्षमता में अपूर्व है। पुरुषोत्तम-वीर श्री कृष्ण के जीवन से अनुप्राणित यह काव्य-कथा सर्वत्र सवेग संचरित हुई है।

काव्य में सर्वत्र वीर रस का प्राधान्य है, जो सजीव होने के साथ साथ प्राणस्पंदित भी है। एक युद्ध द्रष्टव्य है—

हय गय रहिवर पड़े अनन्त, ठाह ठाह मयगल मयमन्तु।
ठाठा सहिस वहति असराल, ठाई ठाह किलकइ वेताल॥
गीधीणी स्याउ करइ पुकार, जनु जमराय जणावहि सार।
वेगि चलतु सापडी रसोइ, गृसइ आइ जिम तिपत होइ॥

(पद ५०४-५०६)

वीरादि भावों से ओतप्रोत व्रज भाषा का यह आदि-काव्य जहाँ भापा विज्ञान के लिए आधार भूमि प्रस्तुत करता है, वहाँ साहित्य को महत्वपूर्ण योग भी प्रदान करता है। हिन्दी के अन्वेपणप्रिय विद्वानो के लिए सुलभ पात्र है, साथ ही प्रकाशन सस्था को भी धन्यवाद है कि जिनके सतत् प्रयत्न से यह अमूल्य रत्न सर्व-सुलभ हो सका।

पुस्तक की छपाई, सफाई सुव्यवस्थित, सुन्दर एवं प्रशंसित है, इसमें सन्देह नहीं।

डॉ० चन्द्रशेखर भट्ट

कथक नृत्य

लेखक : लक्ष्मीनारायण गर्ग; सचित्र; पृष्ठ संख्या : २६४; मूल्य ८)
प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस

'कथक नृत्य' के वारे में जानने योग्य समुचित सामग्री लेखक ने ३० अध्यायों में विधिवत ढंग से प्रस्तुत की है। पहले दो अध्याय इस नृत्य पद्धति के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डालते हैं। तीसरे अध्याय में नृत्य कला सम्वन्धी पारिभाषिक शब्दो का विवेचन किया गया है और फिर इक्कीसवे अध्याय तक इस 'नृत्य' शैली के सभी अंगों-प्रत्यंगों पर एक 'प्रेक्टिकल गाइड' के नज़रिये से विश्लेपणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। कथक के घरानों एवं उनकी वन्दिशें देने के वाद अन्तिम अध्याय में इस नृत्य शैली के प्रवर्तकों एवं प्रसिद्ध कलाकारो की एक 'who's who' दी गई है। जगह जगह पर उपयुक्त रेखाचित्र एवं कलाकारो के चित्रों द्वारा इस शैली की विशेप मुद्राओं को समझाया गया है। लेखक का परिश्रम सुस्पष्ट है और ग्रंथ की प्रामाणिकता के वारे में पद्मश्री

श्री श्रीशम्भू महाराज की भूमिका के बाद कोई सन्देह नहीं रह जाता। ग्रंथ अवश्य ही छात्रों, शिक्षकों एवं 'कथक' में साधारण रुचि रखने वालों के लिए उपयुक्त है और रोचक भी।

'पाश्चात्य स्टैंडर्ड' की दृष्टि से इस ग्रंथ को उपयोगी बनाने के लिए इसके आकार, गेट अप, मेक अप, मुद्रण एवं चित्रों विशेषकर रेखाचित्रों में संशोधन आवश्यक प्रतीत होता है। लेखक के परिश्रम के अनुपात में ग्रंथ का मुद्रण असन्तोषजनक लगता है।

—ए० पी० व्यास

साहित्य रामायन

लेखक दुर्गाशंकरप्रसादसिंह 'नाथ', प्रकाशक नव साहित्य मन्दिर, रैन बसेरा, दलीपपुर बिहार, मूल्य—नौ रुपये

भगवान श्री रामचन्द्र का आदर्श चरित्र भारतीय संस्कृति का कीर्ति स्तम्भ है। काल की दीर्घ परिधि और अनेक प्रकार की ज्ञात अज्ञात घटनाओं के क्रूर आघातों में भी उसकी स्थिति जल कमल के समान रही है, यह उस चरित्र की महानता तथा अमरता का ही प्रगट प्रभाव है। श्री राम के उदात्त चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर प्रत्येक युग के भारतीय श्रेष्ठ कवियों ने उनके चरणों में अपनी वाणी के सुमन समर्पित कर श्रद्धा व्यक्त की है। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि से लेकर बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त तक के काव्य में राम कथा का पावन स्रोत बहता आया है। हाल ही में भोजपुरी भाषा के प्रथम काव्य के रूप में हमारे सामने 'नाथ' कवि रचित 'साहित्य रामायन' आई है।

विवेच्य कृति में लेखक ने तुलसीदास के रामचरित मानस के किष्किन्धा काण्ड और सुन्दर काण्ड के प्रसंगों को आधार रूप में ग्रहण किया है तथा अपनी कृति को मौलिक कृति माना है। परन्तु रामचरित मानस को समक्ष रख कर पढ़ने पर लगता है कि 'साहित्य रामायन' पर रामचरित मानस की शैली, वर्णनक्रम और उक्तियां ही नहीं, वरन् अनेक स्थलों पर तो ज्यों का त्यों तथा कहीं कहीं अत्यल्प शब्द-परिवर्तन और विभक्तियों के भेद में ही मौलिकता रह गई है। उदाहरण के लिए अशोक वाटिका में सीता द्वारा अपमानित रावण का कथन दोनों रचनाओं में एक साथ पढ़ने पर हमारा कथन स्पष्ट हो जाता है, यथा—

> नागिन, भइले ते अपमान। बचु सिर काटत कुटिल कृपान॥
> नाहित सपद मानु मो बात। टेढ़ि होत नत जीवन घात॥
>
> —साहित्य रामायन

सीता तैं मम कृत अपमाना । कटि हउं तव सिर कठिन कृपाना ॥
नांहित सपदि मानु मम बानी । सुमुखि होत नत जीवन हानी ॥

—रामचरित मानस

ऐसे स्थलों पर मौलिकता के आगे स्वतः प्रश्न-चिन्ह लग जाता है। यही नही जहां कवि ने तुलसी के अभाव से मुक्त रहने का प्रयत्न किया है, वहाँ उनके मस्तिष्क पर खड़ी बोली का प्रभाव चढ़ बैठा है। उदाहरण के लिये निम्न स्थल दर्शनीय है—

समय परिस्थिति युग व्याख्यान। बालक खाल निकासल ज्ञान ॥
बेदत दरसन-ग्यान पुरान। बुधि बल जनहित करम विधान ॥

तब भी कवि ने मुहावरे आदि के प्रयोग कर अपनी कृति को सुन्दरता प्रदान करने का प्रयत्न किया है। कई स्थलों पर भोजपुरी भाषा की अभिव्यक्ति सबलता प्रगट हुई है। समूची कृति के अध्ययन के उपरान्त यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि भोजपुरी भाषा में साहित्यिक भाषा के गुण विद्यमान हैं। प्रान्तीय भाषाओं मे उसका भी राजस्थानी भाषा की भाँति अपना एक स्थान है। यद्यपि आलोच्य कृति में कृतिकार सम्यक्तया भोजपुरी के शब्द भण्डार से शब्द-चयन नहीं कर पाया है, फिर भी भगवान के चरित्र को भोजपुरी भाषा में प्रथम बार उपस्थापित कर 'नाथ' कवि धन्य हुए हैं।

—सौभाग्यसिंह शेखावत

विद्वानो की दृष्टि मे सस्थान

आज राजस्थानी शोध सस्थान मे आया और श्री नारायणसिंह भाटी से मिला। यहा राजस्थानी भाषा एव साहित्य सम्बन्धी प्रकाशित एव अप्रकाशित ग्रन्थो को देख कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। इस सस्थान मे इतनी अधिक सामग्री है कि हिन्दी के शोधकर्त्ताओ को इससे पूर्ण लाभ उठाना चाहिए। केन्द्रीय एवम् राज्य सरकार को इस सस्थान को पूरी सहायता करनी चाहिए। मैं इस सस्थान के उत्साही कार्यकर्त्ताओ का अभिनन्दन करता हूँ।

डॉ० उदयनारायण तिवारी, डी लिट्
प्रोफेसर एव अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
जबलपुर विश्वविद्यालय

• • •

राजस्थानी शोध सस्थान जोधपुर के प्रकाशनो, हस्त-लेखो तथा चित्रो का सग्रहालय देख कर अपार आनन्द हुआ। हमारा दृढ विश्वास है कि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के शोधार्थियो के लिए, एक ज्ञान-तीर्थ के रूप मे यह सतत् प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह,
डी लिट्
रीडर, गोरखपुर विश्वविद्यालय